



आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य पर मौलिक धारणा

# आधुनिक का हिन्दी गद्य साहित्य

( स० १०००—१५०० )

डॉ० हरीश

एम०ए०, डी०फिल्०

•



रामा प्रकाशन

नजीराबाद, लखनऊ

---

# Adikal ka Hindi Gadya Sahitya

I,

Dr. HARISH

A Book of Research on Ancient Hindi Gadya Literature

Price      Rs. 8-00

---

**समर्पण—**

विज्ञान-वेत्ता

शिक्षा-मनीषी, श्रद्धेय

**डॉ० डी० एस० कोठारी**

अध्यक्ष,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

को सादर—

---

# Adikal ka Hindi Gadya Sahitya

by

Dr. HARISH

A Book of Research on Ancient Hindi Gadya Literature

Price      Rs. 8-00

---

समर्पण—

विज्ञान-वेत्ता

शिक्षा-मनीषी, श्रद्धेय

**डॉ० डी० एस० कोठारी**

अध्यक्ष,

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

को सादर—



## दो शब्दों से कुछ अधिक

'आदिकाल के अज्ञात हिन्दी रास काव्य' के प्रकाशन के बाद विद्वद् गुरुजनो, स्नेही साधियो और शोध अनुसंधित्सु पाठको ने यह साधिकार सुझाव दिया कि हिन्दी साहित्य के आदिकाल में गद्य की स्थिति के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का कार्य कर्तृत्व सामने आये तो इस क्षेत्र में बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होगी। आदिकाल में गद्य साहित्य की स्थिति स्पष्ट नहीं है, विद्वानो में इस सम्बन्ध में बहुधा मतभेद रहे हैं। साथ ही गद्य की परम्परा की प्राचीनता को भी लोगो ने स्थिर बुद्धि से स्वीकार नहीं किया है। इन सब तथ्यों को पृष्ठभूमि की प्रेरणास्वरूप स्वीकार किया और इस ओर प्रयत्न हुआ। सन् १९६६ से ही आदिकाल के हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में कार्य करने की जिज्ञासा सुदृढ़ होती गई। आदिकाल का हिन्दी साहित्य' विषय पर इलाहाबाद वि विद्यालय से अपना शोध कार्य करते हुए गद्य साहित्य की ओर बराबर मचेष्ट रहता और गद्य की सामग्री सफलता का कार्य साथ ही करता गया और इस ओर अनेक नई उपलब्धियाँ हुईं। गद्य की विधा की प्राचीनता उधर १० वीं शताब्दी तक बढ़ गई, जबकि अद्यावधि विद्वानो की धारणा १४वीं तथा १५ वीं शताब्दी की ही बनो थी। चौरासी बणवो की वार्ता और दासी बणवो की वार्ता ही गद्य की प्राचीनता के आदर्श रूप कहे जाते थे। आज स्थिति ऐसी नहीं है। गद्य के अनेक प्राचीन उदाहरण हस्तलिखित प्रतियो और प्राचीन ग्रन्थो में अज्ञात रहे तथा दबे पड़े रहे।

'आदिकाल का हिन्दी गद्य साहित्य' इसी शास्त्र का एक प्रयास है, ताकि सन् १९८० से १९८० ई० तक गद्य में शोध कार्य करने वाले स्नातको की महायत्ना हो सकें। गद्य की प्राचीनता, उसके स्वरूप विनाम और गद्य की जाया पर कार्य करने वाले जिज्ञासु स्नातको के लिए इन पुस्तक में मैने जोड़ी तो सामग्री जुटाकर उसका मूल्यांकन किया है। इन तर्क उपलब्धियो का यह मूल्यांकन एवं विश्लेषण कैसा बन पड़ा है इसके लिए तो निर्णायक पाठक ही हैं, परन्तु इन रचनाओ की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में मैं एकत्र आश्वस्त हूँ। हस्तलिखित प्रतियो और पौराणिक ग्रन्थो की उपलब्धियो से इन





जैन कृतियाँ और रचना गद्य) (४) आदिकान ना जैनेतर (लौकिक) हिंदी गद्य साहित्य तथा अन्तिम अध्याय (५) विविध विषयक उपलब्ध हिंदी गद्य रचनाओं का है। इन अध्यायों में विविध वर्गीकरण से आदि कालीन हिन्दी गद्य रचनाओं का केवल प्रवृत्ति-मूलक मूल्यांकन ही प्रस्तुत किया गया है। यथा साध्य। यथा शक्य। मेरा दावा नहीं है कि कत्र इस कृति में सजलित गद्य रचनाओं के अतिरिक्त आदिकाल में कोई नई गद्य रचना मिल ही नहीं सकती। यह तो मेरे शोधक का एक विनम्र प्रयास है, उमे मजिल कैसे कहूँ? यदि सुधी अनुमतिस्सु म्नातको और विद्वानो ने और शोधकर इन कृतियों की सख्या में, (और प्रामाणिक कृतियों को प्रकारा में लाकर) वद्धि की, तो उनका कृतज्ञ रहूँगा।

कृति में अनेक रचनाओं से गद्यांश लिए गए हैं। उन सबके सम्पादकों एवं लेखकों का हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझ एतदर्थ स्वीकृतियाँ प्रदान की हैं। इस दौरान में बहुत बड़ी सहायता करने वाले हैं—माननीय श्री अग्ररचद ताहटा। उनकी कृपा से शोध द्वारा मैंने कई महत्वपूर्ण नई कृतियों को हिंदी जगत के समक्ष रखा है। उनके असीमांतों का सदैव अधिकारी रहा और रहूँगा। प्रस्तुत कृति के लिए अनेक नई रचनाओं के सुझाव उन्होंने दिये। धन्यवाद के साथ मेरी उनको हार्दिक शुभकामनायें अर्पित हैं।

प्रस्तुत कृति की प्रतिलिपि मेरी हर तरह से योग्य पत्नी डॉ० वरुणा शर्मा, एम० ए०, डी० फिन्० ने की है। अत्यंत व्यस्तता के होने हुए भी उनकी सेवा और सौजन्य का कायल हूँ। प्रतिलिपि को टाईप करने वाले अपने प्रिय विद्यार्थी श्री बी० एन० चन्द्र, बी० कॉम० की भी नहीं भूल सकता, जिसका अथवा धन इमक मास है उसका आभार व्यक्त करना चाहूँगा।

“आदिकान का हिंदी गद्य साहित्य” आपके सामने है। इसको आपके समक्ष प्रस्तुत करने का सारा श्रेय रामा प्रकाशन को है और और इस कृति को इस रूप में प्रस्तुत करने के लिए सारे श्रेय के अधिकारी हैं—आदरणीय वानू बनारसी दाम मेहरोत्रा। प्रिय हरिवानू की आत्मीयता हमारे पत्रे पत्रे का साथ है ऐसा मानना हूँ। मेरी मेराएँ एम० बी० राजेज उदयपुर (राजस्थान) के हिंदी विभाग के नाथ हैं प्रा० मेग जनुस्मिनि में प्रकृत सरोधन का मारा कार्य मेरे परम मित्र श्री टाडुर शिवमूर्त मिश्र, ध्यन्धान रामाश्रेम ने दिया। उनका

कृतियों की प्रमाणिकता को सदह की दृष्टि से गही देखा जा सकता, ऐसा मेरा अपना दृढ विश्वास है।

प्रस्तुत कृति को पूर्वाद्ध और उत्तराद्ध दो भागों में विभक्त कर दिया गया है। पूर्वाद्ध में गद्य की नई उपलब्धियों के अंश (गद्यांश) लिये गए हैं, जिनसे गद्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत हो सके, साथ ही उसके उद्गम और विकास पर भी इतिहास बने। इन रचनाओं को क्रमबद्ध जुटाया गया है। यह सारा सक्लन सा १००० से १५०० वि० तक के उपलब्ध गद्य साहित्य का है, जिसमें गद्य की प्राचीनतम शालियों का पर्यवेक्षण किया जा सकता है। गद्य कवीना निरूपण वर्द्धन के अनुसार गद्य विधा की प्राचीनतम निधि का स्वरूप विस्तारण इन कृतियों के आधार पर सरलता से किया जा सकता है। इन गद्य रचनाओं का संपूर्ण रूप से जुटाना मेरे लिए सहज सम्भव नहीं था। इसलिये कुछ रचनाओं को छोड़कर शेष सभी रचनाओं के उत्कृष्ट उद्धरण (Extracts) मात्र ही दिये गये हैं। अथवा ये रचनाएँ संपूर्ण की संपूर्ण ही प्रकाशित की जानी। एक महत्वपूर्ण बात इन रचनाओं के सक्लन के लिए यह भी समझ में आई कि एम०ए० जैसी स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम में जिस प्रकार आदिकाल की अज्ञात कृतियों के काव्य का अद्यावधि कोई स्वीकृत पाठ संग्रह नहीं है, उन्ही प्रकार आदिकाल के हिन्दी गद्य का भी आज तक कोई संग्रह तैयार नहीं किया गया। अतः यह सोचकर भी इसका पूर्वाद्ध प्रस्तुत करने का विचार दृढतम होता गया। इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखकर इसका पूर्वाद्ध प्रारम्भ में इसी रूप में रखा गया है। कुल मिलाकर सोनह रचनाओं का सक्लन प्रस्तुत किया गया है।

अब रही कृति के उत्तराद्ध का बात। इसमें है—हिन्दी साहित्य के आदिकाल में उपलब्ध गद्य रचनाओं का विद्युत् साहित्यिक मूल्यांकन। भाषा विषयक वैज्ञानिक विवचन से मैं बहुत दूर रहा हूँ। भाषा विवचन मेरा विषय नहीं। इस मैंने भाषा विशेषज्ञ शोध मस्तिष्कों के लिए छोड़ दिया है। कुछ शब्द अवश्य दिये गए हैं वे केवल उदाहरण मात्र हैं तथा उनको केवल तुलनात्मक जानकारी के लिए रखा गया है।

उत्तराद्ध में मूल्यांकन अनेक रचनाओं का है। यह भाग कुल पाँच अध्यायों में बाँटा गया है। (१) विषय प्रवेश (२) हिन्दी गद्य की परम्परा (३) उपलब्धियाँ उनका मूल्यांकन (आदिकालीन हिन्दी

जैन कृतिया और रचना गद्य) (४) आदिनाम का जैनेतर (लौकिक) हिंदी गद्य साहित्य तथा अन्तिम अध्याय (५) विविध विषयक उपलब्ध हिंदी गद्य रचनाओं का है। इन अध्यायों में विविध वर्गीकरण से आदिवालीन हिन्दी गद्य रचनाओं का केवल प्रवृत्ति-मूलक मूल्यांकन ही प्रस्तुत किया गया है। यथा साध्य। यथा शक्य। मेरा दावा नहीं है कि कवन इस कृति में संकलित गद्य रचनाओं के अनिश्चित आदिकाल में कोई नई गद्य रचना मिल ही नहीं सकती। यह तो मेरे शोधक का एक बिनम्र प्रयास है, उसे मजिल कैसे कहूँ? यदि सुधी अनुमतिस्सुम्नानकी और विद्वानों ने और शोधकर इन कृतियों की सख्या में, (और प्रामाणिक कृतियों की प्रकाश में लाकर) वृद्धि की, तो उनका कृतज्ञ रहूँगा।

कृति में अनेक रचनाओं से गद्यांश लिए गए हैं। उन सबके सम्पादकों एवं लेखकों का हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे एतदर्थ स्वोच्छ्रितियाँ प्रदान की हैं। इस दौरान में बहुत बड़ी सहायता करने वाले हैं—माननीय श्री अग्रचंद नाहटा। उनकी कृपा से शोध द्वारा मैंने कई महत्वपूर्ण नई कृतियों को हिन्दी जगत के समक्ष रखा है। उनसे अशीर्वादानों का सदैव अधिकारी रहा और रहूँगा। प्रस्तुत कृति के लिए अनेक नई रचनाओं के सुझाव उन्होंने दिये। धन्यवाद के साथ मेरी उनको हार्दिक शुभकामनायें अर्पित हैं।

प्रस्तुत कृति की प्रतिलिपि मेरी हर तरह से योग्य पत्नी डॉ० कल्याण शर्मा, एम० ए०, टी० फ़ि० ने की है। अत्यंत व्यस्तता के हाठे हुए भी उनकी सेवा और सौजन्य का कायल हूँ। प्रतिलिपि को टाऊप करने वाले अपने प्रिय विद्यार्थी श्री बी० एल० चम्ब, श्री० कॉम० की भी नहीं भूल सकता, जिसका अथक श्रम इसके माध्य है उसका आभार व्यक्त करना चाहूँगा।

'आदिनाम का हिंदी गद्य साहित्य' आपके सामने है। इसको आपके समक्ष प्रस्तुत करने का मारा श्रेय रामा प्रकाशन को है और और इस कृति को इस रूप में प्रस्तुत करने के लिए सारे श्रेय के अधिकारी हैं—आदरणीय बाबू बनारसी दास मेहरोत्रा। प्रिय हरिवाबू की आत्मीयता इसके पत्र पत्रों के साथ है ऐसा मानना हूँ। मेरी मेराएँ एम०श्री० राजेन्द्र उदयगुड (राजस्थान) के हिंदी विभाग के साथ है अब मेरी अनुसंधान में प्रकृत शोध का मारा कार्य मेरे परम मित्र श्री डाक्टर शिवमूरत मिश्र, व्यवस्थापक रामायेंत ने दिया। उनका

( उत्तरार्द्ध )

मूल्यांकन

१	विषय प्रवण	८८
२	हिन्दी साहित्य में गद्य की परंपरा	१०६
३	उपलक्ष्यी तथा मूल्यांकन	११३
	(i) धार्मिक कृतियाँ	१२६
	(ii) धार्मिक सिद्धांतज्ञ य	
४	आदिकाल का लौकिक गद्य साहित्य	
५	अ य विविध विषयक गद्य साहित्य	

पूर्वाद्धं -पाठांश

## ( उत्तरार्द्ध )

	मूल्यांकन	पृष्ठ
१	विषय प्रवेश	१०६
२	हिन्दी साहित्य में गद्य की परंपरा	११३
३	उपलब्धियाँ तथा मूल्यांकन	१२६
	(i) धार्मिक कृतियाँ	१२६
	(ii) धार्मिक सिद्धांतजय	१३३
४	आदिकाल का लौकिक गद्य साहित्य	१८३
५	अथ विविध विषयवद् गद्य साहित्य	२००

---

पूर्वाह्न -पाठांश





## राउल वेल † और उसका गद्य

गउठ तुहु एकु कोपनु अउर व—- व—।

को तइ महु भइ वानइ ॥८५॥

ज पुणु मालवोउ वेमु हियावतु ।

काम्ब-वेउ जाउ आपणह हयिआरहु भूनइ ॥८६॥

इहा अम्हार । १९। इ दुभगो खाम्प करिउ वा (?) झइ १ ॥८७।

तहि सारिखउ कहाइउ थाधि एउ कि सो (म) इ । ॥८८।

सापहि ऊगि मा लहूउ दानउ वानु तें किमउ भावइ ॥८९।

जिमउ सिदूरिअउ रजायमु काम्ब देवह करउ नावड ॥९०।

नि ॥९०। लाहु र तु रुउ मुपवाणु न माहउ न ऊचउ ॥९१।

सो देविउ आठम्विहि करउ चा (दु) अइमउ भाव इ वेर एइ ।

सगदसा ७ जतगन्दसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पणहवागरणु १० विपाक  
श्रुतु ११ इष्टिवादु १२, ए वारह आग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणि  
मइ । तीह उपाध्या माहउ नमस्कारु हुउ ॥४॥

नमो लोए सन्साहूण ॥५॥ ईणि लोकि जि वेई अछइ साधु । यउ लोकु  
च किसउ भणियइ । अढाई द्वीप समुद्र पनर कम्मभूमि । जि किसी पाच भरत  
पांच ऐरवन पाच महाविन्हेह क्षेत्र ईह पनर कम्मभूमिमाहि साधइ । किसउ  
रत्नत्रउ ज्ञानु दशनु चारिनु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह  
साधु पचमहाव्रत परिपालक पचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १, मूपा  
षाडु २ अदत्तादानु ३ मथुनु ४, परिग्रहु ५ रात्रिभोजनु । जि विवर्जई ति  
साधु भणियइ । तहि साधु सबही माहउ नमस्कारु हुउ ॥५॥

एसो पच नमाकारो ॥६॥ एउ पच परमेष्ठिनमस्कारु पचपरमेष्ठि किसा ।  
जि पूर्वोक्तभणिया अरिहत १ सिद्ध २ आचाय ३ उपाध्याय ४ साधु ५  
इह पचपरमेष्ठि नमस्कारु भावि क्रियमाणु हुतउ किसउ करइ ॥६॥

सवपावपणामणो ॥७॥ सर्वपाप प्रणासकारियउ । ईणिजीवि चतुगतिकि  
ससारि भवभ्रमणु करतइ हुतइ जि असुभलेया उपायी पापु सु ईणि पचपर  
मेष्ठिनमस्कारि महामत्री सुमरीतइ हुतइ यउ हुयउ ॥७॥

मगलाण च सर्वेणि पन्म ज्ञेय मगल ॥८॥ ईणि ससारि दधि चदन  
दूर्वादिक् मगलिक भणियइ । तीह मगदकि सबही माहि प्रथमु मगलु एहु ।  
ईणि कारणि शुभकाय आदि पहिलउ सुमरेवउ जिव ति पाय एहतणइ प्रभावइ  
वद्धिमता हुयई । यउ नमस्कार अतीत अनागनवतमानचउवीसीआदिजिनोक्त  
मारु मु तुम्ह विरोपइह हिवडा तणइ प्रस्तावि अययुक्तु ध्येयु ध्यातय गुणवउ  
पदेवउ । जु विमउ ।

त्रिणसासणस्म सारो चउत्त सपुवाण जा गमुद्धारा ।

अस्स मण नवकारो ससारो कि कृणइ ॥

अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोक्तणा भय नासइ ।

यदुवत्त—अउविगिरिरनमज्ये भय पणासेइ चिन्तिया सतो ॥

रसइ भवियसयाइ भाया जह पुत्तभडाइ ।

वाहिजलजलणतक्करहरिवरि सगामविसहूरमएहि ॥

नामनि तक्कणण त्रिणनवकारण्णभावेण ।

त्रियइ गुहाण नवकार वेमरी जाण सन्निओ निच्च

कम्मन्टणठिणोघट्टघट्टय ताण परितटठ ॥

नमस्कारग्य स्वरूप भण्यते । इणि नयनारि तक्कण पांच अधिका रमत्तसटिठ  
असर तीट्माहि छ भारी इकमठि लम् । इमउ तमस्कार तणउ माहात्म्य ।

एसो भगलनिलओ भयविदओ सलवठतिमुहजपओ ।

नवकारपरममती सतियमित्तो मुह देउ ॥

अप्पुवो अप्पनरु एसो वित्तामणि य अप्पुवो ।

ओ माइ सपहनकाल सो पावइ तिवमुह विठल ॥

नवकार व्याख्यान समाप्तम्

-----

## अतिचार

(सवत् १३६९मां लखेला ताडपत्र मांयो)

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिगणा चार, चरियाचार, तपाचार वीर्याचार पचविध आचार विपइया अतीचार आलीउ । ज्ञानाचारि कालवेला पडिउ गुणित वितपहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिहनु अनेरीकहइ पडिउ अनरउ कहिउ । व्यजनकूट अक्षरकूट कानइमात्रआगलउ ओछउ देववदणइ डिकक मणइ सज्जाओ करता पढता गुणता हुओ हई अयकूट तदुभयकुट ज्ञानोपकरण पाटी पोथी ढवणी कमली सापडी सापडी पति आसातन ना पगु लागउ धुकु लागउ पढता गुणता प्रद्रेपु मच्छरू अतराइ हुउ कीधइ हइ भावसगलाहइमाहि तेह मिच्छामि दुक्कड । मु मूपावादि सहसात करि आनु अम्यास्यातु दीधउ, रहस मयभेदु कीधइ, मूपोपदेगु दीधउ, कूडउ लेखु लेखिउ कूडी सासि थापणि मोसउ कुणहइसउ राठि भेडि कलहु—विडाविडि जु कोर अतिचारू मूपावादि प्रति भवसगलाइ माहि हुउ त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम् । अदत्तादानि विराइउ छानउ पीठउ लीधउ दीधउ बावरिउ धरि वाहिरी खेत्रि सलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइ चोर प्रति प्रयोगु कीधउ नवउ पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेनिउ, कूडी तूलकूडइ थापि कूडउ कहिउ हइ अती चार अदत्तादानि प्रति भवसगलाइमाहि हुउ तह सवहइ मिच्छामि दुक्कड । मयुनप्रति लुहुउपणि आपणा विरायासील खडया सिउणइ मिउणातरि, दृष्टि विपर्यासु आठामि चउत्तमितणा नीमभगु अनगनीडा परविवाहकरणु तीव्रभिलापु धरिउ हइ अनेरा जु बोइ अतिचारू मैयुनप्रति भवसगलामाहि हुअउ तेह सव हइ त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कड । हव हिया माहि सम्यक्त्व धरउ । अरिहत देवता सुसाधु गुरु गुरु जिणप्रणीतु धमु सम्यक्त्वदत्त ऊचरउ । हिव अठार पापस्थानक बोसिरावउ । सवू प्राणागिपात सवू मूपावाद सवू अन्तानान सवू मैयुनु सर्वू लोमु रागु द्वेपु कलहु अम्यास्यानु पैगुय,

रति, अरति परपरिवाटु मायामुपावाद्, मिय्यात्वन्निमण सत्पु ए अद्वार  
पाप स्थान साशमाग समग विषन समान त्रिविध त्रिविध वोसिरावउ, अनीनु  
निदउ, अनागतु पच्चक्कउ, वउमान सवरु । सागाए प्रत्याख्यानुउ ।

समिउ समाविउ मइ समिउ छव्विह जीवनि काय ।

सिद्धह दिना सायणा नइ मह वइरु न पावु ॥

हिव दुट्टनगरिहा करउ । जु अणादि ससारमाहि हीडलइ हूतइ ईणि  
जीवि मिय्यात्तु प्रवतविउ । कुत्तियु सस्थापिउ, कुमाग प्ररुपिउ, समाग  
अवतपिउ । हिवु ऊणात्ति मेत्ति मरीरु वुट्टुम्यु जु पापि प्रवतिउ, जि अधिगरण  
हनउत्तन पग्ग परतो राठा वगरी अरहट्ट पावटा कुप तलाव कीप्पा कराव्या,  
अनुमाछा तं सव्वे त्रिविधि त्रिविधि वासिरावउ देवम्यानी इवि देवी पूजा  
महिमा प्रभावना की धी, तीयजात्रा रयजात्रा कीधी, पुस्तक लिख्याव्या,  
सायमिरवाछन्थ काया तपनीयम देवउदन वाग्णाइ सम्म्याइ अनराइ धर्मा-  
नुष्ठानतपइ विपइजु ऊजमु कीधउ मु अम्हारउ मफन हूआ ।

इति भावना पूवक अनुमोदउ ।



### धनपाल कथा

उज्जयनी नामि नगरी । तहिठे१ भोजनेवु राजा । तीयहि-तणइ २ पचह सयह३ पडितह माहि मुरुपु धनपाल नामि पडितु । तीयहि तणइ घरिअयदा४ कदाचित साधु विहरण निमित्तु पइठा५ । बीजतु पडितह एणी६ भार्यात्रीजा दिवसह णी दधि लेउ ऊठी । बीजतु७ काई८ तिणि प्रस्तावि९, व्रतिया१० विहरवण सारी खेउ ११ नहूत१२ व्रतिया भणियउ१३ । केता दिवसह णी दधि । तिणी ब्राह्मणी भणियउ श्रीजा दिवसह णी दधि । महामुनिहि भणियउ श्रीजा दिवसह णी न दधि न उपगरी१४ व्रतिया ठाला१५ नीसरता१६ पडिति धनपालि गवाक्षि उपविष्टि१७ हूतइ१८ दीठा १९ ; विण वियउ २० किसइकारणि २१ ठाला नीसरिया, पडियाणी दधि दियइ छइ । तदनतरु गवाक्ष हूतउ ऊठिउ महा मुनि समीपि आवियउ । महामुनि व्रतिया । भगवतहु ! किसइ कारणि दधि न विहरू २२ ? महामुनिहि भणिवउ । श्रीजा दिवसह णी दधि न उपगरी पडितु भणइ, किसउ दधि माहि—पुण २३ पूयरा२४ छइ ? तउ महामुनि भणइ, फूलिणि हुयइ । तीयहि प्रतिबोधापु२५ महामुनिहि रातउ२६ रू अणावियउ२७ दधि ऊपरि धरावियउ । दधि ऊपरि चडी छइ २८ फूलिणि २९ । तीयहि माहउ वुमुय३० नीसरितु रातइ रूइ चडिया । तहि वार धनपाल पडित प्रति बोध हुयउ । परम भावक हुयउ । तउ तिणी भावकविधि कीधी अनइ३१ इसउ३२ अभिग्रह३३ कीयउ तीयगरू देवु मुकिउ३४ अनेरउ३५ इणि जीभ परिरउ३६ स्तवउ नही । अ यदा परमेश्वर रुपभनाह णउचरितु कीयउ । ब्राह्मण जाइउ भोजदव राजा आगइ कहियउ । भोजदव३७ पुस्तकु अणाविउ । वानि यउ । भणियउ पडित राज चरित्तु खरउ ३८ विशिद्धाओ३९ । पुणु जहिठे४०

१यहाँ, २तिसरे, ३पांचमौ ४एक दिन ५प्रवेश किया, भाये । ६को ७ दूसरा तो ।

रुपभनायु धानियउ ४१ छद् निगि स्थाननि ४२ महवक धनपाल पडिनु भणइ, तीयगम् ४३ दनु मूरिउ अनरउ न स्नवू । भाजवु राउ अनि आग्रहि सागउ । धनपाल पडिन रोम चडी । सायालउ ४४ हुनउ ४५ मगडी बनती हुती यहि माहि धानियउ भाजदव राजा वाता पुम्नकु यालियउ । बइठा ऊठिया रानिकहिठे पडियाणी ४६ पूछियउ, किमइकारणि भमाविलि ४७ वरउ ? धन पानि पडिनि भणियउ परमवरह णाउ चरिभू कीयउ अनइ वालायउ । तउ बट्टु । निणी भणियउ तुम्ह बग्ता मा बत्ताहि एकि न्नाव आविया ४८ । पन्ति भणइ कहि । पडियाणी जेतता ४९ पन् आविउ तेना नहिया । पडिनि बेनउ-एफु ५० चरितु रुपभनाहणउ कीयउ ।

८ बोई \* उस प्रमग पर १० ब्रती साधु ११ सरीसा, सदुस । १२ न यी १३ बहा १४ उपकारिणी नहा उपयाग म आने याग्य नहा १५ गाली हाय १६ निरनन हुए १७ बठ हुए १८ म १९ न्या २० विनती की २१ रिमनिए २२ अगीवार नही करते हैं २३ पुन २४ सुम्म जनु २५ पान देने के लिए २६ रक्तवर्ण २७ मगवाया २८ है २९ महाघ स उठने वाला जाला, फूलन ३० धुन्न पीट ३१ और ३२ एमा ३३ प्रतिता ३४ छाडकर ३५ दूमरा ३६ द्वारा, से ३७ राजा ३८ सच्चा ३९ विगुद्ध ४० जिस स्थान पर ४१ डाला है (तिरा है) ४२ उस स्थान म ४३ लीपकर ४४ दीनश्रुतु ४५ या ४६ पडि साहन ४७ चिन्ता कर रह हैं ४८ या (आप) ४९ जिनने ५० चितनव ।





## सम्यकत्व

कर्ता—तरुणप्रभसूरि, सवत् १४११

सम्यकत्व गुणरहइ आविर्भावकु श्रीनरवम महाराज कथानकु लिखियइ । ईही जि जम्बू द्वीप माहि भरत क्षेत्र माहि मगध नामि जनपदु छइ । तिहा विजयवती नामि नगरी तिहा नरवमु नामि राजा रतिसुन्दरी नामि पट्ट महादेवी हूतो । हरिदतु नामि पुतु हूतउ । मतिसागरादिक अनकि महामात्य हुता । अनेरइ दिवसि राजेद्र आगइ सभामाहि धमविचार विषइ आलापु श्रनि नीपनउ । तत्र एकि कहिउ धम्मु दाक्षिण्योत्पादिकह गुणह करी हुयइ । तथा परापकारइतउ लोक विरुद्ध त्यागइतउ पुणि धमु हुयइ । बीजइ कहिउ वेदोक्तु अग्नि हात्रादिकु धमु । श्रीजइ कहिउ कुल क्रमागतु धमु । चउषइ कहिउ धर्मधम प्रत्यक्ष प्रमाणि करी गगनारविद जिम दीसइ नही, इणि कारणि नयी । इसी परि सम्य धम विवाडु करता दखी करी विवेकवतु नरवमु राजा मनमाहि चीतवइ । दाक्षिण्यादिकह गुणह करी ता धमु न होई । ति दाक्षिण्यादिक गुण पुरूपवतु । वेदोक्तु पुणि धमु नही । हिंसा दोष दूषित्वइतउ । क्रमागतु पुणि धमु नही । इसी परि कुणरहइ धमु न हुयइ । नास्तिक वचनु जगज्जतु सुख दुखानि दशन भावइतउ घटइ नहीं । सब दोष रहितु शुद्ध कनक जिम किसउ धमु हुयइ । इसउ मनमाहि जेतलइ नरवमु राजा चीतवइ, तेतलइ पाडिहास राजा रहइ वीनवइ देव । महाराज । तुम्हारउ बालमित्तु मदनदतु घिरा गनु द्वारदेसि वतइ ।” राजादेसइतउ मदनदतु माहि मलिहउ । राजेंद्रि समा लिंगन समान बहुमान दान पूवकु पूछिउ—‘मित्र ! एतजउ काल किहा ताकउ विउउ उपाजिउ ? सु पुणि राजारहइ प्रणामु करी वीनवइ— ‘महाराज ! अनेकि २ देस अनकि २ आश्रय दीठा । प्रभुतु धनु उपाजिउ । एउ नखन-श्रेणी-सहानरू एकावली हारू महाराज मइ लाषउ । राजा भणइ मित्र ? एह हारनउ लाभु मू आगइ आमूल चूल कहि । श्रस सु कहइ महाराज । तना बालि हउ पुम्हूँततउ नीसरिउ प्रभूत देशातर भमतउ हूँतउ द्रपदिवावटवी माहि गयउ । तुषावानु तेह माहि ओरहउ परहउ धणउ ममिउ तिहां पिरतइ हूँतइ गुणधर सूरि नामि आचापु भेटिउ । तेह महात्मा आगइ

एवावली हार साफलवार धारतु देवु एतु देवी सहितु, महात्मा तथा मुक्त  
 हूतत धर्म्मु जिनप्रणीतु सामलतत मइ दीसत । हउ पुणि वाणी करी तिहा बइ-  
 ठउ । मूरुहइ पुणि धमु सामलता तुस सर्वथा नाठी । आपणा बाधव जिन  
 मू देखता हूतो तेइ देवरुहइ मू ऊपरि महात प्रीति उल्लसी । तउ  
 पाइइ तिणि देवि महात्मा पूछिउ—“भगवन् । मूरुहइ एह ऊपरि किंसा कारण  
 मणी स्नेह तणउ अतिघउ । महात्मा भगइ—” एह भवतउ पूव भवि कौशावी  
 नगरी माहि जयराजेंद्र तथा तुम्हें विजय वजयत नामहू करी प्रसिद्ध पुत्र हूता ।  
 तुम्हारी माता दव जोगइतउ परलोकि गई । धात्री प्रतिपालिता हूता तुम्हें  
 यौवन प्राप्त हूया । जयराजेंद्र तुम्हरुहइ यौवराज्य पदु दणैहारू जाणी करी  
 उद्यान बनि फीडा करिवा गया हूता मातानी अठवो दिवारिउ । तदा कालि  
 तिहा अगानतरूतलि दिवारर मुनि सरुडापपाताध्ययन गुणतउ हूतउ । तेह-  
 नइ प्रभावि तिहा गरुडेंद्रु आविउ । महामुनि तहरुहई सवा परायणु हूयउ  
 गरुडरू तथा प्रभावइतए तुम्हरुहई विपमु विपु प्रभविउ नहा । गरुडु राजु तेह  
 मुनिरुहइ प्रणमी करा आगइ आवी बइठा । गरुडेंद्रि कहिउ जइ दिवाररू  
 मुनिवरू इहा न होइ तइ तुम्हें मूया हउज । तिणि कारणि एउ महात्मा तुम्ह  
 रुहइ जीवित ध्याता माता पिता समानु । एह महात्मा तणी मली परि सेव  
 करिउ । इसउ मणी करी गरुडेंद्रु आपणइ धानाकि पढुतउ । तुम्हें पुणि  
 मात तत्व तह मुनि कन्हइ सजमु से करी दुप्पर तप नियम पर हूया । तुम्ह  
 माहि ज्येष्ठु मरीनरी प्रथम दवेलाकि विद्युत्प्रभाभियानु देवु हूयउ । तउ सहुठउ  
 विद्युनु दम् नामि तिहाई जि देवु हूयउ । तिहा हुतउ बठउ भाइ चवो करी  
 विजयवती नगरी माहि मन्गत्तु नामि नरवम राजेंद्रनउ मिनु वाणियानउ पुनु  
 हूयउ । मुपुणि इउ पन कारणि किरल उ हूँतउ हवडा तइ दीठउ । तिणि कारणि  
 पूवभावाभ्यास बसइतउ मूरुहइ एह विपइ म्हातिघउ । इसउ सामली करी  
 तिणि देवि एउ एवावली हारू मूरुहइ दीसत । महात्मा पूछिन मूरुहइ जिद्दादिक  
 अपनगाण किसइ कारिणि महात्मा कहिउ मूरुहइ मरानु दू कडउ वनइ । तिणि पु ।  
 नरवम राजेंद्र तणउ पुनु हरित्तु नायि होइति । एउ एवावली हारू देखि  
 प्रतिभूतिनि । इसी परि छिन सगप हूतउ मूरि नमी करी स्वगि गयउ । तउ  
 मइ मूरु पूछिउं भगवन् । एउ हारू किसउ मूरि भगिउ भगिउ पूर्विहि नवात्तमु  
 कनट्टे इ न्यानि गयउ । इदि हाकिउ बाठउ । अयामुस नामता हूता एउ हारू  
 मना हुतउ सरुजात इ द्वीनि पडिउ । इणि दवि सापउ । इणउ सामता मूरु  
 काणी पचरीय बरिस सीम दगानरि परिप्रमी पनु प्रनुउ जगती करी हवडा  
 हउं स्वामिन् । आविउ । स्वामिन् ! मु देवु तुम्हारू पुनु हूयउ कि नहीं ।  
 राजेंद्रि कहिउ विउ । हलिउरुहइ हारू दिसातउ । हलिउतु तवी हारू निसानिउ

हाम् दशनइनउ तेहरहइ जाति समरणु ऊपनउ । राजेंद्रि पूछिइ हूतइ हरिदत्ति  
 कुमारि तिमहि जि पूवभव सबधु कहिउ । जिम पूर्वाहि मन्तदत्ति कहिउ ।  
 राजा चित्तमाहि चीतवइ जु आगइ धम्म विपइ विवाडु हूयउ मु विवाडु एह  
 पुत्रनइ चरित्रि करी उच्छेदिउ । एह विश्वामाहि धम्मु जिनप्रणीतु जु छइ  
 भय्यरहइ भवभवछेत्कु मोक्षमुख-दायकु । एतलइ प्रस्तावि उद्यानपालकि  
 राजेंद्रु वानविउ देव । अ जु पुष्पावतसाकि उद्यानि बहु शिष्य परिवृतु चतुर्जानी  
 सुरासुरन रेखरनमस्कुतु श्री गुणधम् नाभि सुगुरु समोसरिउ छइ । जिम मेघ  
 तणउ गजितु साभला करी मयूरु नाचइ तिम तेहनउ वचनु साभली करी राउ  
 हरयिउ । हस्तिस्कध ममारूढ पुत्रमित्रादि परिवार परिवृतु महात ऋति  
 समुदय करी गुरुपाद वादिवा पुहनउ । विधिवन् वादी करी यथा स्थानि  
 बइठउ । अमृतरस सारणिसमान धम्म दशना साभनइ । यथा 'भो भव्या'  
 सब धम्म मूल शिवपुरद्वारु सम्पक्त्वु वत्तइ । सु सम्पक्त्वु देव-गुरु धम्म विपइ  
 देवगुरु धम्म बुद्धि स्वरूपु कहियइ । अदेव-अगुरु अधम्म विपइ देवे गुरु धम्म  
 बुद्धिस्वरूपु सम्पक्त्वु विपरीतु मिथ्यात्नु कहियइ । तत्र जित राग द्वेष मोहु  
 देवु जिनु । महाव्रत धरु गुरु । त्यामूल्ल धम्म इति । इणि सम्पक्त्वु साधइ  
 नरकगति त्रियचगति गमनु न ह्यइ । मनुष्य देव मोक्ष मुख जीवरहइ स्वाधीन  
 ह्यइ । तथा च भणित ।

सम्मत्तभि उलद्धे ठइयाइ नरय तिरिय-दाराइ ।

दिग्वाणि भाणुसाणि य मुक्ख-सुहाइ सहोणाइ ॥

इसउ साभली करी राजा पुत्रिसहितु भग्गयक्त्व-यूवु गहि धम्मु ले करी सतुष्ट  
 हूतउ अपणइ घरि गयउ । अनेरइ दिवसि मुधम्मा सभामाहि बइठउ सौधमैँद्र  
 नरवम्म राजेंद्र तणउ सम्पक्त्वु देवहीरहइ अद्यालनीउ कहइ । तउ पाछइ  
 सुवेगु देवु इद्र-वचन विपइ मदहु धरतउ हूनउ वक्रिय ऋद्धि विस्तार सहितु  
 पराथा निमित्तु आविउ । निणि दवि दिव्य शक्ति बलिगायामउ साधु समूहु  
 अक य करनउ राजद्ररहइ निम दिक्कालिउ जिमजउ अनरउ दत्तइतउधम्म हूतउ  
 निश्चइमउ पन्वइइ । नरवम्म राजेंद्र पुणि निम साधुव दु देखी मनमाहि  
 चीतवइवपात्किह करी हम जिम गुद्धु जिनधमु एकु छइ कितु ए पुण मुनि  
 गुरु-कम भार भावि करा विन णिया । हूता जिनधभरहइ लायवु करइ । सु  
 पायवु जि मनिमत हूयइ तेह णिणि हूती अवस्यु राखिवउ । इमउ चीतवी  
 करी समभाविहि जि करा अवायहूना मुनि निवारिया । देवु सम्पक्त्वु विपइ  
 निश्चल जाणी करी नरवम्म रायरहइ प्रणमी करी साक्षात्कारि होई कहइ  
 महाराण । धयु तउ जेटु तूरहइ सभामाहि बइठउ इद्र महाराजु सम्पक्त्व

सम्यक्त्व ]

[ ३५

तणी स्तुति करइ । इसउ भगी आपणउ सउहु अ पी करी आपणइ धानकि  
गपउ । नरवम्मु महाराजु सम्यक्त्व भूत्त गृहि धम्मु चिरवाल प्रणिपाली करी  
पुन नित्रात्तिक सहितु दीमा ले करी सुगति पहुतउ ।

नरवम्मनरैदस्य दृष्टा सम्यक्त्वज पत्तम् ।  
स्वर्गापवगद भव्या सम्यक्त्वे सन्तु निरक्षसा ॥

-----

## जिनदत्त कथा

( कर्ता—तरुणप्रभसूरि, सन्त् १४११ )

समाधिगुण प्रकटीकारुकु जिनदत्त श्रेष्टि कथानकु लिखियइ—वशाली नामि नगरी । तिहाँ छद्मस्यु श्रीमहावीरु एक वार उद्यानवनि बर्पाकालि देवकुलभाहि पाउसम्मि रहिउ । तिणि नगरी परम श्रावकु जिनदत्तु नामि हूतउ । श्रेष्टिपद भ्रष्ट हूँतउ जीणश्रेष्टि इसइ नामि सु विख्यातु हूयउ । भिक्षा भ्रमण तणइ अमावि करी श्रीवीरु उपोषितु जाणी करी वादी करी धरि आविउ । इसी परि नितु नितु करतइ वरसालउ तिणि लाधिउ । आपणा मनमाहि चीतवेवा लागउ—जइ किमइ आनु माहरइ धरि श्रीमहावीरु पाउ णउ करइ तउ हउ तारिउ हुयउ । इसउ ध्यायतउ हूतउ विशुद्ध भावि हृषित चितु धर वारि रही करी चीतवइ । जइ । इहाँ श्रीमहावीरु आवइ जगम कल्पद्रुम जिम तउ हउ मस्तकि वद्धाजलि हूतउ भगवतरहइ समुँवु जाउ, त्रिह प्रदग्निणा दे करी सपरिवाए थकउ वादउ । तउ पाछइ धर माहि पाउधारावउ । जगम निधानु जिम ( जिन ) प्रधानह प्रासुकेपणीयह पानानह करी भक्तिवसइतउ भर्वांसधु तारणउ पारणउ करावउ । पुनरपि नमस्कारी करी वेतलाइएकि पग भगवतरहइ अनुममनु करउ । पाछइ आपणपउ धायु मानतउ हूतउ आपणापइरोपु उगरिउ धायु हृषितु तिवउ जीमिसु । इसी परि मनोरथमाला जिनत्तरहइ मनमाहि करता हूँता अभिनव श्रेष्टिनइ धरि भिन्नानिमितु श्रीमहावीरु आविउ । अभिनव श्रेष्टि चेंढी हस्तगत कोमासह करी पाराविउ । सुपात्र दान प्रभावि पच दिव्य ताहा हूया । तिहाँ राजा दिक् लोक मिलिया । अभिनवु श्रेष्टि प्रगामिउ । भगवतु श्रीमहावीरु पारणउ करी अनेरइ धानकि बिहरिउ । त्रिनत्तु देवदुडुभि निनादु साभली करी चित विवा लागउ धिगु मूरहइ । अधयु हउ जु माहरइ धरि भगवतु न आविउ । इसी परि महा विषादु करत उ जिनत्तु ताकि जाणिउ । कि बहुजा, राजेंद्रिपुणि जाणिउ ।

पशु जिनदत्तु जु इसीपरि भावना भावइ । तदातिणि न गरी केवली आविउ ।  
 राजाके सोन वागे पूछिउ भगवान् जिनदत्तु पुण्यवतु, किवा अभिनवु पुण्यवतु ।  
 केवली कहइ जिनदत्तु पुण्यवतु । साकु कहइ भगवान् । भगवतु अभिनवि पाराविउ  
 जिनदत्तु न पाराविउ । केवली तहनी भावना मूल लगी कही करी कहई-  
 भावइउ उ जिनदत्तु पाराविउ, द्रष्टउउ पुणि अभिनवु, अच्युत देवलोक-  
 योगु पुण्यु उभाविउ । जइ देवदुभि निनाइ सामन्त नहीँ तउ तेतीही जि वार  
 केवलजानु ऊगाहन । भावरहिति अभिनवि पुणि सुपानदान प्रभावि सुवणवृष्ट-  
 यावि फलु लायउ । समाधि रहितु जीवु ईहिकु जु फलु लहइ । समाधिसहितु  
 पुणि स्वर्ग मोखादिबु फलु लहइ । तउ पाछइ जिनदत्तन की प्रशंसा करी राजा-  
 वि सोक घरे गया ।

## बाहुबली कथा

( कर्ता—सोमसुन्दर सूरि, समय विक्रम संवत् १४५७ १४९९ )

हिवइ धर्मानुष्ठानकरता शुभ ज भाव करिवउ, त्रोध अहकारिदि दूयिन अगुभ भाविइ काज न सरइ, तेह ऊपरि बाहुबलिनु दृष्टान्त कहइ छइ मूलगाथा धम्मो मएण हुतो न वि सीउहवाय विपशडिउ ।

सवच्छरमणसिओ बाहुबली तह किलिस्सतो ॥ २५ ॥

बिबरण — धम्मो—जइ अहकरिइ कीघड धर्म हइ तो न वि सीओ तउ बाहुबलि राजपि सीउ०—एवढा सीत टाडि उष्ण लूय वाय करी विज्ज डिउ—आहणिउ, सवच्छर-वरस दीस अणसिअउ-आहारपाणी रहित उप वासी वाउस्सागि रहिउ । कलि क्लेश दुख न प्रामत तत्काल जि बेवलज्ञान उपाजित बाहुबलिनइ मनि दीक्षा लीघी पूठिइ हसु अभिमान हूउ जउ हवडां श्री आदिनाथ कहलि जाइसु तो माहरि लमु ९८ भाईए दीक्षा लापी छइ ते वादवा धांसि तेह भणी बेवलज्ञान ऊपना पालइ नहीं । जाउ । बेवलज्ञान ऊपना पूठिइ बेवली को बेहनइ वादइ नहीं इसी व्यवस्था छइ । ईणइ अभिमानि बाहुबलिनइ वरस दीस बेवलज्ञान न ऊपनु । जेती वारइ श्री आदि नाथनइ भादेसिइ ब्रली सुदरी महासती ए बिहूँ बहिने आवी कहिउ बाधव । हापीपिकु ऊतरि । तिहारेइ तीणइ चीतविउ-अभिमान ज हापीउ । ते मूकी जेतलइ पग ऊपाडिउ तेतलइ बेवलज्ञान ऊपनु ।

## वे भाई

( कर्ता—सोमसुन्दर मूरि )

आगद एकद गामि वि भाई हुता । पहिनी मपनी वष्टिद एक भाई  
 नदीनद तीरी बाप्लाणि काडिवा गिउ । इगिद पुर वही गिउ छद  
 नदीनद तटि एउ मानीया भरा कटाहि दीठी । ते तई कादम सरडिया भणी  
 निवरद द्रहमाहि घोवा लागउ । तेननद त हाप हुनी विछूट । द्रहमाहि पडी  
 तेहनी मूर्छा इ करी पेलउ गहिनउ यिउ । इमद जि कहद 'आहा घोवा गई २ ।  
 पाछउ परि आबिउ । जि का बोलावइ तह इद घात्रा गइ २ (घोवा गई)  
 इम जि कहद । पछद सग त आरखी माहि पाती बेनलाइ दीहाण भूपिउ  
 रापिउ । भूयइ करी ते गहिनपाउ गिउ । यण भाई अ गलि सोनइआ भरी  
 कडाहिनउ यतांन कहिउ । तह हइ ते बान गांभनतां माहइ करी गहिनपाउ  
 पिउ । इम जि कहदतई काद पाई जि को बानावइ तेउ आगलि ईम जि  
 कहद तइ काद पाई । पछद गग त हू आरडा माहि पाती भूपद भूखिउ ।  
 तेउहनउ गहिनपाउ । इम गमिउ । इम जीव अणघतीइ वस्तद मोहद करी  
 गहिन पाइ । पछद मरी दुगतिइ जाइ ॥



## शोकाधिकार

( १ )

यदा कालि जगन्नाथु माय तणी अनुकम्पा करी थिउ सलीन तनु सत्त्वलि दुविद पूरीबा लागु राग्नी त्रिगला-तणु, मनु	१
अहो ! आ किसिउ अकालि उत्पात हुसिइ किसिउ वज्रपात ।	२
अहो सखी ! माहरइ गर्भि पामिउ विलयु हुसिइ किसिउ हिवडा जि विश्व प्रलय ।	३
हिव एउ माहरइ मस्तकि जे अछइ मउड एउ प्रत्यक्ष इउड ।	४
एउ हार साक्षत सहार ।	५
घाहु-बल्लरी-तण जे अउइ वलय ते दु ख-नणा दीसइ निलय ।	६
एउ अपूव पट्ट दकूलु ते देखता सताप-तणु भूलु ।	७
एउ अछइ सर्वा गीण अगार ते देखता सपूणु अगार ।	८
दव ! मइ निसिउ कीघउ पाछिलइ भवि कुणइ तणा छोरु न विछोह बइ नीपजाविउ कुणइ सत रहइ वच द्रोह जेह कारण निफल हुइ छ-हूरु मोह ।	९
मइ निसिउ कीघउ पाणु जेह कारण देविइ पाडिउ एवउ सतापु ।	१०

गौरीाधिकार ]

मइ जाणित हनु हउइइ मुलरवण बमारू	[
यासिइ विरव रइ आपार ।	
जाणितं हनु भाविनिह त्रिवारइ मात्रइ परि	११
निवारइ इ धागि पुत्र बनी नइ धुनि ।	
जाणित हनु पुत्र माडिगिइ आठउ	१२
मनगिइ पाटु ( पत्र १ व )	
माहरउ जापु यानिइ मोटउ राउ	१३
देसि वयर तणि मलावि पाउ ।	
तउ पापी दविइ भाग सवे आम	१४
पठिउ गम बाल दुग-नणउ पास ।	
भागी सपली इ रूनी	१५
सनाप थणि ऊछती ।	
आय बलि जइ बली	
माहरइ मनि मुय तणीवाल त्रि टली ॥	
आसा-नरुयर मुमुहीउ जाम पनेवा सग	१६
विहि-नुजरि उम्मुलीउ एय कुमधिइ भग ।	
बम गरोवर पाली	१७
बम-नु मइ त्रि टाली	
वि गिउ वव जाली	
जोबटां कोडि बाया	
बय मनि दापी गाली	
आस शीभउं गुड बामी	
बइ लहीय विबामा	
बाम मीयउ ऊराली ।	
गणि ! न गमइ गानु	१८
पिय मोदिइ बगानु	
बइ न हि निवामु	
ताय निइ पत्र ताय	
अमुल गिहनि गानु	
हीय टमइ हीइ जानु	
विगिउं मा बमनु	
बई-बिउ इग नीयनु ।	
इगिउं राजा-जानु स्वकय	
गाम-विउ गिउां राइ विबय	१९

दासी ना बचन तु तत्काल ऊपनु मस्तवि चाटक	
विसर्जित विभीस बद्ध नाटक	२१
जे हूता बडूया	
ते धया कडूया	२२
जे गीत गान ( पत्र १ ख ) करता गधव	
सेह सणा गल्या गव	२३
राज भवतनि जीणइ रजीइ चीत	
ते एकू न सामलीइ गीत	२४
जीणइ ऊपजइ मन रहइ चित्र	
ते ज वाजइ वादित्र	२५
जे हूता पडित	
ते धिया दु ख मडित	२६
जे राय रहइ अवस्य कृत्य	
ते न दीसइ नतकी नृत्य	२७
जेहे विद्वामे धूणीइ मन्त्र	
ते न वाचइ पुस्तक	२८
ज साभलता धईइ हराण	
ते न वाचइ पुराण	२९
जे जाणइ कय-नु अवसर	
सेहे कधीश्वरे मूकित महावाय नु प्रसर	३०
जे साभलता फीटइ व्यया	
त एकू न साभलइ कथा ।	३१
जीहणे बोल मोतीरिफ दीणइ सुवणमइ त्राट	
ते कालिय न करइ भाट	३२
जे हूता चाचरिया	
ते धया लासरीया	३३
जे लोक रह करावइ जहार	
न हूया निसचना प्रतीहार	३४
जेहे निरंतर नीभ वावरी	
ते मौन करी रहिया टावरी	३५
जे करता नगर नी करणपार	
त बइसी रहिया तलार	३६
जेहि मन ऊपजइ प्रमोद	
ते एकू न दीमइ विनोद	३७



## काह्लदे प्रबन्ध

( कवि पद्मनाभ—विरचित )

भडाउली

(१)

राजा का हड्डे तणइ कटक पाछी लइ पुहरि कडाहि चडइ । बाज पडइ । सिहयि बीडा । प्रबहि घाडा पडपना न सहइ । घानातरि वहिला सुपासण चाल्या ।

कठालिया किस्या । भडार भरीया । आलाचि आत्मनइ आ या । मत्र मुहाणि हुई । गल्लप सीपामण हइ । गीत्र दे पानइ नवेय नीपना ।

गूरा सुभट पिना तण घरे घाटा पाठ या । छत्रीम बण तणा घोडा । किस्या किस्या घोडा । उज्जरा । महरा । कारण तोरका । भारिजा । सीधूया । अहिवाणा । पहिठाणा । उत्तरमेना । मध्यदेसना मठूयडा । देवगिरा । नेवगरा देवाऊ । म्वरा । वेवाणा । सभ्राणी । पाणीपघा । ऊराहा । गेराहा । वासी कठा । विहाडा । करडा । करडागर । नीनडा । मरुडा । हरीयन् । गरेपडा । दूकचना । पत्र पुरामाणी । बाह्लमेना । बोरीया । लहितूया । गगटीया । हसनादर । ऊढणभ्रमर । ऊघस्या फोरण । चपत चरण विम्नीण । गालिहोत्रि प्रतिष्ठा सिद्धा । विनेप गतिकरइ मनसू चालइ । पवन स्यू तरइ । पाटीए पग दइ ऊनरइ । लण मनि धरइ । समुद्र माहि चस्या । बसवटी बस्या । ते घोडा पृथ्वी पुरतातालइ ।

बापवालीया च्यारि च्यारि विसगा छइ । किरि जाणीइ आराशि तणा गमन करनि । अथवा पाताल तणा पाणी प्रगटावनि ।

ते घोडा गगोन्कि स्नान कराया । तेह तणि मित्रि श्रीकमनि पूजा कीधी तह तणी पूठि बाचना चदन तणा हाया नीघा ।

तेह तणी वूठि पचवण पापर दानो । कियो कियो पापर । रणपर ।  
बीगपर । गुहियपर । माहपर । जाननामाग पापर ।

तेह तणी पाहा तणी वूठि पचवण पडया । कियो कियो पहाण ।  
कुली कुबुराल । बाढीया नामपला । वात्रनी वज्राडली । बभरा बहिरया ।  
यलपलारा गछा । आहा रया ऊका गुहमा पानतो परा । हनकनी धाम ।  
पीनलहर पागटा ।

तेह पाठ कियो कियो पित्रा चढामा । पचकीम वरस ऊपहरा । पचाल  
वरस माहि । मुमनधानीक वागधिरी । आकरणात मुद्द । नाभि प्रमाण  
बूच । उदार गहार । हर्दद गुबिचार । पाडउ चालद । मनसिउ तिरद पवन  
गिउ चालद । कीनि विस्तरद । परनारी महोर । मघामि सधर । बालाबो  
मारद । मारी मरद । बापगा रवामि तणू कात्र वरद । धनीसद दडागुभ  
परद । हपीवार वावरद । पन्वाग गब भणा नमगार करद ।

उर राठत चालने चालने हुन । इम्हा मुहाया । तुरी पापरीया ।  
रप झुता ।

रात्रन बडाया । गनाह सोधा । कियो कियो सनाह । जरह जीण ।  
आबणवाल । जीवरणी । अणरपा । करोया । कजायो । साह बद्धमुडि ।  
ममन सनाह सोधा सजकोभूत हुमा । मुणठ तणी गृणार पडहुडोया । रननाडली  
मनबनी । मात्रा कडा कणबनी । राग रणउमी । बाप बयाउमी बाबो ।  
साहण पडह्या । फेनकारणी । फणाउला । असांग ऊरो । रत्र रमी । अचकार  
प्रबर्णठ रूप हारणउ । गुव पेहि करी बाछाधउ ।

महाराजाधिराज श्री का हृदये पूरी बइठल छइ । सिंहासनि पाउ पर ठिठ छइ । मेघपना उलच बाध्या छइ । परीयछ डली छइ । केतकीना गध गह गहीया छइ । सोरभना मोड साचरिडा छइ । सभा माहि मेरी मेरुाणि छइ । जाइ देलि बालउ पाडलना परिमल पञ्चवण पुष्पजानिना प्रकार पाघरिया छइ । गुल्लालनागध गहगहीया छइ । पढीया कपूर पाए चपाइ छइ । घोडा, बही बालइ घालीया छइ । हाथीयानी सारसी आगलि कानि पडिउकाइ नथी सभलातु । पञ्चदश वाजिप्र बाजइ छइ । मल्या पीतल रत्ताजणा तथा पपावज घोकार करइ छइ । नत्यकी पात्र नत्य करइ छइ । चामार विजयन बिहु पपि हुइ छइ । अमात्य प्रधान सामत मडलीक मुकुटवद्धन श्री गरण । बइगरणा धर्मादिकरणा मसाहणी टावरी बारहाया पुरुष बइठा छइ ॥२॥



## वचनिका अचलदास खीची-री

( घात भाग )

गाहण सियदास री कही

इसी ताइ देवी । धन साहण पुत परिवार उदउ उछाह देवणहार ।  
तास गुण नमो बलणाइ ।

बण पुस्तक धारिणी कासमोर बरि वसति, गीत नाद गुण गाह  
नियण देनि बवियण दियनि ।

अर सोह नद पासरुमठ, गूर सिहाइनि आवस्यठ, पचामुत बमी परग  
स्यउ । महादान आदर धइइ, दुध माहि साकर पइइ । सोनउ गइ सु-बामु  
अर अथल बयइ सिवणास ॥१॥

अर धारण कहइ अे बहो बडाई तउ आपणवाहइ, पूछइ न हइ । अतरइ  
हिअ कारणइ, आगिसठ राबा सभा सहिन गु बिन हइ गुणाइ तउ मुकवि  
बुकवि की पारिणा जणाइ ॥२॥

तइ कटक-बय रउ आरम्भ पारम्भ गतानन गहावुरउ । तइ कटक बय  
माहि तउ कहइ दिखानउ । मरुधर तउ कवा बवा ? उउमानान पफनेबान  
गवनीसान उमरसान हइबदियान । सान तउ मुयोग मारिवा ।

हीदू राबा कवा ? मरल ही कक-बची ककल कला सवुण, राबा  
मरसिब मरीसा । तइ मरसिब दाग का कटक बय धारिनी मारि आरम्भइ  
बनि पाणी पाछिनइ बनि काम्म । तइ काम्म-बइ टाहि सोह उइती  
आइ । दुगरउ विवमार्नि ॥३॥

ते राबा मरसिब दाग मारोणा । बमोग गाहण रिण-भति मेहि  
बानउ । मशीनमग हुंती हुंती मी ह पाउउ । आन नाइ ममइ धानउ ।  
मय-बाइ लीहउ पमानियउ । अनेक राइ मरगतिउ करि मरगान ।



ते राजा नरसिंह दास सारीखा त राजा नरसिंह दास का बूबर तउ चाद की खमजी सारीखा । मातगपुरी का चक्रवती लखमराव सारीखा । देवसीह सारीखा । बूदी का चक्रवती अवर देवडा हीदू राइ व दि षोड दूसरा मान दे समर सीह सारिखा ।

देम तउ कउण कउण ? सतियासी न मियाड जुग मानघाता आसेरि दूगउर मिलार पुर लागइ का कटक बघ बघ । भस तैस तउ माडव धार उजीण सीह खड खड का नगर नगर का खान मीर अमराव व चनुरग दल चडि चाल्या पातसाह आपुणपउ पलाण घाल्या ।

इसउ हिंदू राजा उम्कठि कउण छइ जिकइ मनि पातिसाह की रीस वसी नउण का भाया तइ खिसी ? कउण हइ दई रुठउ ? कउण की माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ? आगु तउ सोम सातल का हडदे नही तिलक छपरि तउ गहिन उतु नही, सीहउरि रउतु नही, हठ कउ राउ हमीर आथकपउ ।

अउर पातिसाह हुवा आगिनरा, अर भला भलेरा । तयाँ तउ चउरासी द्रुग लिया था दिहाडइ पाडइ । तउ सुरताण दूसरउ अलाउदीन, जिणी चउरासी द्रुग लिया था । अेकइ दिहाडइ ।

तणि पातिसाहि आया सातरि कुण सहइ ? कुण सहिजइ ? कुण की जुनिन कुण की प्राप्ती ? कुणका माइ विवाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ?

यउ तउ पातिसाह उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ जइतवार, इका पुरुखारथ प्रवाडा नाहि पार । धन धन हो राजा अचलेसर । धारउ जियउ जिणि पातिसाहसउ खाडउ तियउ ।

तेणि पातिसाहि आयाँ सातरि सत छाडय नही खत्र खांडइ नही, दीण न भाखइ, पागार सघित न होयइ । तेराजा अचलेसर सारिखाअचल नइ अच लेस ही होयइ ।

अचलेसर तउ किसउ ? उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ भड किवाड, आइया अजइपाला अहकारि रावण । दूसरउ धारू । तीसरउ सिषण । थइ बरसण छयाणवइ पालठ कउ अघार । बालउ चक्रवति । धन धन हो राजा अचलेसर । धारउ जियउ, जिणी हइ पातिसाह सउ खांडउ लियउ । इसा अेक तइ पातिसाह रा कटक बघ अचलेसर ऊपरि छूटा, घाट का खड इथता खूटा, द्रह का पाणी नूटा । परबता सिरि पय लागा, दुधट घट भागा, मूर मूख नहीं खइ आगा ॥४॥

इसा अेक पातिसाह का कटक बघ आइ चुदइ कास नहि संप्राप्त हुवा मुकाम मुकाम का ठास बागा, तव जाइ अे गूडरवइ धवताहार दीसिवा लागा ।

त्रिपद बेना त्रिपद तालि राव राणा मुहड-भावत महुको राजा अचले सर-हइ परा छावइ छइ । राजा पराछायठ परोछइ नहीं । मू काहू कहइ ॥६॥

त्रिपद बला त्रिपद तालि राणा मुहड भावन सहू-की राजा अचलेसर सब रहइ भेग्य छइ ॥१॥

पानी नेट तउ त्यागी राइ-कउ जति निलक अग्य गडा राइ राजान कउ भरनार पादूणमी बाला कउ । अवर ते पाना महिराज भीमा भोज-यो का मूर घोर आनल पुरिय परमा पानमठ सो पातन धारा बाहूड कन्याणि सीह जठग सी कउन मी-जा माहि उरजन मुरजन महर महवन महिराज ॥२॥

गडा का माहि तउ राजा राजवर । सानिक्या माहि तउ सप्ततल । हाडा माहि तउ— एक मन । कछवाहा तउ रिणमल हुर । डाड माहि तउ नाथर नाम पउ । वामडा तउ इंगर काहूड सातल विरहर । मूघावत—तउ हागा ऊया जोया । इया-हेऊ त केता हका का नाव लीजइ ? छतीस ही बस छतीस । छतीस वग छतीस राजकुली । ३ ।

बाह्या माही तउ कवा कवण ? रिखि सारण, गुरू नराइन । बाण्या माहि तउ हरपति, सानउ, वीजउ बालउ । भाट माहि तउ गगगठ तिलाकसी रउ । पारण माहि मापउ साउठ नापउ । बारहूट तउ साक मऊ । ड इगाहूक स कता हेंका का नाम लीजइ । कनेस्ट बस गूब छतीस ही बस छतीस ही राजकुनि अक-अक हवइ साहूडइ मिली । ४ ।

त्रिपद तउ बाउ कहता वार सागइ । अरनी जन सहस चासीस कउ सपाट भाइ मनापि हुबउ । जिगा एह ? बाला बाली अचना प्रउडा, सोडस बरस की । राणा सतापी । आपना आपना दवर जठ भरनार-का पुरतारय देतनी फिर इ छइ । ५ ।

बड-महनि तउ बाई गुजना भोज की कांता अचल की जनता । पुन बहू तउ बाइ पुहगाई राणा मोरुन का पार धू । गोत सबासगी तउ बाई ऊनी । ६ ।

अइ अइ रे अछरापण गउ मागुरण तो बेनाक विमठ-वेक नीकउ दलियइ छइ । न जाइ कहगउ । अगणत अजान तोरणमया पना-पतताया । तावन मर कमग भावास पूडि-अइय पवनरि आवम्यउ । ७ ।

तइ छत्र पाट विशागक कउ राजा अचनम्बर चवर बुनतउ विष्ठउ अक नीकउ देतियइ, विरि मानन साम हमार विविबियइ । ८ ।

बाहरि माइ साइ ग हि विमाट बजिया गाहि कधि कुशन, सुवन माहि मान मरान, निवन माहि पाननाभारज, सधाम गाहि— रिण

भाजणा साहि जइतखम, प्रसुरिताण दूसरउ धलावदीन । किसइ अेक आरभि पारभि आइ टिनयउ छइ । १ ।

पगि पगि पउलि पउलि ह्मो की गज घटा । ती ऊपरि सात-सात सइ घनक घर सावठा । सात सात औलि पाइक की बइठी, सात सात आलि पाइक की उठी । खेडा उठण मुद फर फरी चूह चकि ठाइ ठाइ ठठरी । इसी अैक त्या पट उडि चत्र दिसि पढी तिण वाजित कइ तिनादि घर आकाण चइहडी । २ ।

बाप बाप हा । धारा आरभ पारभ लागि गड लेयणहार विना बाप बाप हो । धारा सत तज अहकार राइ दुग राखणहोर । ३ ।

इसी परित्या लडता लागता मरता मारता महा अस्टमी भारय जुध मातउ यउ, त्या दूसरी अस्टमी आइ सप्राप्ती हुइ । जत्र तत्र ग्रिद्ध मसाण करक की वाडि । अरधी अरधी दुगइ दल आबटया । अक घायल घुल घूम लड लडयडै जाणक मतवाल मिल । जाणकवसत रित केसू पूल्या । रात दिवस दीस समान । महरत दिया गडि डोव वाकिघा । तीन लाख भड आया । इसा, मीरी आख मुख भाकड जिसा । कर घातक बाली पारसी, बगतर तबा लिख जाणे आरसी । कथाणा कुजा जिम कुखरिया बीलख मेहा जिम आस रियच । नाली निहाव, गोला वहाव । गड सिलर उडी कायरा का जी तुडी । सूरु उधरग, जोध थो जग । गट्टिमल भुरज गगाहिड, चतुरगणि बका चगा चाहड । आडा अचल तथा अणियाला, पनर सट्स जोध पीचाला । सोह सग्राम का समरा, अणी-का भमरा । गाहडि का गाडा फीजा का साडा । चाचरती का बीन, नरा का नरीद । चौईस आखडी चालण सु तो राव ताल्हण । महाराज मागियो सो पायो, वाचा बघो सुरताण पातसाह आयो । रावजी खत्री धरम रो क्रिनारय कीब लका प्रमाण गडि गागुराण लीज । मीर मुगल साके आण धम धमो उठायो गडि प्रमाण मोरचो वणायो । धारा पनडा बखडा, उजडा पमाय तेल ते हाय पड्या । इग्यारै हजार नर खलहाण, हिंदू मुसममाण राव ताल्हण ह गड मीरच लड, ती सूरु सोहडा समबड । जो हू गड पोलया मरू ती चार जुगा लग उबरू । उधर सो उबरो मरे सो मरो । गड रवब अंधारो राव ताल्हण पधारो ।

### १ वचनका

तिण तालपूगाराव तल्हण । पीहर दूज, गडि घडक घूब का घडहड घूजे ।

### २ वचनरा

रण बका राव बीनियो सो निग्वाहो, असक सिर उणव वाह्यो । राजा

क माहृत रहै पडगाहियी रावत अहमद उठ तरवार तील, तरकस उबक उठ । दिन तीसरा वरस जायै । साम आण साम्हा सेलार, सपूता-को माण लाबा की धार । परमल पम पोहराव, घण दला दियण घाव । रग-रूप दासाया इद्राणिया रप आया । सूरामुहाया, मन माया रग राम सुणाया । तब जाय बालाछा राव रयण उरम नरवर नरैस, पीली बाण्ड पढवैस ।  
 लिठि बाण राख खत्री खडाधार, सूरमा प्यार । राजा को यसी विचारी, प्रा ती सरग की दासो, सुणी वान हमारी ।  
 बुध-वग वस वधार, साय सुघारे, तीन पसतारे । महाराज, सतिया पर मोहू कीज, आपणी कर सोज महाराजा गड रिणयमरि अनाबदो पातसाह अइया, राव हमीर बारह वरस विग्रह लड या । पातसाह परदल सूर, दिनमान गूट गड तूटा ।  
 बौनिया बगडो सूर साह, दूसरै विजराव, पण दला न्यिण घाव । बट्ना आपणी त्यागी, ओटिया तन अयो आग । जप जुहै कुलण जोगै, राव तात्हन अरप साग ।

— ४ —

जग जान जाण ऊगो क भाण । मुख च पमाण, महिराण मान । साक्षा मुनि करताव करन । अटिणार राण, दुजण माण, अरजन बाण । गुरी हनीम, भारव माम, नरपति नीम । सेनाधिपन हमीर मत, छातलह बिन । पाउन है पाण, चौदण सास पति राव चहुबाण ।

— १ —

सुरतान पा समारो, लड-को जुष भारय निवारी, पातसाह पीन पधारो मान रजपूत कर मारो ।

— ६ —

भाई सूर जार जाय निठि मोसाह ब्रह्मसाह पनसाह पतसाह सगा, मानदेग मगा । सोयो उठाये, मार पाए जोर पाए, सोहू जु आव ।

— ७ —

राजा अचनगर राज बगसी प्रति कहै ध-अन्ह छी बाला मोला राज दो गब बान मयाणा सब बाठ पयाणा, सब बाठ समरपोक ।  
 मगा भाई राजा जकाछी राजा अचलेसर प्रति कहै धै-अन्ह छी सबै बाण मयाणा, सबै बाठ मयाणा, सबै बाठ सामरपाक । सा मुन्दारा ही पर का रजपूत अर मुन्दारा ही पर का मानगणा मुन्दारा ही पर का चाह कावर । सो गो अनरप अनरप हुनवा मागी ॥१॥

अेकि घायल ही भीना राति दिवसि न मोना । रूधिर का प्रवाह नगी माहि मित्या । अवरत अनिवघ होवण लागउ ॥२॥

तितरई बोलतउ हुवउ छइ पाल्हणसी बाला रुउ । राजा अचलेसर प्रति कहइ छइ इसउ कायउ क्रिन ही रहियउ, मरण तउ छइ अेक वार, नाउ इसउ प्रब पाइषउ चार वार । इवइ यउ कीजइ, साहण बाहण अरथ भडार सभानिजइ, जलइ सू जउहार जालिजइ, जहा त्यउ साइइ निहरवालिअइ, अबधू पुरखारय कीनइ । अबधू पुरखारअ करता मरता जिअइ रूठिका पिअ, इणि विधि हुइअइ सइ विहउ ॥३॥

इतरई आसउदे नउ गागोरणउ कहि छइ सो नाहि हो ठाकुर । इसउ कीजइ, अब धाराला कधार खर छइ ते पुनरपि अरायजइ, घाज पाटा बाधिअइ दुहपि उठिजइ मूल उठइ चालिअइ, गजदल याजिहइ, पिगुण आलम साह सारिखउ चाहिअइ, नाहू आपुणपउ निरका हो सूडाविअइ ॥४॥

तितरई नायु डाड डूगर वामडी कहइ छइ इसउ नहा हो ठाकुरे । इसउ कीजइ गलइ सात सठ सालिग्राम तुलसी की माला घातिअइ, अचलेसर का आवासधइ लोहउउ करता-करता गोरी राजा का गड रहइ जाइअइ, जितरा जितरा पग दीजइ निनरा तितरा अस्वमघ ज्याग का फल सीजइ । इणि विधि जीवन बदिअइ तउ सूरज मडल भदिअइ ॥५॥

तितरई बालतउ ही हुवउ छइ राजा अचलेमवर कहइ छइ भाई हा । या तउ बात तम्हे कही छइ चालती चड बडा अम्हारइ मनि न हुई छइ अब ही घडी । या ती छइ भावना आस ज्यउ पाणउ त्यउ मरउ आस पास ॥६॥

तितरइ बात कहता वार लागइ । अस्त्री जन सहस आलीस कउ सघाट आइ सप्रास्ती हुइ छइ । बाली भाणी अबला प्रउढा साडस वारखी राणी खताणी बहुदा-बहदी ही आपणा अवर जठ भरतार या सत देखती फिरइ छइ ॥७॥

वउ महिती तउ बाईस सफलाइ भोज की काता अचल-की जनता । कुल बहू तउ बाई पहपाई राणा भोजकी की सार धू । गीत सबसाणी तउ बाई उणा । अे तउ कहीअइ टादुना आप-कारिजीआप सवारथी । बोल आपणपउ ही ज कियउक्रिन जाणइ आपणपउ ही ज बाल आणा आपणइ । पिण कधीर न जीपइ काव हइ अ तउ न जीपइ हम हइ । सिव पागती सम जुगती । सिव हास्यउ जीत्यउ समति । अ बडी बडाइ हइ पवण गति । जू अम्हू म्वा की गल मरा

माइ-बाप बीमरी, तानि पव ऊपरा अबइ यत अभिमान करण-सुत करी ।  
इत कउ सुत तेर अहकार देवता तिहाइइ इस अवल वीम हुवा छइ । न बे  
हमारउ सुतनेन अहकार देवइ, न हम हु ममारइ ॥५॥

(गन्ना बन्ना है) मानवी-को बहा रे वावनी हो । तेनीस कोडि देवता  
गहिन किरनाहार एउत तुहारइ करनिग नेपणहार । हउ तउ छउ चित्त  
वसु, नमे पाह मानउ थापना मन माहि अहित । अबइ तम्हइ मउ करउ ज्यउ  
ओगइ जागाइत इइ धरि जउहर हुवा, सीउतिरि रोनु-इ धरि जउहर हुवा,  
वाहि-इइ तिहाइइ रिणयम उरि रात्रा हमारदयउ-इ धरि जउहर हुवा । तिहु  
जउहरो जिवा वात जणी हुइ । हुवइ त्या तम्हइ पूरि करि दिलासउ पूरी हुसी  
हुवइ त्या पुनरवि त्या पुनरवि बाउडि उत्रानउ । हउ तउ छउ चित्त-वसु,  
निनि कारणउ छउ दु धितु, काइ मानउ थापना मन माहि अहितु ॥५॥

इत बाल रात्रा अचनमर कउ रात्र सोइ इण्यउ, हे माइ । मरण  
पासीसू

नितरइ आगला पारण-कउ इहउउ छई

त्रिम जावक मन जाह पून न हाइ पाण्ण ।

विग ताहीं हर ताह तालिमउ जाइलह रघना ॥१०॥

अबउत माइ मापण कउ पर, जकिइ गागुरणि पारणउ मोडिहर ।  
त्या ओइ पुण ता पछीया बाहिरउ जाम्पइ बीण्णइ हुवइ छइ ताहींहर ॥११॥

रात्रा तबनेमर कउ छउ यउ तउ बानियण करि विचारिउइ, ओइ  
पुसण तउ पुरिण इइ पछीयउ उकारिउइ । सू तउ तउ नीसरउ न दीसर  
नीसर । बाउइ त मर यहा न फुट । पामा पानन तउ पइ भासी । धारउ  
वहाँ रात्रा माकनयो पाणि मयउ यउ तउ न जणउ वहाँ हो रहणउ न  
जाणउ आवणउ किहीं बाव ह्य अहात यानयउ मयउ हो । उहाँ घोरउ ऊबर,  
इत पाहना पराद्याउ पराद्यउ तउ, रात्रा अचनेमर कइ भाई हो ।  
मकरा गया हुपारा ॥१२॥

पाण्ण माहै पराद्यावइ रणयण अबए साइ उदान । पाइ मागइ  
या बाई मरना पात्र को बीना अवन का जनेता, बुन-बटु तउ आसी बाई  
पराई रात्रा मोकर का माण पू । मरन हो परिवार ह्याण्णइ अपार,  
या हुपया परीय यउ पराद्यउ नती मकार ॥१३॥

पाण्णया हे । कण तउ मु-बन माधिरइ, बीम तउ मु-बीम  
ई विमइ । पाइ उरइ तउ रशाण्णइ या य ऊपरनी जणिउइ ॥१४॥

सू तउ कण क पुरिण मु-क तउ यउ तउ म कउ विम । पारउ  
विमउ पाइ तउ कण कन-इ न पारइ ॥१५॥

पातहणसी भला भला लोकां वा कस्या करण चार साभलया । आसू  
 पूछि अकमाल लियउ । बीजइ थभ वागडी-की जाई सबल ही प्रीथमी  
 प्रतपिज्यउ, यउ गढ लीजउ, हमारउ थइर सुरिताण गोरी राजा सउ  
 कीज्यउ । १६। ९

पातहणसी उठता ही सरयां का गजभार अवहरया पान्वरया था तठै  
 सही परया । बेकि भारया बेकि मोहया, जाणि करि जहया । १०

पातहणसी नीसरयउ निबलउ नीमाणि घाव बलयउ । पाछिनी चिंता  
 भागी, आगिली चिंता आगी । ११

## वर्ण रत्नाकर और उसका गद्य

।ज्योतिरीश्वर ठाकुर)

अथ सग्रीवर्णना

पूणिमाक पाठ अमृत पूरल अइसन मुट । द्यवत पकजका दल भ्रमर  
 बयिमल अइसन बापि काअरक कल्लाल अइसन म ह गयल कुने नम्मदाक  
 गलाका पूरल अइसन पोम्पा परवाक पल्लव अइसन अमर कनिअराक कर  
 अइसन नाक सोडुर मो नि लोगाएल अइसन दा न । वेतक साट अइसन बाह  
 पात्रिआनक पत्रव अइसन हाप छोनग छालत अइसन पयाघर काचिवरली  
 अइसन आगर (आगरक) वान उदमरु (= उदमरु ?) । १८ स । क माशा  
 अइसन देवण्ड काइहक का अइसन बापि विकणित स्पलपद्म अइसन चरण  
 सव्यगुण सपुण उपासम्म विनो मण्ण सगमणिमा बीराभ्यास छओ ये  
 गमीक र्म त कृपण । नायिकाक गामर घरीर अइसन ज्यामाजाति सखी  
 ॥ अर प्रकार ॥ सहजया चित्रनेया घताचा उव्वणी मनवा रम्भा नि  
 मातमा दववानी इय आठमा नायिका थयिकह सेहओ मन्दि होयि जकरे  
 क । पुनु कविमनि नायिका । कामपेवक नगर अइसन घरीर निधन्वक  
 पाठ अइसन मुट कइत सखरी अइसन लावन । यमुनाक तरग अइसन  
 मह मांकरक गलाका अइसन नाक माताक सा प अइसन कान अचकारमता  
 अइमनि विगनी पाकन वि । १९ अइसन अघर महर्ने दालिक कुन अइसन  
 दाम्ण कामपेवक पाग अइसन बाह निउहि (? नाहित) पद्म अ । १

(द्वितीय कल्लोल)

—अथ शायनरूपना—

मरु । २०

—अथ शायनरूपना—  
 १—हेमिणु—वर्णरत्नाकरे द्वितीय कल्लोल, पृष्ठ ६



दातक पया मानिकक पासि मर । २९ क । कतक गिरवा सोनाक पटा स्फटिक दण्डा पन्मरागक दण्डिया अहूठ हाथ दीघ अढाय हाथ फाण्ड सेजओट एक पालु तवा उपर कम्बल चारि सकलात पाच खरल दश पत्नी कोली स्निग्ध खटक घुयाक आह अइमन मझआतरि उनच एक पालु नतक माण्डल गण्डुआ एक सफुर विराल एक चारिह कोन वा घल चढोआ माडल ऊपर देल अछ बप्परगुण्डी त घालल अछ करक मुसरी एक ता चालइतें अछ तकरें सेहें भरइ अछ खण्ड एक छूरी एक चतु समक सीप एक वाजीकरण सम्भति लइ उपनीत कइलि अछ नायक योग्य पचफन समुक्त सूरभि शीतल श्वेत मोट विचित्रित ताम्बुल पात्र एक पानी भ गार एक सोनाक सूभभ्य रत्ने पचित जलमहित क्षारी एक सेजका समीप उपगति कइलि अछ मालती मनोदा लेवारि । २९ ख । करुण सूवणकेतकी चम्पक प्रभति अनेक सुरभि पूष्य से उपगत कएल अछ प्रतिष्ठित आप्त परम्परीण विश्वासयोग्य ये गोआर कोइरि कुलुवि रजक प्रभति जनदश नओ वति नियुक्त भेल अछ नाउ जनदुइ पएर सम्हाहन करहैं अछ परिचारिका दुइ पान कप्पुर लण हाथ देइते अछ योगनिद्रा घयन भेज अछ ॥<sup>१</sup>

### — अथ प्रभातवर्णना —

देवक आयतन पचग ७ बाजु वाज दण्ड पल धनो प्र(भा) तज्ञान क राओल गजराजें शब्द करु वायसहि कोलाहल करु नषत्र तिराहित भेज घाद म्लान मेलाह पूव दीश अरुलित भेल भमर पुष्पाहर्षे चलल वेदजजने वेद ध्वनि आरहल कुलस्त्री सलज्ज भेलि घट बाहि जलाशय आरहल व दीजनहि जयशब्द करु ओहदयितें ओह्ना अवलाक । ३० क । ल पथिकजने मार्गानुसंधान कएल नायकें इष्टदेवतास्मरण करु सुभास्थान करु ॥<sup>२</sup>

### — अथ मध्याह्नवर्णना —

शीघ्रस्य विशेषत ॥ दशओ दिश भगतृष्णा कबिलित भए गेलि छ किटाएल नियोगी अइसन आदित्य भए गेल छथि बसक अग्नि अइमनी उष्ण धुनि घरनी भए गेलि अछ दरिद्री क हृदय अइसन सतपित पृथ्वी भेलि अछ उमलस विषम अ (इ) सन जलाशये भए गेल छ पथिकहि पयसचार रथचि हलु रवापद हि छाया अश्रये कम् युवनिहि जलबेलि आन्ह ब्राह्मण मध्याह्न आरह दिनक दोषता रात्रिय सकोच पृथ्वी (क) कक्कता रोद्रक तीक्ष्णता घातक तृषा जलाशयक दारिद्रता दावानलक प्रचण्डता पशवतक सकोच अस

१—देखिय—घणरनाकरे, तृतीय कलसोल, पृष्ठ १४

२—देखिये—घणरनाकरे, तृतीय कलसोल, पृष्ठ १४

बर्ण रत्नाकर और उल्लास ]

मुष्टि तृया उर्मा वाह्य पवनक वाद्या चीनक उत्पन्ना । ३० ल । एवम्बिष  
 श्रीमन्मन्मन् मध्याह देपु । १

—अथ सध्यावर्णना —

शान्ति सध्यावर्णना विम्वारक अन्तःकृत गद्द अरगत मठमह भ्रमरन्दि  
 वद्म स्यत्रय जनि आकाश अयकार कलाभा मउ आन्तिरुं म तुहाएत अष  
 कार अद्य य मिनित मउ सन्तनर मउ कइउन पुमर सम्भार मोक सध्याव  
 षट्कक वायाहन नगनक उद्गम दीनक उद्योन धानियाहिह प्रणायाम नबोडाकइ  
 विरति प्रोडाक हरण पकज(क) साहोष भ्रमरर उगम पयिकर विद्याम  
 सध्यावर्णना तरण शीतिरु मध्यावर्णना नामायुक्त वाप मुत्रतिहिह उरुपुत्रा यु वर  
 नर अभिनाय भागीजनक द्वितीय भाजनक उद्यम नामायुक्त सध्यावर्णना  
 सध्यावर्णना प्रमनि गम्प्या दपु ॥ ३

— अथ चन्द्रमावर्णना —

निगाक नाइकाक सध्यावर्णना अद्यमन अरगत शान्ति (१) समग्न  
 अद्यमन चन्द्रमावर्णना प्रभा अद्यमन तारकाक मायनाह अद्यमन सध्यावर्णना गमना  
 कल्पाय अद्यमन कुमुदक प्राप अद्यमन परिभाषक विनक अद्यमन अर  
 कार क मुक्तिगत अद्यमन कल्पनरुद्रक मय अद्यमन सोक साधनक रत्नायन  
 अद्यमन एवम्बिष चन्द्र उचित मउअह ॥ पुत्रु कइसन ॥ दिग हवाव इतें कुमु  
 दाकर विरमवर्णने मानीनोव मानद्यपि पुत्रवर्णने अयकार निष्कर्षने विरहिणी  
 गतावर्णने जामिनी प्रकाशने अभिचारिका निष्कर्ष ॥ ३२ ल । इतें मायिनी  
 प्रकाशने एवम्बिष चन्द्रमा उचित मठमह ॥ पुत्रु कइसन ॥ हरवत्तमा  
 मनाहरा प्रभाषना मीहिना माहिना नातिता उतता भदा मदनरा हरिणा ह्य  
 मानिना तरणिना मन्मन्मन् प्रणिमा मन्मन्मन् एवम्बिष पाठना सध्याव  
 चाद्र उचित मउ ॥ ३

(तृतीय वत्सात्)

—अथ चन्द्रमावर्णना —

चन्द्रमावर्णना पुर कनकावर्णना मन्मन्मन् चतुरात्र अरगत य आकाश तें मन्मन्

- १—देविने—बन रत्नाकरे, तृतीय वत्सात्, पृष्ठ १५
- २—द्विने—बन रत्नाकरे, तृतीय वत्सात्, पृष्ठ १५
- ३—द्विने—बन रत्नाकरे, तृतीय वत्सात्, पृष्ठ १७

पाननायिका प्रतिनायिका सखी सैर धी परिचारिका दास दासी बघुल  
 निल्लज्ज आचारहीन निगति निराश्रय कामुककदि ये लोक तें सकुल सुगंध  
 सौरभ कुसुमकइ ग्रथना वस्तुक घूप धारीरकइ परिष्कार केशकइ समाजत्रंन  
 अलकारक उपनय दूतीक गतायत भजगक आ साप चित्रशालीकइ रचना शइ  
 याक विद्यास ताम्बुलक सचय अगारागक पेपण नायिकाक अलकार अर्थक ग्रहण  
 एव व्यावृत्त अनेक लम्पाक दे । ४०ख । पु अह पुनु कइसन क्तित्रिम लज्जा  
 कपट तारूप्य घनार्थे प्रेम लोभार्थे विनय कारणे सीभाग्य निम्भूक्त स्वाभिसिदूर  
 एव शीलवति विलासवति बलवन्ति कृणावति हृदयहारिणी यौवनश्री लाव  
 ष्यातना सर्वांगसुन्दरी मुत्तमण्डने वेही विमप्लनी परिहासपेमली सुन्दरी क  
 सा य जवे गगरजन देखथि तवे चारि पुरुषाय जाति लज्जा घन प्रतिष्ठा  
 उपेक्षथि यौवनावलोक्य कदप्यक आयतन प्राय सचक साम्पूण पुष्पमोदित  
 वेशपाश सम्भोगदेवता प्राय अनेक वेश्याहिका मध्य उत्तमा वसतसेना नामे  
 वेश्या देपु ।<sup>१</sup>

( चतुर्थ कल्लोल )

### अथ पेतकवर्णना

राजाका सवविस्तर भेला वनस सारज लावि हकार अ इति उपस्थित  
 भउ ककारी कार सुधावल कहल लइइ अत एककइ गल छारि अ रमनिसेवा  
 कइअब सारज लावल गोचरअक राजा उत्साह भउ अहेलाक साजन करण  
 रजाएस भउ तदनतर कइसन भउ भद्र भद्र मगमिश्र दयिनदण्ड मनिकदण्ड  
 बघल दीपवाल आठओ जाति ये हा थि अधिकइ से नद मुखकइ पलिवमलावि  
 मुसर समप्यि सारि सज्जु कइ महाउतहि आनि योधके उपगत कइअह तद  
 नतर कामोज वाणाउज वालिह । ४८ । क गाधार सँवर तिसिल कुलम  
 उपकुलज मैचक त्रैगत यवन आवाल साचिद्र नादवेय वाम्भतेय काश्मीर  
 शस्तायन पव्वतीय मिलज केक्य अवनाश तोपार करस चउवीशओ जाति जे  
 धोल से सर्वमाजनसयुक्त कइ पनानि पनानि असवारि हके बिलहज तदनतर  
 भमान जालष्य ( प )र मध्यदेग वदभ सौराष्ट आठओ जाति महिस साज  
 बाहिलि कहिल्य ओट लइ अगसरुअइ तदनतर कइसन भउ वास्तिर ताहाल  
 बालदुषट अघज वगवाल दिगर्मनील पाम्पिवाल एवम्बिष दशओ जाति । कुकुर  
 अनुग्रह से कइसनाह सिहक अइसने आका रे दुज्जन अइअ ( स )ने व्यापारे  
 मुसर अइसन ग्रहे दीघरे आगे निजं वेकइलेटे ? नाम्बे काने नहि मागुले एव



अनेक द्वापद तैं से-यमान । कएव मयूर चकोर तित्तिर कुटुम्बिनी कठहरिचा  
पीआ पेन सइचान सारिका गुकुंमही फनिआर केचा कपात काकिला प्रभति  
अनेक चटक तैं आकीर्ण । पुनु कइमन देव यश विद्यापर ग वन सिद्ध चामर  
विपुहय विन्नर अपसर राक्षस दत्य भूत वतान वनचर वनश्वेता प्रमृति अनेकक  
विश्रामभूत । गोण्ड पतगोण्ड दावर किरात बन्वर मिल्ल पुक्कस पचारि भेद  
मगर प्रभति अनेक स्लच्छ जातिक निवासस्थान पुनु कइमन बृष चत्वर गहन  
पवित्रवनार कमनीय अ धकारगय प्रवासमय यव अभ्यन्तर सिंहक नाद द्वाप  
दक शक्य च तकक छनि विन्नरक भीत विद्याघरक जालाप सवरक सघान या  
धक माया विषधर (क) व्यामोह औपधिव प्रभाव एवम्बिध भीषणता रमणी  
यता दुइ दगा दयु ॥<sup>१</sup>

(पचम कल्लोल)

### — अथ मल्लद्वयवर्णना —

ओइनिकइ बाहनाद धानि दह मुघाल भउअह व ध पइमुअह एव  
कर । ४५ ख । कि धाओ घालु अओके पइसि बाह डाकि फनाक भरेल भूमि  
भउअत के मते याके भरे विदान रापि मेलिन डाड उभरितह अवधा भउअह  
फणाके उछे भूमितृक लागि डोकवालावि भू (मि) भउ अओके माण्डके भरे  
विदान रापि पाटि सलिह ओक भूमि पात्रि रापि उभरि एव ठार भउअह तदा  
तर एव भूमि भउ अओके बिसि फना टारि छनको लाह अओके छलकी रापि  
पात्रि सलिह अओके पात्रि रापि उभरि ठाट भउअह फणाके भूमितृक लागि  
डोकरणादि भूमि भउअह तदनन्तर सगुम पालि घालतृक जाप तोलि पथ्वी  
घालु ॥<sup>२</sup>

### — अथ प्रेरणत्यवर्णना —

तरुण प्रौढ़ सम्बुष्ट गायन साम्प्रदाय वादी तालन मानकूल सुवेम  
प्रगल्भ विभति लक्ष्मि घाघर वछने कछनी परिहने पुणवि भूपित ये प्रेरण तैं  
प्रवेग दिह सका पछा आउरोच दुइ हाडवार दुइ पाठि पूरण पइमुअह मे पुनु  
कइमन प्रेरण चतुरस्र स्त्र । = यस्त्र । मिथ पहक चारुह प्रकारक ताल  
तक विचक्षण । निगवतिक चित्र चित्रर अतिविश्रतर छह सगव कुशन  
व्यपुटव्यपुट जटगिगा पुनक तनुट सम्पान ककाल कोकिला रव राजनाहन

१—वेदिए—यगरतनाकरे, पचम कल्लोल, पृष्ठ ४१ ।

२—वेदिए—यगरतनाकरे, पष्ठ कल्लोल, पृष्ठ ४५ ।

पायसीलाचन सचाप्रिय रग विद्यावर श्रीरग अगपति दप्यण रति नील  
निहृविक्रम मल्लिकामोद गारुडिक मररवनीवप्टाभरणादि य अनक तालक  
शुत्राम्याम टमन परिठगि ताण्डावनाचा उपमम कराइति नासनाचु तन्नन्तर  
एषिवाल घापन कुणपवाल दरगराट सिवित्तिरा सरणि विविपिटि लण्डमार  
। ६१ म । णि याग्गिनी केराव नरयविमम घापर पाचह अगे अपना उपर्णि  
रति पद्मु मयाप्टी पिठिउपनी ( विचिरुपनी ? ) अमग निहायी प्रभुरी  
अमगभररी सूचि समसूचि अचित गवन दना कचकरक प्रभति अनक गति  
बइस्वा पुर विश्राम भठ ॥<sup>१</sup>

(पठम् बत्तोत्त)

— अथ मरुत्स्यलवर्णना —

काष्ठ बप्टाय कुण बटार कास कएक गवीर वायूर विगार वसउति  
वगुहृणि वेगु धरिआइ घोरकट तनुया प्रमति अनक वदा तें आशीण फरह  
कएर राग सही पीपीति नठर हण्डार मूगक प्रमति जन्तु तें सेवित । पुनु  
बइसन देपु म मरुत्स्यल स नप्ति पुसुवी उतप्तसत्य निज्जीव वग । ६२ क ।  
मुमुपु तुण विलुप्त वाट कबकंग रेणु विस्तर देग निज्जसल सात गडमात्र नणे  
। पुनु बइसन । अघम्मक फन अइन(न) अशीतिरु विश्राम अइसन आनक  
मित्र अइसन परिश्रमक कणु अइसन तपाक अनक अइसन उदगव वाग्धव  
अइसन एषग्धिष दुसह दुरनीरीण निर्म्मार्नुप निवग सखदुमना यक  
मरुत्स्यल देग ॥<sup>२</sup>

— अथ समुद्रवर्णना —

वेसा बन्नाल तरगाहरी आवत छात्कार तें समविन । मगल गाह  
गाह मक कुम्मार निमि तिमिगिन समु गांत सांर जलहरी जलनाम  
जलमातुपाणि अनक जलजन्तु तें प्रभावह । मुक्ता प्रवाल वावट मग अट्टिचान्न  
रा । ६३ रा । णिवा उ मृपकाज गमार कावक वणुय रचटिक टोक्पणाणि  
अनेक रत तवर आकररपान टांगा वेनी वाहित जाग तवर म मवार तें  
रम्य आवागल गम्भीर अपयल विस्तर मुरम्य विदुग पवित्रतीर मर्दानक  
रिचति मर्धन्नुपमगुण समुद्र देपु ॥<sup>३</sup>

(गणम बत्तोत्त)

१—देविपे—वधरत्नाकरे, पठ- बत्तोत्त, पृष्ठ ५१

२—देविपे—वधरत्नाकरे, सप्तम बत्तोत्त, पृष्ठ ५५

३—देविपे—वधरत्नाकरे, सप्तम बत्तोत्त, पृष्ठ ५५

### अथ विवाहवर्णना

गोत्र मेलापक भउ पूगपत्रोपवीतदान निव्वह द्वादशक नवपचक ततीयेकादशक चतुद्दशक समसप्तक । ७३ क । पडष्टक प्रीतिपडष्टक इयि आठहका योनमध्य उत्तम योन निव्वह तदनंतर अर्धे पाद्य विष्टर आचमनीय मधुपचक निव्वह । तदनंतर गोत्र प्रव (र) क अनुगति अग्निस्था ने स दक्षिण क पादान निव्वह तदनंतर समाञ्जन सेधन उपलेपन उल्लेपण इ पचभूसस्कार अग्नि स्थापन कए आज्य वहि ब्रह्मासन समिध स्थाली । सस्त्रव पइता प्रणीता प्राक्षणी स्त्रुव दपद लाज समी सूप्य प्रभति ये द्र प से आसादि हलुअह आधार आज्यभाग प्रजापत्य रष्टिकृत प्रायश्चित्य राष्टभतादि होम निर्वहि इष्टागना लाज दिह करग्रहण अश्मारोहण प्रदक्षिण सप्तपदाक न निर्वहिका मध्य सवजनसाधारण यथोचित परिप्राप्त प्राजापत्य विवाह निव्वह सन शस्र सोन लइ सिदुरदान करू अलकार परिच्छन् निव्वह ॥<sup>१</sup>

### — अथ पुनर्भोजनवर्णना —

प्रहर रात्री भितर विआ । ७६ ख । रीक अवसर भेल चोरगाहि ठा निपल तदनन्तर अपूवव पीली एकठाम घरल सेवके पटा देल वधा रत्नमण्डित नायके देल बाणश्वर तमारू सुवणघटित रत्नरचित वीरा तदनन्तर अठ पहिर पानि कपूरक वामल सु दरी देल नायक पएर पखालल शुची भए वैस साह तदन तर कपूरमजरी क्षिरोदक लोहरी प्रभृति ओगर हैमन्तक पीदल बटइक नहनह छो सुगपापितह मोट तैतरिक पत्रप्राय अइसन सुग धे अधिक उप गत करू दविक अइसन देव तेरिआमहिंसि पाडो कम सात हाथ पायल आरा एपा तिन एक लाग तिन द्वि लागए नहि तीनिकाण्ठे वरहरवुरि महिसि बटगोपक दुहलि अघतैरह वपक वेटिआ नै ओटल चलाआल लेवारी पत्क ज्वाला अडो डोठी वाफा पीठी घने साले मधुरें ज्वालें हू । ७७ क । घ ओटल जाहि सुदरीक पाछु भए क दप्य टोकार पालल अछ गए भावाभाव विवर्जित य सुदरी से उप वीचलि दुध पौरल हृदयक सरिकण तिन हाथ चाकर निमुठ हाथ ठा गगाफणप्राय पौरइने मात्र एगारह आगुर वरली पललि काचे कपूरे सेसन देल तसन दधि घर(त)क चन्द्रमा पूणिमा प्राय अमतह जिन सादे दग्ने पवित्र दधि उपगत करू सुवणक चीरा दूधे तेआल चिउला उपर सुदरी दधि देल बटइते कात्ति टुटइते कपति पात्र देयिते धभति सुदरीक करकमल पल्लवप्राय सोनाक छीपें छेजोल गलप्राय दधि प्राय देल नायके पचप्रास कएल

बायो चमकि चमकीक विक्कणठाह त्रिहाहि षोवाद तारु छडाविम त्रिहा न  
 छाहए त्रिहा छडाविम तारु न छाहए देवचीनि साण्डक । ७७ स । सयोगे  
 नायका विवाद रयमल तदन तर मुगवा सडिची मरुआरो मधुकुपी माठ फेना  
 तिलवा प्रमृति पक्कानून दल दुग्घान नायके कएल चुरु से ल साण्डे हाप  
 रूपामोन अचीआल पत्तिका तन्तधावन कएल नउे हाप एपाआल तेरह गुणे  
 समुक्त पक्कनसहिने दधरुपाक सराजि कए पान देल नायके पान लल  
 मुत्तगुडि उषमन ॥<sup>१</sup>

( अष्टम कल्लोज )

( बग रत्नाकर से सामार उद्भूत स्फुट गद्या )

-----



## अथ विवाहवर्णना

गोत्र मेलापक भउ पूगपञ्चोपवीतदान निवह द्वादशक नवपचक तृतीयेकादशक चतुदशक समसप्तक । ७३ क । पडष्टक प्रीतिपडष्टक इयि आठहवा योनमध्य उत्तम योन निवह तदनतर अघ पाछ विष्टर आचमनीय मधुपवक निवह । तदन तर गोत्र प्रव (२) क अनुगति अग्निस्वाघा ने स दक्षिण क यादान निवह तदनतर समाज्जन सचन उपलेपन उल्लेषण इ पचभूमस्कार अग्नि स्थापन कए आज्य वहि ब्रह्मासन समिध स्याली । सस्त्रव पइता प्रणीता प्रोक्षणी स्त्रुव दपद लाज समी सून प्रभति ये द्रव्य से आसादि ह्लुअह आधार आज्यभाग प्रजापत्य खष्टिकृत प्रायश्चित्य राष्ट्रभताणि होम नि वाहि इष्टागना लाज दिह करग्रहण अश्मारोहण प्रन्निण सप्तपदाक न निवहका मध्य सवजनसाधारण यथोचित परिप्राप्त प्राजापत्य विवाह निवह सन शस्र सोन लइ सिदुरदान करू अलकार परिच्छद निवह ॥१

## — अथ पुनर्भोजनवर्णना —

प्रहर रात्री भितर बिआ । ७६ ख । रीक अवसर भेल चोरगाहि ठा निपल तदनन्तर अपूअव पीढी एवठाम घरल सेवकें पटा देल वधा रत्नमण्डित नायके देल बाणश्वर तमारू सुवणपटित रत्नरचित वीरा तदनन्तर अठ पहिर पानि कपूरक वासल सुदरी देल नायके पएर पखालल सुची भए वस साह तदन तर कपूरमजरी क्षिरोदक लोहरी प्रभति आगर हेमन्तक पीटल बटइक नहतह छा सुगपापितह मोट तैतरिक पत्रप्राय अइसन सुगधे अधिक उप गत करू दविक अइसन देव तेरिआमहिंसि पाडी कम सात हाथ पागल आरा एया दिन एक लाग तिन द्वि लागए नहि तीनिकाण्ठे वरहरबुरि महिसि बढगोपक दुहलि अघतैरह वपक वेटिआ नें ओटल चलाओल लेवारी पइक ज्वाला अडी डोठी वावा पाठी घने लाले मधुरें ज्वालें दू । ७७ क । घ ओटल जाहि सुदरीक पाछु भए व दण्य टोकार पालल अछ गए भावाभाव विवज्जित य सुदरी ते उप वीचलि दुध पौरल हृदयक सरिकण तिनि हाथ चाकर निमुठ हाथ ठाट गगाफणप्राय पौरइतें मात्र एगारह आगुर वरली पललि काचे कपूरे लेसन दल तैसन दधि शर(स)क चन्द्रमा पूर्णिमा प्राय अमत्तह जिन खादे दगने पवित्र दधि उपगत करू णक चौरा दूधे तेओल बिउला उपर सुदरी दधि देल बटइते वाति टुटइते कपति पात्र देयिते यभति सुदरीक करकमल पल्लवप्राय सोनाक छापें खेजोल शस्रप्राय दधि प्राय देल नायके पचप्रास कएल

नारी वल्लि वल्लिक विष्णुपुत्राह जिह्वाहि वीर्ये तारु द्वाविम विष्णु न  
 द्वाह्ण विष्णु द्वाविम तारु न द्वाहण देवकीनि माण्डव । ७७ स । संयोगे  
 नायका विद्या रयम तन्मत्तर मुग्धा तद्वित्री गरुशारी मधुपुरी माड फेना  
 तिलवा प्रमृति परशानुन देन दुग्धान नामने कएत गुरु ते स शाण्डे हाय  
 रूपामोन मबीमान पलिका उत्तपावन कएत नन हाप एपाभोन तैरह गुणे  
 सुमुक्त पञ्चमग्रहिण देवकपाक सरात्रि कए पाज दन नायके पान तेन  
 पुनगुडि उद्यमन ॥१

( अष्टम कल्लोन )

( बच रत्नाकर से सामार उद्भूत स्तुत पद्याणि )



पृथ्वीचन्द्र चरित्र  
या  
वाग्बिलास

कर्ता—भी मणिक्यचन्द्र मुरि  
पि० सपत् १४०८

— पृथ्वी चन्द्र चरित्र या वाग्विलास —  
 (माण्डिन्य चन्द्र सूरि स० १४७८)  
 (चुने हुए उत्कृष्ट मश)

— प्रथमोक्तास —

पुण्यलग्न पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि पुण्यलग्न मनवाँछित सिद्धि । पुण्यलग्न  
 तिमल बुद्धि । पुण्यलग्न घरि ऋद्धि वद्धि । पुण्यलग्न शरीर नीरोग, पुण्यलग्न  
 अमगुर भोग, पुण्यलग्न कुटुम्ब परिवारतणा सयोग । पुण्यलग्न पलाणीयइ  
 तुरग, पुण्यलग्न नवनवारग । पुण्यलग्न घरि गज घटा चालतां दीजइ चदन  
 छटा । पुण्यलग्न निरूपम रूप अलक्ष्य स्वरूप । पुण्यलग्न आनददायिनी मूर्ति  
 अद्भुत स्फूर्ति । पुण्यलग्न भला आहार । पुण्यलग्न सवत्र बाहुमान, घणु  
 किस्यु कहोयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एह पुण्य उपरि राजाधिराज पृथ्वीचन्द्रतणऊ कथासबध भणीयई, ता  
 ईणइ राजप्रमाण रत्नप्रभा पृथ्वीपीठि असख्याता द्वीप समुद्र बतइ । तीह  
 माहि पहिलठ जसु द्वीप लक्ष योजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि लवण समुद्र  
 द्विलक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेइ परइ घातकीखड टाप च्यारि लक्षयोजन  
 प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि कालोदधि समुद्र आठ लक्ष योजन प्रमाण जाणि  
 वउ । तेह परइ पुष्करवर द्वीप सोल लक्ष योजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि  
 पुष्करवर समुद्र बत्रीस लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । आगलि वारुणिद्वीप  
 चौमठ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि वारुणि समुद्र एक कोडि  
 २८ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । ईणि परि ठाण विभणा द्वीप समुद्र जाणिवउ ।  
 कवण कवण क्षार द्वीप क्षोर समुद्र, घृत द्वीप, घृत समुद्र, इक्षु द्वीप, इक्षु  
 समुद्र, नदीसर द्वीप, नदीसर समुद्र अरुण द्वीप अरुण समुद्र अरुणवरावभास  
 द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र, ईत्यादिक द्वीप समुद्र असख्यात । तेहमाहि पहिलु  
 जे जव द्वीप तेहनी नामिइ भेरु पवतजिसउ प्रदीप । तेहनइ दक्षिण उत्तरइ  
 सात क्षेत्र, चउद महानदी, छ वषधर प्रवत, बतइ ।



तीह माहि वपणीपइ मरहठठ देस । जीणइ देसि ग्राम । अत्यन्त अभिराम । भली नगर, जिहाँ न मागीयइ करा । दुग जिस्या हुई म्वग । घाय न नीपजई सामाय । आगर, सोननरूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी बहइ, सोवसुपइ निवहइ । इसिउ देश, पुण्यतणउ निवश, गरूड प्रशैश । तीणि देसि पइठाणपुर पाटण बनइ, जिहा अ घाय न वतइ । जीणइ नगरि कउसीस करी सदाकार पापलि पोठउ प्राकार, उदार प्रतोली द्वार । पातालमणि घरई, महाकायपाई समुद्र जेहनुभाई । जे लिइ कौलास पयत सिठउ वाद इस्या सवश देव तणा प्रासाद । करइ उल्लास, लक्षश्वरी कोटिध्वजतणा आवास । आनन्दइ मन, गरुड राजभवन । उपरि अणउ सुवणमय दण्ड, ध्वजपट लहलहइ प्रचण्ड । जेह पाठणमाहि अनेक आश्चय वापरइ, चउरासी चउहटा कलकलाट करइ । किस्मा ते चउरासी चउहटा एव चउरासी चउहटा जाणिवा ।

जीणइ नगरि अनक पामीयइ रत्न, जीहतणा कीजइ रत्न । किस्मा ते रत्न अश्वरत्न, गजेरत्न, गुरुपरत्न, स्त्रीरत्न, अनइ पन्मेराग, पुष्पराग, मानिक सिन्धुलीया, गरूडोदगार मणि मरकत, कवेनन, वज्र, बहूय, चन्द्र कात, सूयकात, जनकात, शिवकात, चन्द्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाय, अशोक, वीतशोक, अपराजित गगोदक मसारगत्न हस्तगम्भ पुलक, सीगधिक, सुभग, सीमाग्यकर, विपहर घतिकर, पुष्टिकर शशुहर अजन, उद्योतिरस, शुमरुचि, शूलमणि, अशुमालि, देवानद, रिष्टरत्न । कीटपखि, कसाउला, धूमराइ, गोमूत्र, गोमेद, लसणीया, नीला तणचर, खदगइ, ब्रजघार, पटकोण, कणी, चापढी पिराजा, प्रवाला, भौक्तिक रत्न करी दीसइ भरिया हाट, अनेक सुवणमय घाट, पिहली घाट, चालइ घोडा तणा घाट, लोकनइनही किसिउ उवाट । जिहा पुण्य विशाल तीसी पौसाल, जिहा छात्र पढइ चउसाल, तिसी ने साल जिहा अध्यायमतणी बात दढ, तिसा अनेक मड । जिहा लोक जिमई अपार, तिसा सूत्रकार । जिहा पाणी पियइ सव, तिसी पव । जिहा रमलि कीजइ स्वभावि, तिसी वावि । जिहा आन न हुआ तिसा बूजा । पद्मवन छडमडित प्रवर, महाकाय सरोवर । जिहा रगि कीजइ रावाडी, तिसी बाडी । जिहा सीतल फुरकइ पावन, तिसा पापलिया बन । इसु अयाय रहइ दाटण पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पइठाणपुर पाटण ।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचन्द्र इसिइ तामिइ राज्य प्रतिपालइ भूजबनि करी बहरी वग टालइ । जीणि राजा गौडदेशनउराउ गाविउ भोटनउ भाजिउ । पचालन राउ पालउ पुलइ, कानडादेशनउ कोठारि हलइ । द्वार समुन्तउ डोयण डायइ, बाबरउवारि बइठउ टगमग जोयइ । चोडनउ दडि चापिउ, कास्मीर नउ कापिउ । सोरठीयउ सेवइ, तुटि नकरउ देवइ । अग देमनउ अगि झोलगइ, जालपरनउ जीवितश्वकारणि रिगइ । धणु किस्सु





धितणा परिमया महमहइ छइ मातीतणी सिरि लहलहइ छइ, फूलपगर भरिया छइ कटीप्रमाण पायपीठ सम्यक्त पुरुष प्रमाण सुवर्णमय सिंहासन माडिउ छइ । सीणि सिंहासणि राजा बइठा । किसिउ राजा दीसइ छइ मस्तकि श्वेताल पत्र छइ, पासइ, डलइ चामर पवित्र, वाजइ विचित्र वादित्र, मस्तकि मुगुट फानि कुण्डल, हृदयि हाराद्धहार, महाउदार, धनदत्तणउ अवतार, रूपतणु भण्डार, धाराउ किसिउ कहीयइ जिसउ पृथ्वीलोकतणउ इद्र, जिसउ सोलकलासम्पूण चंद्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वी चंद्र, नरेद्र । तिसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ, प्रणाम नीपजाविउ । राजा साहू दष्टि दीधी, पुणि वीनतीकीधी । जी अयोध्यानगरी हूतउ, दूत तुम्हारइ द्वारातरि आविउ । मनितणइ उत्साहि जइ हइ आदेश । तु मेल्हउ माहि । हूउ राजा तणउ आदेश, इति कीधउ सभामाहि प्रवेश । राम रहइ कीधउ जूहार, अलकरिउ याम्य आसण उदार । राजादूत रहइ बहुमान कीधउ, कुशल प्रश्न कीवऊँ । आनंद उपनउ अत्यंत, हिवदूत वीनवइ काय विदोषवत । जिहा लीकरहइ नही किसीउ बलेश, जिहा नही वदरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ निवेश । अनेक ग्राम नगर सोनारूपातणा आगर, मनोहर छई कौसलादेस ।

तिहां छइ नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी धनकनक समृद्ध, पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध । अत्यंत रमणीय, सकललोक स्पृहणीय । पृथ्वीरूपिणी कामिनी रहइ तिलकायमान सव सौंदर्य निधान । लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास । अतुलदेव कुलि मंडित । परचक्रि अखंडित । सदासुठाकरि पालित, रमणीय राजमार्गि शोधित उत्तम प्रकार वेष्टित । सदाआश्चर्यतणउ निलय, धसुधावनिताबलय । निरूपमनागरिकतणउ ठाम । मनोभिराम । जनित दुजन शोभ, सज्जनोत्पादित शोभ । पुरुपरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधू कल्प लतारत्नाचल । जीणइ नगरीदेवगह, मेरुशिपरोपमात, धवलगह स्वर्गविमान समान । अनेक गवाडा, वेदिका, चउकी चित्रसाली, जाली, त्रिलसा, तोरण, धवलगह, भूमि गह, भाडागार, कोष्टागार, सत्रागार, गड, मड, मदिर, पडवा, पटसात, अथहटा, फडहटा, दडकलस, आमलसार, आचली बदरवाल, पञ्चवण, पताका दीपइ । सर्वोसर मन्नामर, माजणहरा, सप्तद्वारातर, प्रनोली, रायगण, घोडाहडि रूपाडउ, गुणणी रगमडप सभामडप समूहि करी मनोहर एवधिव आवाह । जेह नगरियाहि दोसी, बस्ती, राह बसाह पटखरीया, पटसूत्रिया, पजूरीआ बीजउरीआ बणसारा, भणसारा, मपारा, नवकार, भोजकर, भना सामा अनेक लोकधसइ । पपौचसइ व्यवसाईया व्यवसाय विषइ उल्लसइ । जेह नगर पालपीषा अनेकि कूया बाबि सरोवर नई नीक निरूपम उत्तम आब नीब, जांबू जबीर, बीजपूर प्रमुख वसावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान पीतणीआलि । प्रभात समइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे सिधिरि



भरिउ सरोवर, ऊपनउ आनदभउ । जोसी तेडी महोत्सवनणु मुद्रत लीघउ ,  
अभीष्ट जनरहइ तडउ कीघउ । इसिउ करता आविउ आसो मास, दिसि सप्र  
काश, कमलवन उल्लास, हसतणु विलास । कादव सूकइ नई निरगल पण  
सूकइ । विकसइ कुसुमकली, परमेश्वर सवन पूजता पूरइ मन तपो रली ।  
तिसिइ आसोसुदि पचमी तणइ दिवसि, मोटइ आडम्बरि नरेश्वर सरोवरतणी  
पालि पुहुता, घजपट दीसइ लहलहता ।

तिसिइ रत्नमजरी कुअरि राजारहइ वीनती करवी तिहा कुतिग जोइवा आवी ।  
जेहतणइ परिवारि, सपी अनेक प्रकारि कस्तूरिका कपूरिका, लीलावती, पद्मा  
वती, चन्द्रावती चन्द्रवली, चम्पू हसी सारसी, बगुलीअनेक मपी बतइ ।  
सीह सहित तिहा आवी पितारहइ प्रणाम नीपाजावी । उस्तगि बइठी, दि प  
रूप देवी रायतणइ मनि चिंता पइठी । एह योग्य कवणवर, कि नर, कि विद्याधर  
इसिउ चीतवतइ नरेश्वर, सरोवरभणी दुष्टि दीषी । तु निमल जलि, बइठा  
कमलि, हस करइ रमलि च्यारइ दिसि वासीइ परिमलि । कारउ कुरज कुल  
हस बलगलइ, तापललइ । मोर वासइ, सपनासइ । आडि पपीआ तरइ  
ब्राह्मण स्नान करइ । माहि क्षनपत्र सहस्रपण कमलवन, दीसता प्रीति पमा  
डइ मन । नेहुरी दडकलस झलहलइ, लहरि ऊञ्चनइ । प जोता राजहस एक  
सरोवर हूतउ ऊडी बइठउ राजातणइ हाथि निहालिउ नर नाथि । तू  
रूडउ रूपवत, रूलीयामणउ, सोहामणउ, वेतलावण्योपेत । जिसिउ लक्ष्मी  
देवता तणउचमर, जीणइ मोहीयइ अमर । कुदकुसुमस्तवकसमान, प्रधान ।  
पक्षिकुलावतस इसिउ हस । कुतिग करी कुमारी लीघउ, राजा दीघउ ।  
जतलइ जोअइ कुमरि तेतलइ हसि जिमणी पाप विस्तारी । कुमरि पापमाहि  
घाती, मलीपरि घाती । ऊपडिउ हसु तत्काल पडिउ ध्वसु । घममसतउ  
ऊठिउ राउ, कहइ घाउ घाउ बलिउ निसाणि घाउ । राउपायक पल  
भलिया । थोर सवि मिलिया । घाइ राणा, ब्राह्मण घर ऊत्राणा । दुवे नाठा,  
सर्वेत्रिवाडी त्राठा । बु ब पढी राउ घायउ हम पूठिइ जेतलइ हम घाई पइठउ  
कमलमाहि तेतलइ । जे वारू, ते पइठा सराबर माहितारू । समप्र सरोवर  
गाहिउ, पणि हस न साहिउ । निश्वास भेलिह राउ पाछउ बलिउ परिघउ  
परिवार मिलिउ । राणी ते घात जाणी, मूर्च्छा पामी सप्रणी, सचेत कीधी  
छाटी छाटी पाणी । राजा आवासी आया, कमातणु दु ख घरता छ मास  
अति क्रमाया ।

तिमिइ आविउ वगत, हूउ गीततणउ अत । दक्षिणदिसीतणउ शीतल  
बाउ घाइ विगसइ वणराइ ।

“सखे मल्ला मासडा पण थइसाह न तुल्ल ।

जे दवि दाया रूपडी तोह मापइ फूलन ॥”



आदेशदीघउ । जु को पृथ्वीपीठि राय मइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समय  
ईणि स्यातकि आणउ । तिवार पूठिइ स्वयवर मइप सुन धारपाहि  
करविवा मडाविउ हु तुम्हक हइ आविउ । हिव तुम्हे तिहा पउधारउ,  
ए यीतती अवधारउ, राजा सामदेवनणइ मनि आनख वधारउ ।

इसो वार्ता सांभला दूतगृहइ बहुमान देनु कटक सेइ राजा पृथ्वीचन्द्र  
स्वयवरमणी चलिउ, कटकमारि पातालि शेषनाग हालिउ । हाथ या गोडा  
मही घोडा । किस्वा ते हाथोया छइ सिंहलद्वीपतणा, जजनगरतणा, मद्रजातीक  
प्रचढ, उल्ललित मुडादढ, पवत समान, जनघरवान, चपलवान, मदजल  
शरता, आलि करता अनुनबल उछ खल गलगजित करता गजेन्द्र सांचरिया  
सरल तेजी सरवरिया । किस्वा ते हयाण, भयणा, कूषणा, कास्मीरा, ह्यठाणा  
पइठाणा, सरसइषा, सीघउरा, केकाइला, जाइला, उत्तरपथा, ताजा, तेजी,  
तोरका वाञ्छूला, कांबोजा, भाडेजा आरट्ट वाल्हेकज गांधार, चापेय, तैतिल,  
प्रगत, आजनेय, कांरेय, दरद सौबीर, क्षत्र-पुढ, प्रमाणशुद्ध चपल सरल,  
तरव उवासणा, परीक्षणा जायउ सहइ, बपूकारिया र०इ वाकी द्रठी समर  
पूठि, छोटे कोने सूषइ वानि, सइरनी ललवनाई नीछनी कलाई पूछतणी  
आमर्भ सूषला, ह्यमणी, सामनूई, वाकी तूडवापलि, बहुलि पेटवाली, मुटिह्या,  
कालूआ, किरडिया किहाडा, नीलडा सेराहा, कवि धूमरा, माकडा, दोरीया,  
बोरिया द्वादगावतव्यजन गुणि शोभित । शालि हाथ नास्त्र प्रणीतलक्षण  
लक्षित । ससइ घनइ साटि पइमइ, जुडइ दउडइ जिस्वा सुयतणा रय छूटा  
हुई तिस्वा अनेक तुरगम सांचरिया । तउ पायक पहरिया । किस्वा ते पायक  
सूरवीर विक्रा न दुर्गति यवपड क्षोधश्मइ वयरीरहइ आक्रमइ । पवन वेनि  
पुलइ योषस्यु जुडइ । सेल्लकुत तोमर ताकइ, वयरीरहइ हाकइ । बेलालामी,  
न मेलहइ स्वामा । नवनवा आयुध लिइ एर वार आकाश पडता घाउ दिइ ।  
किहाई न दासइ घाका, जीहलगइ हुइ जयपताका । ज घाइ पुलइ, ऊच्छलइ ।  
इस्वा पायकनी मिली कोडि जीह माहि नही पाठि । हिव रय विस्तरिया ।  
किस्वा ते रयचपल तुरग मजूता, सुखिइ सुभट चालइ माहि बडा सूता । छत्री  
से दहायुध भरिया, वायु वेग सांचरिया । घउहडाटि घरामडल घघोलइ, रज  
माहि रवि बिच रीलइ । ऊपरि घज लहलहइ जाणे देव सम्बधिषया विमान  
गहगहइ । घाटवाजइ वयरा भाजइ । मूर्तिवता जिस्वा मनोरथ, इस्वा अनेक  
सांचरिया रय । इणिपरि चतुरग दल चालता हूता नरेश्वररहइ वाटइ अनेक  
ग्राम नगर आवइ लोक नवनवा भेटणा नीवनजावइ ।

मागि जाता आवी एक अटवी, हिवते किसी परि वणविवि । जेहु अटवी  
माहि तमगल ताल हताल, मालूर, खरूर अजुन चदन चपक सकुल चकुल,



क्रैर दुर्दांत अपार । ए विविध वेमि हेरइ बोलाविउ बोल फेरइ । चडइ  
 माति अटालि, पइमइ परनालि पालि । वमाड उघाडइ, पुणि सुन कोई न  
 जगाडइ । अघोर निद्रा दिइ बाग बाटना आभरण लिइ । कगरी पायबधन  
 धाठइ पवत प्राय केबाण काडइ । चडिउ चार पवाउइ, राउना भडार फाउइ ।  
 दामइ दिरमि, पुणि रात्रिइ माध्यातृ कृत्ता त । कीणासीतउ न मानइ चोरी  
 बाधइउ बाढी जाइ दोरी । लो सांकल जाडही धडीन रहइ पोडहि । हाकिउ  
 ऊजाइ, हधिउ धाइ । करि कौधइ करालि, जाइ लाक लक्ष बिचालि । गढ  
 मंदिर फाडइ धाजि अडइ । इम्यु ए चौर गढनड परनालि पइसतउ ताघउ,  
 पाही बाधउ । दाते दीर प्रोडि नाठउ, तुम्हणइ शरणइ पइठउ । पुणि ए पापी  
 जोणि प्रजा सतापी । ए लुम्ह मथापउ अम्हणइ आपउ । नहो तु घाय प्रहार  
 दखिउ, प्राणिहि लेसिउ । अम्हारउ ठाकुर सपराण, तेह आगनि न कोई राय  
 नइ राणउ । सांसभउ ए गलत आगलि दीमइ पइमपुर नगर महाबिसयात ।  
 तिहा छइ गजा ममरकेतु अति सचेतु, बपरी प्रनि माहात केतु । जेतलइ तेउ  
 ए वात जाणिसिइ तेतलइ नाहरा अहकारतणउ अत आणिमिइ । एह कारणि  
 खोर बापी निर्दोष घाउ, पछइ तुम्हे भावइ तिहा जाउ । इमी वार्ता सांभली  
 गीठ ते जई नगरमाहि पइठा तु नाभिइ साम बइठा । जइ बीनविउ समरकनु राउ  
 दोषाडइ आपणउ घाउ । ममरकनु राजा कीधउ कोप, हुउ दलवइ निरोप ।  
 तत्काल सांमाहुउ दल, मित्रइ सुभट सबल । बाजइ प्रयाण भेरी बोहइ बपरी ।  
 पाट हस्ति मुडिउ तह ऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, सुरगम  
 पापरिया पायक सांचरिया । चतुरग दल निरनिउ, वारि एकठउ मिलिउ ।  
 दीसइ छत्र ध्वज ऊजलइ रज । ताउ तेह दूत मोकनिउ तिहा रही तीणें पृथ्वी  
 चद्र प्रतिइ हसा बान बही । तु पियारइ दक्षि पइम, अयाय करी इहा धयस ।  
 तउतु अजाण, अजी मानि स्वामो समरकेतु नणी आण नहीं तु प्रकटि प्राण ।  
 चार दय तुसनइ होमिइ, लाक कउतिग जो सिइ । इणइ वातइ दूत अप  
 मानावाहिरी काडी राजा पृथ्वीचद्रि दन सामविउ, ए आपणइ सब आविउ ।  
 चाली बउ दन ऊपडइ धुलि पडव । कोइ आग पर विभाग बूझवइ नहीं,  
 पिता पुत्र सूझइ तहो । न जाणिइ आपणं दल न जाणिइ पिरायु दल । न  
 जाणीमइ भूतल न जाणीय नभो मडन । न जाणीइ पूष न जाणीइ परिचम,  
 एकाकार हुउ । बिहू दल मिलते मानल वाकी जयडरु बाजी रणचडण काहली  
 बाजी रणतूर यात्रिया । न्यबननण अह घहाटि गण त्रिहुइ त्रिभुवन टलव  
 लिया सागा, भरानणे भूभूयाटि भुहि मिलिहि फाटी काहलनण बालाहले बापर  
 कमकया नीमाण तण निभानि उअ शवा ऊकविउ, ऐरावण ऊमडिउ दिगज





भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ । त्रिनि सइ साठि क्रियाणी चडाव्या, सप्तविध पकवान चडाव्या, सप्तविध पकवान चडाव्या, सप्तविध करवालिया, पोता सपाणि मरिया, देव समुद्र वायस पूजाव्या । पभिल भादल बाजिवा नागा, बायरि कालणि भा चेला लागि, गलेलाहेलाहेल करवा लागी । कूउपभउ ऊभउ कीघउ नागर ऊपाडिउ, सिठ ताडिउ, घामतीउ घामत । उलोचइवा लागु वाऊरीऊ तलि पइठउ, नोजामउ नालि बइठउ । आइला पइइ, सूकाणी मूवाण चालवइ, मालिभ वाटण जालवइ, सुरवर लहलय, वादिननादि समुद्र गाजी ह्या । हिय आगलि जानां हूता चिलीवाय वाया, आकाशि हुई मेघच्छाया । ऊडिउ पवन प्रथल, समुद्र हूउ उच्छ ह्वल । कल्लोल आकाशि ऊपइइ, बीहर्ता लोक रइइ डीया चइइ । बेला लामो, वस्तु वामो । एक हा देव । करइ, एक देवघ्यान घरइ । वाहण पवति आपलली मागउ, श्री पनिइ हाथि पाटीउ लागउ । तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ, त्रिहु दिवसि पारि आविउ । नव माहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ । आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइ माचविउ नमस्कारतणउ विवेक । जोगी कहिउ तूरहिइ एक देसु बीजउ तेइसु । मइ कहिउ दिइ, पछइ मुज निद्वन क हइ ज देपइ त लेहिइ । जोगी आवी रात्रिइ गढनणइ पालि पइसुरहिउ, तनारके ग्रहिउ । तइ राविउ, मोटउ उपगार दोपिउ ।

घासिइ केरउ आफरु, वासिइ केरुनेह ।

कयलकेरु मोलीउ, बिसत म लागइ येव ॥

माहरी लक्ष्मी इहसरीपो हुई । तउ कहीइ आभतणी छाह, कपुरिसतणी बाह आठनउ तूर नदीनु पूर, ठाकरनउ प्रसाद, माकडनउ विषद वहीनउम पञ्चीगणउ, सूपडानउ उठीगणउ दीवानु तेज, भात्रेईनु हैज, दासीनु स्नेइ, धारबवास तु मेह, घोडा मेहनउ त्रेह पहिसु आवइ छइ । लक्ष्मी तणउ त याय भीपनउ, हिय वैराग्य उपनउ । तापसदीक्षा लेसु हिय, जिम हुइ सवा सिव ।

हिय समरकेतु राजा ते वार्ता संभली, मनि वराग्य पाभिउ, राजा पृथ्वी व द्र प्रतिइ शिरु नामिउ । अनइ इसी वात कही, ताहरू पुष्य अद्भुत सही । तूर रहिइ कोइ अदष्ट देवता सानिध्य करइ, सब विध्न रहइ । ताहरू अद्भुत भाग्य, मुक्तनइ उपनु वराग्य । विमासी जोगु तउ असार ससार । जिसिउ गजदनु वान, जिसिउ सध्यानुराग, जिसिउ भमरीनु पाग, जिसिउ माकडनु वराउ, जिसिउ समुद्रनु कल्लोन जिसिउ धजनु अवल, जिसिउ ससार कवल,



तीर्थेविणसद् निपुन क्षेत्र, श्रीभंडो विणसद् कणकनुवाक, विषद् प्रयोगि विणसद् रसवती तपहपाक वर सालद् विणसद् शस्त्र, पयरो विणसद् वस्त्र, जिम कुवप सनि विणसद् सत्कर्म तिम जीवहिंसा विणगद् घम, राजा पृथ्वीचन्द्र समरकेतु धीपतिप्रतिद् कहिद् छद् सांभलु परमाथ हेव, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव अ दक न्याधम नद् श्री अरिहत देव, करउ सम्दुरुनी सेव, जिमटलद् पापकमतणा सेव ।

ए वार्ता साभली तहि विहरहिद् मिथ्यात्वतणी भ्राति ठली, जैन दीक्षा लवा हुद् गनि कलि । तेतलद् भाग्ययोगि दवसयोगिद् चारण श्रमण माहत्मा एक तिह् आधिउ, नेह सविहु तेहरहर प्रणाम नीपजाविउ । पगि लागी, दीक्षा मागी । तीणि दीधी, वाछिन वार्ता सीधी । तिवार पूठिद् तेहे ऋषोश्वरे राजा माकलावी विहार क्रम बीधु, नरेश्वरि आघउ पीयाणउ दीघउ । पहिलु पहुतु पदमपुरि, लोक ह्य पमाडिया भलीपरि । निहा परमहस प्रधान स्यापिउ, कणवारतु भार आपिउ । हिंव राजा पृथ्वीचन्द्र तेहनगर हुता सात पीयाण अयोध्या नगरि पहुता, स्वयवरि आविया दीठा राय सर्व गहगहता । राजा सामनेवि साम्हद् आवी महात्सवि करी माहिसिया भला उतारा दिया । तत हद् ऊतार भवन सेहलद्दर शिखरु-अतो-अग्नि-पते द्यापू कूप र, कम्तुरी मह्म यभ कुभीतणा मनोहर घाट, पठइ भाट । रत्नमई तोरण नद् मोतीसरि, अल कारिउ कुसुमतण प्रकरि । वादित्र वाजइ मागलिक्य गीत छानइ । आरीसा शलकह चालता स्त्रीना नेउर पलकइ । इसीइ मडपि राययोग्य माहया नामाकित सिंहासण मट मागण हारनइ पगि दीजइ वासण । तु राजा सोमनेव दूत साचरिया, ऊतारे फिरिया । राय सविहु योग्य आकारण नीपजा या, मोटे आडबरि समग्र नरेश्वर म० ढपमाहि आव्या । जस्या देवलोक सन्नधीया हुद् देव, तिस्या दिसद् भवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव । तिसिद् अवसरि राजा पृथ्वीचन्द्र जसिउ साक्षात हुद् इन्द्र । इसिउ आवी स्वयवरि सभामाहि बइठउ, भविहु शयनण मनि इसिउ सकाभाव हुइठउ । ज एउ सही नया वरिसिद्, अम्हाउ आविवउ कसिद् करिसिद् । राजा तणद् मस्तकि छत्र, अनइ चमर उलइ वित्र । राजा पृथ्वीचन्द्र देयी सकल लोक इसिउ विमासद् जिम अठार माहि ओकार मत्र माहि ह्रींकार, गघर्व माहि तुवरू, वक्षमाहि सुरतरू, सुगधवस्तुमाहि कपूर वस्त्रमाहि पाटण नठ चीर वीरमाहि सुद्रक वीर, गड माहि कालिजरू पाणि माहि वइरागुरू, द्वीपमाहि जंबुद्वीप, प्रदीपमाहि रत्न प्रदीप, पवतमाहि मरुभूषर, जीवन हेतुमाहि अलघर जिम हस्ति माहि ऐरावण मन्मन्श्वरमाहि शवण तुरगमाहि उच्च श्रवा तुरग, हरिण माहि कस्तूरीउ तुरग, घवस माहि वृषभ, प्रणस्यन्मिमाहि उत्तरवृम अचनेमाहि धूमडल,



तणइ कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ मुखि सरस्वती उल्लसइ । तूठउ दारिद्र्य हरइ,  
 दीठउ आनद करइ । रयागणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शत्रुमट भाजइ । इस्तु  
 भूपाल, एह तणइ कठि घाति वरमाल । अयवा ए जाइ वाण्यारसीनणउ राउ,  
 भजइ वयरीतणउ मडिवाउ । ए सराग दृष्टि अवलाकि, जेहनणउ प्रताप  
 प्रसिद्धउ त्रिहू लोकि । जहनणइ गजलि चालतइ हुनइ इन्द्रहइ सपक्षनवत  
 तणी शका नीरजइ । जेहतणइ तरल तुरगमि प्रपरतइ हुनइ वइरीरहइ प्रलय  
 कानाद्धन समुद्र कलोननगी शका नीरजइ । इविउ प्रवडवन अयइभुजवन  
 अरुन सकल, कमव द्रनामा नरेश्वर बरि, माहइ कहिउ करि । अयवा विदम  
 दैस कुडिन पुर नगरितणउ नरपनि निहानि जे विपमकानि, वहइ कर्णने  
 श्वरतणउ अवतार धनुषरपणइ हरइ अजुनतणउ कातिप्राभार, जेहतणइ  
 अतुल भडार, प्रबल कोठार, शूनार तणउ नहो पार करइ शत्रु सहार, करइ  
 भट्ट वइवार, मनाइवार, महाउदार, कठिवरमाल घातीए मकरध्वज राजा  
 अगी हरि भर्तार अयवा गौडदेश हसपुरपाण्यनुस्वामी सिहरषराजा जोइ, जोणि  
 दीठइ भाणइ होइ । जेह राजा सचधीयइ कुम्भककुम्भ कुमुं केतकी-कर्पूरधवलि  
 कीर्ति मडलि प्रनरतइ हुनइ नवी सठिठ स्यापी, त अजना चल पवठ रहइ  
 नइ काग । ईश्वरहइ नीलरुठ पणउ टालिउ, विष्णु हइ कृष्णपणउ पैसासिउ,  
 बलदेव बाधण, पणउ उजुआनिउ । ईणिपरि जोणि ब्रह्मातणि सुठिठ फरी,  
 तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी । इसिउ अलवेश्वर, सिंह रथ नरेश्वर,  
 करि तु आपणउ जोवितेश्वर । ईणि परि तीणइ प्रतीहारियइ राजाहरिकेतु  
 सिंहकतु मकररंतु धूमकतु पदपरथ वीय बाहु सुव्रणबाहु शखध्वज पद्मवेव  
 पदमानद क्षमकर पृथ्वीधर सुराहु रत्नागद, हेमाग हेमरथ मणिरथ मणिकोषर  
 रत्नशेखर, चन्द्रसोम सामप्रभ सूरतप्रभ प्रमुख नरेश्वर वणभ्या वषाण्या, पणि  
 रत्नमजरी कुमरि मनमाहि न आप्या ।

हिब आगसी दीठउ राजा पथवीच निहासिउ तेह तणउ मुपचन्द्र । ऊन  
 टिउ आनन्द सागर मनि चोतवइ एउ मही गुणतणउ आगरे । निदरइ श्रुती  
 हारीयइ कहिउ हे कुमरि साभलो पुरा-पुत्रइ सगर चक्रवर्ति हुउ विख्यात  
 वसुधातनि । जेह सगर चक्रवर्तितणइ चउरासी लाय हस्त जीहतणि गनि महा  
 प्रगल । चउरासी लाख तुरग उललना जित्या हुइ तुरग, चउरासी लाय रथ  
 सहिब्रिइ गुरग । चउरासी लाय नीसाण बाजइ वयरीना भडनाठ भाजइ ।  
 अरयत अमिराम धनूकोडि शाम । गाम घाडइ वाठना धनू कोडि साहण  
 मिलइ धनकोडि पायक कलकलइ । चक्र सहस्र सबाध, चक्र सहस्र अमात्य









बिहृतनां शील निर्मल । एकवपासइ सायण्य एक वपायाइ पुण्य । इसी परि  
 वपाणितु स्थानकि आविउ, विश्वन्हइ आनन्द उपाजाविउ । राजा सोमनेवि  
 सचिहू रायन्हइ आवजन कीधी । वृणट हइ घाडउ, कृणन्हइ हाथिउ कणन्हइ  
 आभरण वृणन्हइ पटफूल इणिपरि भनिन कीधी । राय सेने आपण आपण  
 मगरि पट्टता । राजा पृथ्वीचन्द्रन्हइ सामनेय नरेश्वर तणइचावासि निनु  
 नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिकुमर ।

अग्यत्ता प्रस्तावि राजा पृथ्वीचन्द्र अनहू राभा सोमनेव राजमभा एकण  
 बइठा । किसी ते राज सभा जीणि सभा पात्र नाचइ, विद्वान बइठा पुस्तर  
 वाचइ, माल मल्लविद्या भांडिवा माचइ, रागरा रायन्हइ रग रहाविवा राचइ,  
 सुहाबोला शुभ बोली स्वामी कहें पसाउ याचइ, कूडा सागइ चिरबाप  
 विवाद करी स्वयमेव पाचइ । इमी सभा, विशु नरेश्वरि करि वली बाधी प्रभा ।  
 नितिइ अवमरि, ह्य प्रसरि । पट्टनउ वनराल नीणि वीनविउ श्री सोमनेव  
 भूपाल स्वामिन । आपणइ उद्यानवनि श्री घमनाथ तीर्थकर देव पाउचारिया,  
 जीणि परमेश्वरी त्रिभुवन आनन्द वपाचिया । हिव अवमरि आविउ, श्री  
 धर्मनायतणउ कहिवउ, चरित्र महा पवित्र । इणि भरतना प्रवरगुणि करी  
 राशानी आपणइ आवसि मननणइ उल्हासि । पतयकि पउडो हुती विपट्टर  
 रात्रिसमइ निद्रभरि बतमान हूनीइ चक्र महास्वप्न दीठा । किस्या ते महास्वप्न  
 गज १ वपभ २ सिंह ३ सदमी ४ पुष्पमाला ५ स्य ६ चन्द्र ७ ज्वज ८ पूष  
 कलस ९ सरोवर १० समुद्र ११ विमान १२ रत्नशि १३, निधूम बश्वा  
 नर १४ । इह चतुदश महास्वप्नतणउ सामलउ जूजूउ वणन व्यक्तिकर ।  
 राणी प्रथम दीठउ गजद्र । कितिउ गजेद्र चतुनि विनयवत सत्तागप्रतिष्ठिता  
 गजद्र गुणि अधिष्ठिता विशाल कुमस्यल, विज्ञानकर्णावल उद्दुग्गुशाडड,  
 तेजिकरी प्रबड मदजलवासित कपोनमूल, भ्रमरकुल अनुकूल परित्यक्नसकल  
 दोष उत्पादितमकल जननमन सताप, प्रधान ऐरावता गज समान महाकाम,  
 वपवत प्राय भद्रजातीय अद्वितीय जह्नुणी गत प्रगस्ती, एवविध दठउ हुस्न ।  
 १ । तउ दीठउ वपभ । कि सिउ ते वपभ निजल घारा घर धवल, त्रिकसित  
 बाशकुमुपसमुज्जय, विशालबकुद चद किरण तणीपरिविशद सूक्ष्मसुकुमाल  
 गीमराजिविराजमान स्निग्धकाति त्रेदीप्यमान अभगश्यामनशूग, सुंदर समस्त  
 अंगीवांग, विगुढनत पक्किनामित प्रमुक्ष प्रदेश, चारु चरण सनिवेश प्रसन्न  
 वदन दुग्ध धीन धवल लोवन, त्रिनिउ जालनउ दुइ प्रामा, अथवा कलाम  
 पथारस्यु लिह वा इतिउ अत्यंत शुभ, दीठउ वपभ । २ । तउ राणीयइ दीठउ

मीह । विगिठते मीह ऋषिपिड पाहूर, अद्भुत प्रभाह्वर रक्षोत्पल सुकुमानलस,  
 गान्धुनागी आरधन जिग्हा जिमिउ हुइ असाहङ्गप्रवाल, विम्बोण बगर सटागामित  
 स्वय, वज्रसार गरीर अथ, प्रवरपावर प्रकाष्ठ कमलान रक्षोठ हीनपदादा  
 विह्वितवन्त, पराक्रमताउ सदन, पुच्छच्छ्यां पथ्यो आम्पालनउ, पीतलोचनि  
 भूमिवाति निहानतउ, भूरागणभुवनमिमान किरना विन्नरनेत्र गीपवतिवगत  
 अत्र, अथय अत्रित सल समल अपरात्रित अवीह एवविष दीठउ सीह । ३ ।  
 तु नीठी देवी सठमी ॥ ते विष -हृमवतपवतनपइ गिपदि, महाप्रसरि पद्मद्रह  
 माहि योजन प्रमाण विमल कमलि सनिविष्ट, अद्भमान वदन, कमल समान  
 लोचन नित्रिन मूय महय देनीप्यमान कुहन उगार प्रनवित्रहार अद्भुत शृगार,  
 गिगनेत्र अमनकलमि करी अमिपिच्यमान, पगतनि चापी रही नवनिधान  
 एवविष सजन कल्याणमात्र मनापगाश, शैवा सठमी दीठी । ४ । तन्नगर अयोध  
 चरन नाग पुनाग त्रियग पाहन मेवनी वाज जू, वेउन बउन श्री मन्गा मरुमा  
 मदार मधकुद कठरी प्रमुल वनरातातण श्रुगुमि निष्पन्न प्रमर भर भृङ्गमा  
 परिमल एव विष दीठउ माता पुगम । ५ । तउ दीठउ चद्रमा । त किमीउ  
 चद्रमा रात्रिनपइ समधि उगि करी सजन तापहरी, राहिनीरमण, यापिनी  
 त्रिविसेदवर, अद्भुतमय भूमि, उज्जवल एवम लोचि

आदि मन्त्रेण चन्द्र प्रामाण्येण द्वार ऊपदह पूजा चद्रह, पय मव वहद,  
 श्री मूय टणह चन्द्र प्रामाण्येण द्वार ऊपदह पूजा चद्रह, पय मव वहद,  
 मुनिवर पमवदा वहद, ताव वाग विगेय ताहइ मेव मल्हार गाइइ ।  
 माहि अनेक एतन्न गह्य पग मग पग वात्रिगा मूयवगी बामल विहमइ,  
 अचकार उम्हउइ, एवविष प्रगर किरण निहर दीठउ महस्तर । ७ । गउ  
 दीठउ चद्र । विमिउ ते चद्र इनासीइ वार्ई एव गहूउ प्रामा, प्रगरि  
 तेहृत्पइ सिपदि असाह मूयमय दठ, तेव करी अहुग, वनदमय कनग, भनी  
 भनी रानमय पाटमा, तिही नित्रमी रवानत ऊगामी, इमीपना, निष्पन्न  
 रक्कर तिही मीशगत ऋषि उमिउ मगमि गहृहृत्त, वाइ महलहुनु निमल  
 नीरक, गलीह दाठा चद्र । ८ । तउ दाठउ पुनकमम । विमिउ ते पुन  
 बालन-वमपटिन रानमय पदपापी श्यात्रि, कठि पुण्यमाना श्यात्रि माहि  
 अमलपूरिण पत्ररूप विराजमान प्रामुद्वय म मागिह मन्मी प्रबानपणइ  
 विरइ आमा दीठउ पुनकमम । ९ । गउ नीठउ मरीचक, वनगणउ परिचर  
 पालिनउ विरकर, देहरीनउ मवहृर पण नउभाकर अउही अउपही मगहृमइ,  
 वरइ वाइ महृर अचन्द्रइ उपरग ग मरीचक दठ कूद गर पइ, अमगावमनीर  
 दाठइ टहृर गरीर गारम कुल वरिन्न वनहृव वनमपइ तावना श्यात्र  
 टणइ रात्रहृय रमई, प्रमरमप्रइ पकोर पचरक-कूई, अमवेतिना वाटुई  
 मोर वागई मरं वाई, आदि पगादा मई, उद्भवा श्यात्र वरई, आश्रित

लोक नियम गारह, बदनन विचारहं, तद्वया विधि साधहं, अर्धमर्थेनमम  
 माराधह, धोतीयां पायरे क मण्डन डोपद, गितिर गुणनणउ, गहकाय जय  
 देवता तणउ नियास, देहरी दण्डनन आमनगारा शतरह, जयहारिणी कुन  
 य धूतणी मुपुर घटाकह, तदि कीनिरणभ दीसह डोपउ विहतर, यग घण्ड  
 जाल, मेम महारह गारह, माहि ओर शतरगत ह्यदराज गदा वाटिगभसूर्मेवदी  
 शोमवदी कमलवा विमान याम, देवता जिहो श्रीदा कामह, एवविध उदार,  
 वृताकार, अणतगार, महामाहार, दीठउ परमनमराणपडिउ शरोवर । १० ।  
 तउ दीठउ समुद्र कित्तउ ले समुद्र अर नजसु अणन वरुनोल वाटिमकुल माहि  
 मरम्य महामरस्य मत्र यक पाठीउ पीठुनि निमिलनणा कुल पठह, एवि  
 जण्डह, गहरिराजह, पाणो गाजह, दनिणावतनंचनणा पूण फिरह, माहि  
 ओर प्रदहण सोवरह । एव पूरी (य) ह मनि गगरीयह, माहण वाहणरहहं  
 एवि मिलतो आपगहं, मातीप्रवाला आगरयवा तीजह, किहो एवर मेपिर  
 पाणी श्रीजह, इगिउ आदमयेतणउ गिणन, वृष्टी गोठ हइ वलय, गुहिर गमीर,  
 आगगीर, समुद्र राणीयह दीठउ समुद्र । ११ । तउ दीठउ विमान । कित्तउ  
 धिगात गुणनेमयमिमि, मममयविच्छित्ति, प्रमस्यकवतिररो वाभमान, गगन  
 पदमीच्छह कुंडल समान, जेहमाहि ओर यव देवी रम । १२ । एवि यति  
 परिणल महक ह वज्रा मलकह मत्र गहगहह, एवविध विपुधवधुजगतीउ  
 रगात लेज पटनि निजितमानप्रगा लीठउ विमान । १३ । तउ दीठउ ररन  
 रावि । कित्तउ ले रराराशि ओर यण वडुमे मण्डनांत जयनांत पुणराग  
 पद्मराग मरगत वरतन यदभतावेरप्रम प्रभापाय असीव विनशोक अपरा  
 जित मगोदक मनारगहन ह्यमभे साहित्याग प्रमुनररा तणउ रावि, विरतिन  
 विवधप्रकाग, देवह राणी मानणह उल्लाति । १३ । तउ दीठउ निर्धम  
 नैववानर-वति भस्वगीय प्रदणिणावतैजगावा करी रमणीय मधुपुनधापरिणी  
 एवमान, कूर्धरतिग देवता गुणगमाग धूम रहित तेजगहित मागीनममभूव,  
 विदवानुदूव प्रवर एवविध लीठउ यैववानरा । १४ ।

ए चतुर्थेयग स्वयं देवी राणी गामी, निद्रागामी, मनि विमायिका लागी ।  
 मइ तो ए गऊरमुमिणां दीठां, बहूतणां कल कुतिह अत्यन्त भीठा तउ स्वामी  
 कइह पाइगु ति तउहेह पाइगु । इगिउ विमातो कइ न बोलाकी दागी, सरली  
 महिली मवि पासी राणी स्वयमेव पासी । ह्यमगति हरविहं ग-गहनी जिहो  
 रागा तिहो गहुनि, यवविजय करनी । रायच्छह निद्रा टांभी राजा तणह  
 भादेमि भरागति मइती । ररणावाणी सोभनी राजा फुटादिउ, राजो हरवि

प्रहित । विचार पृष्ठिद आपणद स्वस्मानवि जावी पत्यक बरिमी सरतीसहि  
 धमजाग रिवा नीपजावी । प्रभाणि नरेवदि सभागाहि स्वप्नपाठक पादि  
 विचार कदाविठ दान देठ निमित्तीवग जपरिद नीपजाविठ सम्पूर्णा दिवम  
 अनिप्रम हृते परमेवगतणठ हूठ अवनार देदता करद नय जग वार ।

पद्यमोत्साह

ताजाल मननपी रली, छप्पठ दिवहुमारिका मित्ती । तेहे मूनीबर्मतणी  
 समप्ररीति नीपजावी । तानपर सीपमार्तिव दवल कदद्ररहद वासनप्रवप  
 नीनठ । पहिनठ इद्रप्यह कोप ऊननठ । वय उमानिद नान दुष्टि  
 तिहासिठ । आमण प्रवप त्रिपि भीवन न । जाणित आगण छादि टररासग  
 वरी गूढे बह मस्तकि हाप जोडी मन्मन्व-कहित । इदि आमणि बहसी  
 हरिणगमेसी देव दोलाविठा तस्मान आविठ । इद्रनणह आसि मुषोया घटा  
 आरफासीनह दवलोकि जगाविठ । इद्रनगयाजन प्रमाणि पामकि विमान घडी  
 पवकवि परमदवर सठ मरू पवति आविठ । घठसठि इद्र मितिया देव समूह  
 हवि वसवतिया आठ इहस घठसठिद आगता वनसि वरी निमल त्रिपि भरी  
 स्तान व । घटा तानतर अदरगण १ वरा, विवरन २ वम्नमुगत ३, बाध  
 पूजा ४, पुष्पाराहण ५, मात्पारोहण ६, वार्गाहण ७, पुष्पाराहण ८, ध्वजा  
 राहण ९, आभरणाराहण १०, पुष्पग्रह ११, पुष्पप्रवर १२, अल्पमगतकरण  
 १३, पुष्पगणप १४, गीत १५, तूर १६, वाग्नि १७, गतारन पुजातणठ  
 करणीय सीधु ।

ताणि अवनारि गगन जात्रिया इगुणववागमेनि वात्रिय वात्रिया ववण  
 ववण परिद उद्रम ताण गगान गगीवाण वरमदीवीण परिवरियाण अद्रम  
 ठाण पववाण पदहाण अवनारिग्रमीण भभाण हावनाण तात्रियत्राण भरीण  
 गतिर व दुद्रम व आनियत्राण मुवाण मुशियाण नमामुलियाण परिग्र  
 ता वषणमाठी विसवीणाण आमादिग्रजाणा इवण नउनाण छिप्यताण  
 दुद्रुवणी विवाण वाहयत्राण वरहाण दिदिमवण उगात्रियत्राण  
 तमाणा ताणान वनास व मद्रियत्राण विविदविदरणा मुमरियाण  
 दुद्रुवाण वृमियत्राणी वगाण वगुण एव माण एवनाण पवाइरत्र ताण ।  
 ईणि दुलिण, मन्मन्विण, आमागविण परमवराह स्तानमह एव वरी  
 पुत्रवि पवकवि इद्र हादि देव माण तण ह गमादि मुविठ । वनीव वनाण  
 वगाण वि उनाणि वनीववादि मुवणरनना वष्टि वरी, वामेवराह  
 वियाण इवनाष्टि वर मण गवारी वगपुण वृदण धाण मदी इद्र  
 ववणदिद वगु ।

हिव प्रभाति दासी महिली० राउ वधाविउस्वामी । सुम्हार पुन  
 आविउ राजा वधामणी दीधी, नगरमाहि सव महोत्स तणी पद्धति विधी ।  
 अलकरिउ प्राकार, शृगारिया प्रतोल'द्वार । मव अतिमचतणी रचना हुई,  
 स्वर्गपरीतणि शोभालई । ध्वजपताका लहकइ, पुष्पपरिमल बहनइ । नाचइ  
 पात्र, राजाभवनि आवइ अक्षतपात्र । सोमाइ भणता आवइ छान लोक  
 अलकरइ आभरणि गात्र उत्सव करिया एहइ ज वात । तोणि वेला नऊइ  
 कोरण बाधीयइ तोरण । बाधीयइ वदरवाल, उत्सव विगाल । तुलभीउ  
 साहीयइ, मन उमाहीयइ । ईणि युक्ति ज म महोत्सव हुआ । नामकरणतणइ  
 अवसरि माता'हइ डाहुलइ घम बुद्धि हुई, एहमणी घम इसिउ नाम दीघउ,  
 परमेश्वरि रमलिकर ता बालपणु लीधउ योवनवमि राजक'यातणउ पाणिग्रहण  
 कीधउ । अठइ लाप वप कुमारपणउ पाली पचास वरस (१) राजप्रलदमी  
 पामी, पछइ विरवितयुषत हूउ स्वामी । नवविध लोकाति देवतणी विनती लगइ  
 सावत्सरिक दान दीधउ पछइ महात्सवि सहित चारिष दीधउ । विवरस  
 छ'मस्य काल अतिप्रमी, केवल लक्ष्मी पामी । विहार क्रम करइ  
 म'यलोक तारइ ।

हिवराजा पथ्वीच'द्र अन्इ सोमदेव उद्यान पाल करहुइ साढा वारलाख  
 सुवणदान देइ, समस्त परिवार साथिइ लेई । परमेश्वर नमस्करिवा सांचरिया,  
 सकललोक ऊलटिधरिया । पथ्वी रहइ अलक रण दीठउ स्वामीतणउ  
 समोसरण । किसिउ ते समग्रदेव आवइ समोसरण नीपजावइ । ता पहिलु  
 वायुकुमार देवता निर्मित सवसक वायु विस्तरइ ते तण काष्ठ कचवर हरइ  
 आकासि मेघ पटल पसरइ गघोदकि वटि करइ फूलपगर भरइ गरुअउ  
 रत्नमय पीठ बांधी ऊपरि जानु प्रमाण पर्ववर्षा कुसुल वरस' चिहु दिसि दिध्य  
 परिमल विलसइ । रत्नमय सुवणमय स्यमय भि'न प्रकार च्यारि प्रताली  
 द्वार । तिहा बिहु पासे उच्चैस्तर सुवणमय स्तभ, ऊपरि मणिमय धम ।  
 इ द्रघनुपमान पूरण रत्नमय तोरण । प्र'पक्ष जिसी मागलिभ्यनी पालि इसी  
 वदरवाति । अनेकि विचित्र, विस्तार छ'न । उ'गार स्वरूप कनक मय पूतली  
 तणा रूप । जेहै लिखित सिंह शानूल गज, इस्या निभल नीरज पचवप ध्वज ।  
 इस्या समोसरणविचालि, मणिबद्ध पीठि विगालि । सकल मागलिकय मुख्य  
 गरुअ अशोकवक्ष । जिसिउ प्रत्यक्ष करुणवृक्ष इसिउ चारगुण च'त्यवक्ष ।  
 तेहतणी छाया रत्नमय तिहामण जग तथ ध'हइ वइतण । तजिइ जाई मकीयइ  
 नीठ इसिउ रत्नमय पादपीठ । जिस्या विरहितन सहस्रपत्र तिस्या पत्र  
 छ'नातिछ'न । अमर, देव'हइ ढालइचमर । एउ अधरीशून आन्वियमडल तीष  
 कर लक्ष्मी कर्ण क'डल पूरइ झल कइ भा मडल । जेहतणइ दसनि मिथ्यात्व

पश्य तस्य दृष्टिः आगतिः समचक्र इत्यहं । दिव्यं दुःखमिवात्रह, तीणि  
निर्घोषं गगनांगि गात्रह, परतीपिङ्गलपुत्रं नभवाह मात्रह । सहस्रं प्रमात्र  
यात्रन इन्द्रं घत्र सहनहरं ध्रुवतया परिमत्तं महमहद्वं वादिनं तणी कोटिं द्रुह  
इह । मनुष्यं तणी कोटिं भावद, मनि रहरहद । इति इतिह समांतरनि  
परमेश्वर जगन्नेश्वर नवमुक्तावमिति पय स्यापमठ, पूषिगा उत्तर यावतु  
प्रभाद दशईं तिष्ठि व्यापत्रठं भविक साकपूहं पाप मूजावाउ, पूष तिष्ठितणह  
द्वारि पइस, पूर्वाभिमुग तिहोसिक् बइमह । पनुमुन हाइ भविक सपुगत्राई ।  
सपूरी, बार परिपत्तं पूरी मिप्यातवमान मूरी, पापपटन चूरी । सपसुत्वसापा  
रिणा समूतानुवारिणी मधुरवर्णी साम जानी, बरवान करह, धर्ममाम विस्तरह ।

द्वि वेड मरेखर मनि गृहणता, समोत्तरनि माटि पठता ।

श्री पमनाप हृद प्रणिता दठ, आगति बइटा मरेखर वेडा तिरारे  
रात्रा पुष्पापदि यावत्तं विगिपवत्तं इति सामप्य मरी देवमानव इन्द्रह  
जात्रप वापु था पमनापि तीपकरि उभेग पापउ । विष्णु ते—

सङ्गत्रय गतिणी स्वहृण, यसांसा सात्यादिनं धनुनि पोष्यभूयना धी ।  
पुत्रा पवित्रचरिता मुहुरापयोदा स्युपमभं पठु पानिपचेत्तिमानि ॥

अहो भय जीव । ए इत्यां पमनापत्र जातिनां । क्वण क्वण  
पहिनु तां उत्रिमहुनि अत्रार ए पमनां पत्र मार । जद जीव नापहुनि  
अत्रार ह, मु विनिउ पुत्र बरह । तह विवरमाहि सर माह, तनां कृप  
मीवनां कृप, वापात्रनां कृप । इतिरि तात्रा आहोडा बागुरा पाटकी  
मत्त पाचा बार वना बाहरा मय सुई पाकपरतापात्रनां पात्रनां कृत  
जातिनां । जीव गह कृप अत्रारा पाप बरा त्ररि जात्र, सापु मनुष्यत्रय  
निरपह पाह । दुनि जावत्तं उत्रिम कृप कृपम । कृप तत्र उत्रिम कृप ।

पनां तिष्ठगो गत्रगुणत प मात्रपुत्राह ।  
मिडिगह म गहन मुत्तिगुह गत्रगुत्राण ॥ २ ॥

या त प्रापि दहे त्रिणात्र अत्रार । पत्रात्र क्वण विपार—  
इत्यत्र क्वण मूषक, अत्रिण पात्रुमान गत्रहीय, व ग, क्व, पाचेता,  
बापरतापात्र गत्राण, मुरबत्राण, म मत्र भातीना, गात्र, बाग दाहिना,  
क्वत्त ह, क्वत्त ता क्वत्त ता हर त्र, क्वत्त त्रिगार पात्रुमान क्व, अत्राण,  
रात्राण दितिण, क्वत्त परम र मात्राण पात्र मद्रव निहुंम, मुहुरात्र,  
इह वत्र दाह पात्र मद्रुमान पात्र मत्रा वत्र वेदनात्र प्रमुग वा  
त्र तिना । अत्र दत्र दत्र दत्राणि ह क्वत्तित्त क्वत्तित्त क्वत्तित्त । त्रि  
क्वत्तित्त वात्र मत्राण त्रि पत्राणा इति दत्र दत्र । त्रिणी वे ह ति अ ति

सुश्रावकतण्ड कुलि जीववधु टालीयन्, जीवदया पालीयद् । मिथयात्वं परिहरी यद् सम्यक्त्वं अगोकरीयद् । पाणी भलीपरि गालीयद् इरण सोवा ज्वालीयद् । अथाणू न रापीड, अणतकाई न चापीड । चारी न बीजद् सुपात्रि दान दीजद्, सुतीर्थि वित्तवावी लाभ लीजद् । आनोजण लई पाप घाई ई परिग्रह प्रमाणि पुण्यवत होइय । उभयकाल सामायक त्रिकाल त्रैवपूजा समाचरीड, पुण्य भडार मरीड । बाबोस अभय बत्तीस अगत काय टालायद्, आठमि चऊसि पूनिम अमावास चउमासी पजूमठा सब पालीयद्, पुण्यमाग उजूआली यद् । इमु श्रावकतण्ड कुल तउ पामीयद् जइ पातइ पुण्य हुइ विपुल । उत्तिम कुलि लाघइ हूतइ गहस्प रहइ जय हुई कुकल वतणउ सयोग, तु हुई पुण्य तणउ विदोग । किसी ते कुकलत्र जे चालती कउमछि साची अलछि । आत्म कुटुबर्थी भजकि परचित्तरजति । बगट द्विपयि पण्डित अतिहि अनिष्ठ । बोलती छउउ ऊनारई स रीसई छोर मारई । जोमई जय छोलइ जलविइ असबद्ध बोलइ । बग ई करती गोन्हु गिनइ, परि वित्रोड करी बाहिरि मिलइ बोलावी विसइ हाय ऊठनइ । फूफूती सापिणी चालती चीनिणी । पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल । घणू किस्तिउ कहोयइजिसी मिरितणी ऊगटि, जिगिउ चान्तउ पतवणउ जिसी दाघज्वरतणी बहिनी, इसी सतापकारि तु सपजइ नारी, जउ जीव पापकर्म भारी । अनइ इसी सतापकारि तु सपजइ नारी जउ जीव पापकर्म भारी । अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पीतइ हुइ पुष्यपवित्र । किसी ते मुशाल सुलील सतापार सत्यवती विनयवती विवेशवती पुत्रवती बोलवती मुजाणि मधुर वाणि । देव गुरुतणइ विपइ भवन पुण्यतणइ विपइ वासवन सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु सपजइ जइ पातइ पुण्य । अनइ ज गरीरि सपजइ सालावत पणू त पुण्यतणउ प्रमाण । ज मधुरगति चालइ पाबुद्धि पालइ । सहजि विचक्षण शरीरि वत्तीस सक्षण अलिबुलदउजलदपामत केशपाश अष्टमी चद्रसमान मालस्यल कामदेव कौदडाकार भ्रूमग पूणनद्र रामान वान मडल, आदग तलसमान कपोलयुग मौक्तिक थणिगमाग दानमाल वक्षस्यत विगाल प्रचड भुजदड, इसी रूपलक्ष्मी अखड तु सपजइ जइ पतइ प्रचुर पुण्यपिड । अनइ जे द्रव्य ऊपात्रियातणइ कारिणि एकि लाभ देव त्वता धारा घइ मन्त्रविद्या सधरपणइ साधइ । राजसभा बुद्धिवत मणी वइतइ रणक्षत्रि पहिला पइमइ । यापारबला बेलवइ धतपणइ भता रणइ भोलवइ । जसमाग स्पतमाग आशरि आश्रमइ भूमडलि भूतावलि भमइ । जागा पूठिइ लामि सुवपा लागइ एकि माटा ठाकुर मागइ । एकि पाता पुता पथि चालइ । एकि हा द्य । मणी बदरामरि पाउ धालइ एकि हत पडइ उलग

करइ सागा ठाकुर क्रियाण बहुरइ, विराया कवित्त बहुरइ । नष्ट सहइ  
विपुल, पुनिनदमी तु पायइ जइ पोवइ इइ पुन्य परिपत परि मुयण मनिरल  
प्रधान प्रधान सुशतान गत्ररधनुरणमादिता जागिदा लक्ष्मी ठगा विनास  
मकल ।

द्विज ज मवजइ गत्युव, गृह पुन्यगत परित्र । एहइ तपइ एरि  
शुभुव हइ जे बासपाणि पालीइ साजाइ पनि जतइ योवनमरि जाइ, तेन  
सग मावात्रमाष्टी थाइ । इत्य अहम न गिगइ बटागा वचन निहणइ ।  
मावीनसाम्हा मीठुर बाण भगइ, अहमि एगहणइ । तमी मनीहुपाणि  
वरणइ, सुस्थानवि विनणइ विराइ भूमि मवइ थाइए वचनि एतसणइ,  
कहा वान बहनी साम्हा पविइ स्वायता परि भउइ, अरएइ हणइ पावरी  
अनणइ, धमवानी विपइ न यणइ । इया जम पुत्र अमवत अत्राप ए पावतू  
प्रमाण । अनइ जम पुत्र विभविजा विगारतत महजिइ सुत, छाभाभनत  
मुनप्रानि नविनवत गुणवत नवगुण धमवतइ विपइ तत्र, मुनुत पामिपइ  
ज, पावइ पुन्यगत भर ।



इसिउ उपपेय सामली, मननणी हली, परमेश्वर प्रतिइ विहु नरेद्वरी  
 वीनती कीधी वली है जगनाय । सदेह भाजिवानइ अमठ हाथ, तुल टाली  
 अपरि सदेह न भाजइ, सदेह भजन विरुद तूरहइ छाजइ । जहि बारणि  
 इसिउ कहीइ समुद्रि उलधीयह भारडि न मसइ, गजे द्र विडारीयइरतहि,  
 न ससइ । विपघराणा विप जोरविपइ गुरुडि, न कुवडइ, वृदासिहरतणा  
 फूल लीजइ तडवडइ, न दूवडइ । सप्राम भूमिइ मिडीयइ राउति न दयामण  
 मडारीतणा भार डालियइ अभीष्टि, न अलपामणइ । पवततणा टोल तानीयइ  
 नदी तणइ पूरि न वाहलइ रायतणइ मनि रगि रहावीयर मधुरस्वरि, न पाह  
 लइ । समुद्रि सेतुवध बाधीइ पवते, न काकरइ, इडगड तणी पोलि भाजिइयइ  
 गजेद्रि न धाकरइ । याचक जनना दरिद्र टालीयइ दातारि लसमीवति न आजमदु  
 सबल सदेह भाजीइ केवलीए न छद्मस्थि । तेइ कारणि तउ हे स्वामिन ।  
 अम्हारा सदेह टालि, एक सदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि, एक ऊपनउ अग्नी  
 ठामी, एक सप्रामि, एव स्वयवरि ए सवे सदेह अपहरि । इसी वीनती सामली  
 जग नाय कहइ छइ — अहो नरेद्वर ! सामलउ हिब कहीइ छइ पूवभव, जिसिउ  
 हूइ अनुभव । इणइ क्षेत्रि भूगुवच्छनामिइ नगर जिहा नमदा नदी प्रवर । प्रोड  
 धवलगह, लोक पुष्पविपइ सस्यह । जीणि नगरि महा घर मडलीक सेलह्य  
 वरधार टाउन डबइत भायाइत ऊडणाइत कनहकार छुरीवार गलीकार कुभभार  
 सीगहीया सावलीया जेटी यत्रवाहा मडारी कोठारी प्रभति राजलोक बसइ,  
 सवज भवन देपी मन उल्लसइ । जिहा पदम श्रीनाभि सरोवर महा मनोहर  
 जिहा राज्य पालइ द्रोणनामा नरेद्वर । तेहत "। सागर अनइ पूरण इसिइ  
 नामि पवित्रचरित्र, वि पुत्र । ते वेउ गमदा । माहि वेडी चडी मत्स्य विणा  
 सिवा प्रवतिया । तिसिइ अवसरि मत्स्य "। गा हउ जोइ तीह प्रतिइ बालिउ  
 रे डुराचारउ ! मकउउ पाप नरकि ल्या हुसिइ सताप नही घूउउ करनाइ  
 बिलाप जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ थाप । ए वात सामली वेड कुपर  
 भयभात हुवा । तिसिइ नदीनइ कठि एक दीठउ मुनीद्वर । तेहे वेडीतउ  
 कतरी नमस्कारिउ । वच्छइ । तुम्ह म्हारा पात्र, हू पालऊ चरिण  
 मुम्हें करउ अग्रत तीणइ । सोनइ किसिउ कीजइ जोगइ मुटइ वान ।  
 तीणइ उपाध्यायि किसिउ जीणइ चूवइ वान । निणइ टापुरि किसिउ कीणइ  
 जीणइ पामइ पगिपगि अपमान । तीणइ घम किमिउ कीज, जीणइ वाषइ  
 मिम्याव वान । तीणइ वयरइ किमिउ कीजइ जीणि पाछइ ऊपाइ  
 विपवाद । तीणि निनि किसिउ कीजइ जीणइ घाइ प्रमाइ । तीणिइ  
 धरि किसिउ कीजइ जहमाहि पूवइ पाप । तीणइ स्त्रीइ किमिउ  
 कीजइ जेहुनु निनु सताप । तीणइ रामतिइ किसिउ कीजइ जाणि वराई  
 पाप । वरग गुण भवन ध्यान, मत्स्यमुति गवतरी मुम्हें जगाडिवा



ते सवागसु दर रूपिइ पुरन्दर, विवेक बधुर राज्यधुरधर सत्यपुरुषसिधुर नामि महिधर प्रवद्धमान हुउ । राजापथ्वीचन्द्रपहइ राज्य बरता नवलाप नवाणवइ सहस्य नवसइ नवोत्तर वरस अतिक्रम्या । तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिहकैतु इसिइ नामिइ अकस्मात पुहिठानपुरि पाटणि ऊपरि घढी आविड, लोकपहइ आतक ऊपजाविउ । तत्काल घरपुरुषि पथ्वीचन्द्रप्यह जणाविउ । ते सामली राजा पथ्वीचन्द्र कोपिकरी करवाल ऊनालतु सामहिड, सुभटवग गहशहिउ । भभावाजी, मगनागण रहिउ गाजी । राजा आप जेतलइ हाधि चडिउ तेतलइ भनि विमासण पडिउ । छे रे आत्मन । हु बाह्य बइरी पूठिइ घाउ, अतूरगवहूरी पूठि न घाउ । कुण ए बुद्धि किसी शद्धि । जीतउ जोइयइ क्राध, जेहतउ चालइ विरोध । जीतु जाइयर मान, जहपहइ पर्वतनउ उपमान । जोति जोइयर माया । जेहुनु पामीयइ स्त्रीतणी काया । जीतु जोइयइ लोभ जेहुनु ससारि समयस्यैत्र । जीतु जोइयर काम, जेहुतु फडइ पुण्यतणउ ठाय । ईणिपरि नरेश्वरपहइ चीतवत्ता ऊनउ शुक्लध्यान, तत्काल उपनउ केवलज्ञान ॥ आठ्या देव, करइ सेव । बइरी समिउ, आवीन भिउ । वाजइ वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेप दीघड, राजश्रुपि लीघड हसजमलि, बइठउ स्वण कमलि । दिइ सपदेश, इउ पुण्य तणउ निवेश एके आदरिउ सम्यक्त्व, एवे आववत्व । एके समय, एके नियम । ईणिपरि लोकपहइ लाभ देई पृथ्वीमडलि विहारक्रम करी पथ्वीचन्द्रि राजा सिद्धि साम्राज लीघउ, तेहतणइ पुत्रि मझीघरि पुहिठानपुरि अल्लड प्रतापि राज्य कीधऊ । पृथ्वीचन्द्र नरेश्वर तणउ चरित्र सामली, मनतणी रली बलीबली विवेकवति पुण्यवत लाभ लेवउ । जिसइ पुण्यतणा प्रभावतउ सकल थो सघपहइ श्रय कल्याण श्रद्धि वद्धि परपरा सपजइ ।

धीमदचलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्य सूरिणा ।

पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्रस्य चरित्र चारु निमित्तम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ खो पृथ्वीचन्द्र चरित्र पुरुषपतन निमित्त रामखितम ।

मायमेहमही यावत् याच्चद्र दिवाकरो ।

याच्यमानो जनस्तावद प्रथोअय भुवि नदतात ॥

इति श्री अच ल गच्छे श्री माणिक्यसुन्दर सूरि वृते श्री पृथ्वीचन्द्र चरित्र वाग्बिलास पञ्चम उल्लास ।

## नमस्कार चालावबोध

( कथा— इमहम गणि, वि० सं० १५०० )

पश्चिमे सरन मगतामनत्र मूत्र, श्री त्रिन कासनवउ तार, इग्वार  
ग, अऊ पूरनउ उदार टर्न ग। रनत्र श्री पन परमष्टि महाभन नरवार—

नमा अरिहंता ॥१॥ नमो विद्या ॥२॥ नमा आगरिदाप ॥३॥  
नमा उवगतायाग ॥४॥ नमामाण गव्यसाहूग ॥५॥

नमा पष तम्मुकारा ६, गानसावणनागता ७ । मगमाप प मवर्ति  
पडम हवद मगत ॥८॥

एतत्त अथ—नमा अरिहंता—नमा हृदय । अरिहन् जह राग  
द्वय कषापादिक अनरग प्ररिधदहा हृदिपा एद । त श्री अरिहन् अउप्रीस  
अनिगप, पत्रोग वाग मुपे करा सहित समवनरति बहटा विद्वरमाण एह । तह

नमो उवज्जायण—नमोउपाध्याय जे द्वादशगीनउ सूत्र मुक्ताधीतगणइ, गिष्य हइ पढावइ । ते उपाध्यायहइ नमो नमस्कार हउ । उपाध्याय भरकतम गिनी पारि नीलवण घ्याईइ । एतलइ ४ पद ४ सपद हई ।

नमो साधु सवसाहण नमो लोक सवसाधुम्य लोके मनुष्य लोकमाहिं जे सवसाधु मोक्षमागसाधक जिनकल्पी प्रमुख घडे भेद ऋषीश्वर छइ । ते सवि हउहइ नमो नमस्कार हउ । महात्मा आसाढना मेघनी परिष्यामवण घ्याइइ । एतलउ ५ पद ५ सपद हई ।

एतलइ पात्रीसे अक्षरे श्री नउकार मूलमत्र कहोइ । हवइ आगलि चिह पदनी चूलिका माहि एह मूलमत्र प्रभाव कहइ छइ । एसो पच नमुवकारो स व पावणपासणा एव पच नमस्कार सव पापप्रणाशन । ए पाचह परमेष्ठिनउ नमस्कार ते किसिउ छइ स व पाव पच पाप तणउ प्रणागन फडणहार छइ । एतलइ छठउ अनइ सातमउ त्रिपद हुआ । बि सपद हई छठेठी सातमी । तथा मगलाण च सवेति पदम हवइ मगल—मगलाना च सर्वेणा प्रथम भवति मगलो सब मगलीक जे लोकीक दधि दूर्वा अमृत चन्नादिक लोकात्तर तप नियम सन्यासिक तेह सवि हउ मगलीकमाहि पदम—प्रथम कहीइपहितउ उत्व (प्टउ मगलीक ए श्री नउकार कहाइ । एतलइ आठमउ अनइ नवमउ बिहू पद हुआ बिहू पदे करो सपद एवजि आठमी हई । एक चूलिका माहि 'हवइ नइ स्थानकि "हाइ' इसिउहु कहता केनलाइ बन्नीशजि अक्षर मानइ पुण मुलि तेनीम अक्षर छइ ।

यह उक्त—महानिसीधसिद्धाते तहैव इवकारसपयपरिच्छिन्निति ' इग्यार पदि परिच्छिन्न कहतां सहित इत्य । इवकारसपय परिच्छिन्निति आलावप तिति सिअखर परिमाण । एसो पच नमुवकारो सवपावणपासणी । मगलाण च सवेति पदप हवइ मगला । इति चूल । । तेनेव कभण छठसत्तमठमदिनेसु आबिलाहि अहिजिज्जा ।

प्रवचन सारोद्धारण्यत्त ।

पंचपरमिद्धिमते पए २ सत सपया वमसो ।

पजत सत्तरमछरपरिमाणा अटटमी भणिआ । । गायादर । ।

यद्यपि 'हवइ नइ हाइ' कहना अथनउ विभेन काई छइ नही । तथापि 'हवइ' इमिउ त्रि कहिवउ । जेह मणी नमस्कार चूलिका प्रथमाहि कहिउ छइ जियाकइ कायविगवि ऊनइ चूलिका तणउ प्यान करोइ, तिवारइ बगलतत नमन रथो एकरउ अक्षर एकेरी पात्तुडीइ स्थापी तेनीममउ अक्षर मउरुणिआ' रथ पी घाप नगियउ । इन हाउ हीइ इतिय कहीइ तउ

धृतिवा वनोत त्रि अक्षर पट्टव\* वनोत अक्षर वनोत पासुडोद जि पूराइ,  
 मध्यकनिः टामी नि रहइ । इत्यान्वि अनक श्री सिद्धानयुक्ति छइ । मध्यस्थ  
 पगइ विचारिवउ । एव आनवकारमहामनि ९ पद ८ सप\*, ६८ अक्षर, तहमाहि  
 ७ मार ६१ मधु अक्षर । अ वि अक्षर एरठा मिला नुइ त मारी कहीइ  
 जे मकदम\* अक्षर त लछु हलुड इम सवत्र जाणिवउ । एहू था नत्रकारनाउ  
 महिमा इग कहि छ—

नयकार इकरव्यर वाँव फेडइ सा अवरण ।

पत्रास घ पएज सागरपनसपसमागर्ष । । १ ।।

जा गुणइ लक्ष्यमर्ग पूणइ जिहीइ जितनमुषवार ।

तिथपरनामनी-सो अथइ नदिय साँदाहो । । २ ।।

अट्टेय अट्टसम अट्टसहग अट्टसवउ अट्टकोडीउ ।

जा गुणइ भतिभुता सा पावइ सामरां ठाण । । ३ ।।

धीनत्रवार भावसहित विविद जायतां, श्री गुरुदत्त आ शाय अनइ  
 म, म्पानइ विगपिद कदा, इहनादि अनइ परनादि मकन वाँदित फव सायद  
 इह सादि ती देवता सामिप्य करइ । तिम थावकनी पुनिकापुद की पयइ ।  
 यत्रवया—

जइते घडउ जोअइ । देपय तउ माहि साप नहीं अनइ घडउ परिमलि महमह छइ । पछइ जाणित मही एहएहइ देवता साहाय्य करइ । हु ऊभाणित एहएहइ पाहूउ तीचवत्त । पछइ स्वजन वग मेली तेह आगलि आपणउ वतात कहि श्रीमतीएहइ समावइ । तेहना गुण ऊपरि अनुराग धरइ । एकवार अवसर देखी श्रीमती भगतार एहइ जिन घमना मम कहइ । कमविवरनइ यागिइ प्रतिबोध लासउ । महाभज्जानी जैन थावक हुउ । यावज्जीव घमपाली सुगतिइ पुहुतउ ॥ कथा एक ॥

बली नसकारनइ प्रभाविइ अनेक सकट भाजइ, तइमीनी प्राप्ति हई, जिम थावकना बटाएहइ हई । अन वथा

(२) रत्नपुर नगर, यशोभद्र श्रष्टि थावक तहनउ बटउ शिवकुमार महा यसनीउ । पिताइ घणउइ सीसावी जोइउ घम निमइ न क रइ । पिताइ प्राणकालि मान मागी कहिउ वच्छ । एतलउ करीज जिवाकइ लूएहइ गाठउ सकट आवइ तिवारइ ए नउकार जपेइ । दामिण्य लगइ माजिउ । पिता दिवगत हुउ । शिवकुमार सात यसन पोपतइ हुतइ लपमि सघती निगमी । निद्धन भणी किहाइ मान महत्व न लहइ । एकवार तेहएहइ त्रिदडीय मिलिउ । तेह आगलि प्राप्ति लगइ निद्धन पणनउ विपा द प्रकाशित । त्रिदडीउ कहइ जउ माहरउ कहिउ करी तनी लूएहइ लक्ष्मीइ करी घनप समान करउ । पछइ शिवकुमार पाखइ एक मतक अणावी काली चउदमिनी रात्रिइ मसाणनी भूमिकाइ गिओ । माडल माडिउ । मृतकहाथि ऊघाडउखग आली शिवकुमार एहइ कहिउ—लू एहना पगना तला उसहासि । आपणवइ भन्ननु जाप होम करइ छइ । निसिइ शिवकुमार सकटि पडिउ चीतवइ आहा सही ईणइ मायावीइ तिदडीइ एमघलु मुझ मारिवानउ उपाय माडिउ । मृतक अठोनइ सही मुजएहइ लगिबरी आहणिसिइ, तउ हिव किसिउ करउ । ईहा थकउ हवडा नसाइ ० नही । इम करता पितानउ ते वचन साभरिउ । एकाग्र हुइ नउकार जपवा लागउ त्रिदडीयाना भन्नइ बलिइ करी ते मतक गारेक सलसलीनई ऊठिवा लागउ । बली पाछउ ति पडिउ । त्रिदडीउ चीतवइ सही काइमाहरा जापमाहि दोदलउआ हुआ । बला विशेषइ एकाग्रपणइ करवा लागउ । मतक ऊठो बीजोइ वार बली निम जि पाछउ । तिवारइ त्रिदडीउ चमकीउ । शिवएहइ पूछइ काई मत्र तूएहइ ? शिव बहर ना । पुण हिंमामाहि नउकारनउ महिमा जाणित । बेनालनउ अधिगिठइ मतक ऊठिउ । गिबएहइ नउकारनइ प्रभाविइ करी पुहचा गकइ नही । पछइ रीसाविइ मनकि ऊपाही त्रिदडी जानु मस्तक मगि करी छत्रिउ । मन्नइ महिमाइ करी तत्काल त्रिदडीक फीटी सोनातगु पुरितउ हुउ । गिबकुमार च मरकरिउ । रात्रिमणी शिवारइ ते सह भुइ माहि

मागिण । प्रमाणि ददिउरि रात्राह्द सपनु व्नाउ वहीउ । रात्रानु आनेण  
 वामी म्हाणवपुवह सानानउ पुसठ गिउकुमरि आवणइ घणि आण्णा ।  
 सग्गी अगुण ह्दई । दीह्द पुराणा मम्भनइ काठा टाती बीजा सपला अगो  
 पाणउ सोनठ काना २ वावराइ । रावि वनो दिग्गानुमावि सिस्साइ त्रि  
 पाइ । पाहे त्रि विण्ड प्राइ आवन व्यवहारिउ यउ । अनुवमि गुरूनइ यागि  
 धननामय जागो आव सुवगमय प्रासाउ वरावी, माहि मणिमय प्रतिमा  
 महावा, धर्मदावी मुर्गनि पढुनु । कथा २ ।

वना यो त्वाहारनइ प्रमाणि भरणात सकटइ त्रिकु धुनीइ । निम  
 त्रिनणय धारक धुण्ड ।

अत्र कथा --



वे हाथ जोड़ी आगति अभु रहिउ । पगि लागी कहइ मूहपूइ घम बूतविउ,  
तू माहरइ गुर, काई वर मागि । थावक बहइ वर अवरदसि तु सब जीव  
मारिवा नियम विइ, अनइ स्थापकि जि बइठा दिन प्रति एक बीजउ अणी  
आपवउ । यतरइ मानिउ । थावक अखड पाछउ । राजापूइ वत्तात  
बहिउ । एककउ बाजोरो थावकरहइ व्यतरउ सदैव आणी आपइ । थावक  
अइ राजारहइ आल । राजा हृषिउ, नगरलोक हृषिउ । सहूको जिदास  
थावकनी प्रशसा करइ । घणु काल घम पाली सुगति पहुतु । कथा ३ पूरी ॥

ए इहलाकि नउकारना फल ऊपरि त्रिणि दण्टात कल्या । हवइ ।  
परलोक ऊपरि कहोइ छई ३ दण्टात । परलाकि नउकारनइ प्रभावि राज्य  
पदवी पामोइ । जिम चडविगल चोरइ पामो । अत्र कथा—

(४) बसतपुर नगर तिगुश्रु राजा भद्रा रानी । चडविगलनामइ चोर  
छइ । तीणइ चोरी करी करी नगरलोक ऊदेगिउ छइ । एकवार रायनु भडार  
फाडी राणीनु अमूलिक हार चारिउ । एक बलावती नामि तिहा गणिका छइ ।  
काई थाविका काई मिथ्यातिणि । तेहनइ विपइ ते चोर उलूषउ छइ । ते  
हार लेई गणिकापूइ आपिउ । इम करता मयण तेरगिनु पव आविउ छइ ।  
साली गणिका आपणा २ श्रुगार पहिरी उद्यान बनमाहि क्रीडा बरिवा गई  
बलावतीइ ते हार पहिरी तिहा आवी । तिहि राणीनी दासीए ते हार तेहनइ  
कठि दीठउ । ओलपिआ अइ राणीनइ कठिउ राणीई राजापूइ बहिउ राषाइ  
प्रतीहार पाइ बीवरावो चडविगल बलावतीना धरमाधिकु माही महावि-  
बनापूवक मूलिइ दिवराविउ बलावती ते बात जानी तिहा गई । चितवइ अहो माह  
रइ कीयइ एहरइअवस्था आसी तु आजतू एह पुष्य टाली बीजा सवपुरपनु नियम  
एरहइ सुवत्तार दिउ । पेनी नुकार लेई । छे २इ चोर मरी पहराणीनु वेत्तहूउ ।  
राजाइ महामोह लगइ महाताव करी पुरदन कुमार नाम दाषउ । बलावतीइ  
दीहाडानी तकनाक जाई जाणिउ सही ए तेह जि माहारा भरतार । राजानइ  
आवासि आवइ । पुरदर कुमार बालकपूइ हुलावइ । जिवारइ हदन करइ  
तिवारइ पाछिआ भवनइ नामि बालावइ इ है चउ पिपग । म राइ । बालक  
रहइ ते गाम साभला जानिस्मरण ऊपनु । नुकारनु महिमा जाणिउ । पिता  
निवगन हुआ पूठि पुरदर कुमार राजाहूउ । बलावतीउ उपगार जानी तेह  
ऊपरि अत्यंत स्नेहयिकु निरतर नुकाउनु स्मरण करइ । राज्य अनइ घमपाली  
सुगति पहुनु ॥ कथा चौथी ४ ॥

बनी परलोक नउकारनइ प्रभावि महापापनु करणहार मरी देवतानी  
उहइ । जिम बुडिकु चोरि पायो । अत्र कथा—

(५) मधुरा नगरी, शत्रुघ्न राजा । निहा हृदिक चोर सदैव चोरी करे । एकादि कहिएक व्यवहारी आनइ परि सात्र पाडी घणत मुत्रण चारित कृष्टव ने माणसे कसकव शीषत । तसारघाया साग सहित चोर साहित । बांधी प्रमात्रि राजा आगति आणयो । राजाइ नगर माहि चहुटइ करवी आन प्रचारि विडम्बना करावा ध्यापठठ भूलाइ दिवराविठ । नगरमाहि सघने उपापणा करावी—अहो सोका । इतित वल देपी बीजत का चारी म करमित । अनइ एहनि चिता कूजहि १ करिवी पछइ मूली कट्टि राउलाचर मूया । जि को एहनि चिता करइ ते आवी कहि—जो, जिम तेह रहइ एत जि दह कीजइ । ति सिइ वापटा तेचोर भइ तावटइ अनइ दपिराइ नीजलवा करी अनार गात्रा भूया लागी । जि का डुकटु जाइ तेहूहूह पाणी मागइ इ राजान भर करी कुणह पाणी वाइ नही । तिसिइ जिनान आवक आविठ । वेतइ पाणी मागिठ । आवकि कहिउ पाणी सई अलु ते—मइ तू नुसार गुनि । नमो हरिह्यान मुपि ऊचरि । आवकि परि जई करषटठ पाणी भरी जतलद न मो हरिह्यान कहितो जि चारना प्राण म्या । भरी महदिक यग देवना ठगनत । तिमि घरे जई जिनान अष्टिनु वतात राजा आगति कट्टि । राजाइ तेहरइ मूना घालवानु आषेण शीषत । राममि घटावी सीपइ भूमिका सई म्या । निदि सीपइ हुडिपणइ नवइ ऊपनइ अवधिगत प्रयुजित । आपणा गुरु जिनान आवकहइ तिगी अवम्या दाठी रीसाविठ । आधी नगर ऊपरि महाकाय पिता विदुषी, आरानि पाणी बानवा लागी अरे राजा अमात्य प्रमुप सर नरनार वावा । आधी श्वर्हा जि ईगइ पिताइ करा तुम्ह गविपुत्रइ बूध करत । ए दपानु समुद गु रावक माहर म्यामी आ जिनान धेळी, तेहूहूह

करतु उठमासु रहिउ छइ । तिहा एक पुलिदिउ नवी पुलिदी जाव्या । ऋषि  
 वादिउ । भद्रपणिनाम दपी ऋषि नुकार सीपवीनइ बहिउ - ए विकाल सदब  
 सावधान थई जपिवउ । पेला वेहू मदैव १५इ । ऋषि उठमासा पूठि गुरुबहलि  
 पठुता । कालि वेहू परोष हुआ । पुलिदानु जीव मरी जवूद्वीप मणि मदिरि  
 नगरि राजा मगाक राजा विन्ध्या राणी, तेहनइ गमि अवनरिउ । राणीइ  
 सीहनु स्वप्त लाघउ । अनुश्रमि पुत्रजम हुउ । महोत्सव करी राजसिहनाम  
 दीउउ । मउण्ड २ बहुतरि कला पारीण हुउ , रूप लावण्य सीभाग्यनउ  
 निधान योवन वय प्राप्त हुउ । मतिसागर मुहतानउ वेउ सुमति कुमार । तेह  
 सिउ राजसिहनइ मिभाई छइ । एक वार राजसिंह कुमार मिश्रसहित वनमाहि  
 तुरगमती क्रीडा करिवा मिउ घणी वेला तुरगम वेलाकी धाकु एक आबानी  
 छायाइ विसमइ छाइ तिसइ एक बटवाहू तिहा मिलिउ । कूमरि पूछिउ - कहू  
 किहा यकी आया किहा जासिउ ? किहाइ काई आश्चर्य दीठउ हूइ ते कहू  
 पेलइ कहई - पदमपुर नगर यकु हू आविउ । मकलनीधनु ठाकुर श्री शत्रुजय  
 साधनी यात्रा करया जाउ छउ । हबइ आश्चर्यनी यात सामलि । तेणइ  
 पदमपुरि नगरि पदमराजा हसी राणी तेह तणइ रत्नवती नामि बेटी चउसठि  
 बलाकुशल मटासपपात्र योवनवय प्राप्त हूई । पितानि मनि वरचिता ऊपनी ।  
 अमात्यपहइ करइ - एह कयापहइ गुणे की अनुरूप योग्यवर किहा यिकु  
 मिलइइ । एकवार राजा आगलि एक गटवउ पुलिदानइ यपि नाधतु देपी  
 कयापहइ भूछा आवी जातिस्मरणउ ऊपनु । आपुणु पाछिलु भव पुलिदानु  
 दीठउ । पूव भयनी मामी रत्नवती प्रति अतिसानुरागयिकु बली पूछइ - कहू  
 आधु किसिउ हुउ ? बटवाहू कहइ पछइ ते कयातणी प्रतिज्ञानी यात देसि  
 विदेसि विस्तरि । अनेक राजाना कुमार ते कया परिणवानइ सोमइ आवी २  
 कूडु जि कहइ । अहू पाछिलइ भवि पुलिदा हुना , पछइ कया कहई  
 अहा जू तुम्हें पुलिद हुना तु कह उतम्हें सिउ पुण्य बीघउ हूतउ जेणइ करी  
 एउठी राजपरिद्धि लाघी ? पेला त वात १ जाणइ कूडा, पडिशा ॥ तहीअ  
 लगइ ते कया पूरुगद्विपिणी घई । ए पुरुष सघलाइ कूडा बोना । जि हूइ तेह  
 मणी एह पुरुष तणु मुछ नही जाउ । इंसिउ चीतवई स्त्रीइजिना ब दमाहि  
 यिकी रहइ । तु अहा राजकुमार । पुरुषमाहि तु रत्न छइ अनइ स्त्रीमाहि तु  
 ते कया रत्न । तुम्हें विहूहइ अइ योग मिलइ तु अगार जउतु हूइ । इंसिउ  
 रामती कुमार हपिउ आनदिउ, सब अगमन आभरण ऊनारी तहपहइ आपी  
 यियजी आपणइ परि आविउ । रत्नवतीपहइ मिलवाना ऊपाय चितवइ । सिइ  
 मगर सोने मिली राजापहइ गवानि बीवइ - स्वामी । अल किमकरू ?  
 ए राजसिंह कुमार गगरमाहि जीणइ २ सेरीइ सावरइ तिहा २ आपणा  
 मासवइ रोष्यता भूकी भूकीनइ सीभाग्यना व्यामोहिधा रचीना ब द गमे २



कहिएक वरनउ पाणिग्रहण करइ का नही । पछइ रत्नवती कहइ जो, नर भरतार ता मननी रतिनइ वाजिइ कीगइ । ते तु तुझ साहइ णीऊती मझहइ ऊपजइ छइ तु बीजइ कुणहि माहरइ काज काई नही तिवारह कुमार स्त्री पूछइ ते भवातरनु पुलिदड वर मिन खोलपाइ । रत्नवती कहइ जि की ले भवनु कीप उ पुष्य माहरू जाणजइ ते सही माहरू पूर्व भवनु पति । तिवारइ कुमार स्त्री कहई एतकु जाणउ पाछिलइ भवि दमसार ऋषीस्वर नुकार तूहहइ सीपविठ हूतु ते स्मरवानइ प्रभाषि तू मरी रायनी बटी हई । ते सामलीनइ चमत्कारी रत्नवती आपणी सपी चद्रलेपा प्रति कहई ए किम ए ए बात जाणइ ? चद्रलेपा कहइ स्वामिनी जोइता एहनी गति, वचन चेषटा सह पुरुषन । सरिपु दीसइ छइ । अनइ एह देवी तुजहइ रति ऊपजइ । सीणइ इतिउ जाणयिए, सही ए ताहरू पूषभवनु भरतार । किसिइ मारणि पुरुषनें स्वरूप आच्छादी स्त्रीनइ रूपि धापणपु देपाउइ छइ । तिसइ चद्रलेपा कुमार स्त्री प्रति कहइ स्वामी हवे प्रसाद करी आपणउ स्वभावनु रूप देषा डउ । तिसइ ऊषघोनइ योगइ वेह पुरुषनइ रूपि यिआ । रूप देषी सहू को हपिया । पछइ चद्रलेपा कहइ स्वामी । जिम रूप प्रकाखिउ तिम गान कुला दिक प्रकासउ । तिवारइ मिनइ कुमारतणउ षेस कुल गौत्र बटेवाहूना वचन नउ वतात सपूण कहिउ । राजाइ बात जाणि हपिधिकइ शुभलग्न मोट महो रसवे रत्नवतीन पाणिग्रहण कराबिउ । हस्ति मोचनि अनेक गजेन्द्र तुरगम अट राज्य कीषउ । राजसिंह कुमार रत्नवती सहित नाना प्रकार भोगबइ छइ । घणउ काल । एक्वार पिनाइ मगांकरआगाइ प्रतिहार हाथिलेप मोक लिनइ कहाबिउ कच्छ । हिव अहमे बड हूमा । राज्य छाहोदीक्षा लषानी जरकठा कर छउ । घणा काल लगह ताहरा दगननी उत्कठा छइ । तु बहिलु आहा आविजे । पछइ राजसिंह कुमार गुपराणइ मोलापी रत्नवती सहिइ चतुरग कुटक् परिवार मणि मंदिर नमरमणी चालिउ । अनुक्रमि पशुपु । पिताहइ प्रणाम कीषउ । सब कुटम्भ परिवार हपिया । राजा चितबइ अष कुमारप्यह राज्य देइ हू आपणू धमकाय करउ । इसिइ आवी उद्यानवासिकि बीन बिउ स्वामी । उद्यानमाहि श्री गुणुनागर सूरिगुर पाउधारिया । राजा अति हबिउ । राजसिंह कुमार प्रति राज्य स्थापी साते अत्र विश्वेशी सपरिवारु गुरुकहलि गिठ । दीक्षा सेई दुष्कर तप करा देवताकि पहुनु । राजसिंह राजाइ रत्नवती राणी सहित मध्यतवपूल वार अत पडिबन्धा । निष्कटक राज्य अनइ धावक धम पालइ छइ । नुकारनइ प्रभाषि मोग बयरी राजा आज्ञा मनाय्या । गाम गाम जिनप्रसाद कराय्या । पृथ्वी जिममडिन कराबी । विरकाल राज्यवाली एक्कर भोगाऊंत विषइ हतइ आपणा पुन प्रतापतिहू कुमाराहइ राज्य स्थापना कीषा आपणइ रत्नवती राणा सहित श्रीगुवनइ

मुषिद् मविगतरि क्षारायना काय। सब ओषराणि यमावा गुमन्तानि धीनञ्जार  
 (२१) शु वि पराग हूठ । मरो जनिमि देवनाकि दन सागरावमनइ प्राऊणइ  
 ब्रह्मइ इवि नामि इ० हूउ । रत्नवनीइ मरी तीणइ जि इद्र ( तणा ) सामनिइ  
 रचना हूई । जिही यहु ष्यवी एरुमव मसारासाहि अवनरी दीया मेई एरुम  
 वम नवकरी बेवत्तान ऊराजी वट्टे वणी माग सहगइ ॥ १५ ॥

॥ श्री नमस्कार बालावहोष ॥

-----

उत्तरार्द्ध-मूल्यांकन





विचार अभिव्यक्त करने का प्राकृतिक अधिकार होता है अतः आदिकाल इन उपलब्ध हिन्दी कृतियों से इन साधकों और कवियों की तात्प्रतम अनुभूति और अभिव्यक्ति का पूरा परिचय प्राप्त होता है।

अस्तु—हिन्दी साहित्य की प्राचीनतम गद्य रचनाओं की परम्परा उद्भव और विकास जानने के लिए हमें तत्कालीन प्राप्त साहित्य के विभिन्न स्रोतों को अवश्य देखना होगा। इस दृष्टि से आदिकाल की जैन, जैन-समी धाराओं के साहित्य की उपलब्ध प्राचीनतम सम्भावित गद्य रचनाओं का साहित्य के इतिहास पर विचार करना होगा। इन अद्यावधि प्राप्त रचनाओं में गद्य का सबसे प्राचीन स्वरूप प्रस्तुत करने वाली रचनाओं के लिए विचार की जो भी माय्यताएँ रही हैं, उनका संक्षेप में विवेचन करना यहाँ उचित प्रतीत होता है।

### पूरा मान्यताएँ

हिन्दी साहित्य के सबसे प्राचीनतम गद्य की सम्भावना पर सबसे पहले हमारी दृष्टि गोरक्षनाथ के गद्य पर उठ जाती है। आचार्य शुक्लजी ने भी सन् १४०० के आस-पास के ब्रज भाषा गद्य का उदाहरण मान लेने की लिखा है।<sup>१</sup> परन्तु उनकी इस मान्यता में स्थिति बहुत सदिग्ध है। कारणों की व्याख्या करते हुए इस तथ्य के लिए यह कहा जा सकता है कि एक तो गोरक्षनाथ का समय ही सदिग्ध है और दूसरे विभिन्न विद्वानों भी उनके समय से सहमत नहीं हैं। उदाहरणार्थ मिश्रबन्धु गोरक्षनाथ का समय सन् १४०० मानते हैं परन्तु राहुल सांकृत्यायन उसे १०वीं शताब्दी का ही कहते हैं।<sup>२</sup> इस प्रकार तो गोरक्षनाथ का समय ही निश्चित है और न उनके नाम से उपलब्ध कृतियों की तिथियाँ भी असदिग्ध हैं। श्री अणवरुद्र नाहटा गोरक्षनाथ के नाम से मिलने वाली कृतियों के विषय में स्पष्ट प्रकट करते हुए लिखते हैं कि— गोरक्षनाथ की कुछ रचनाएँ गद्य में लिखी बतायी जाती हैं। इन रचनाओं की भाषा १३वीं से १५वीं शताब्दी के मध्य की मानी गई है। परन्तु इसके लिए कोई ठोस आधार नहीं प्रतीत होता। इन रचनाओं का गोरक्षनाथ की कृति

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास—श्री रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ ४३८

२ मिश्रबन्धु विनोद भाग १, पृष्ठ २११

३ नागरी प्र० पत्रिका, भाग ११, अंक ४, पृष्ठ ३८९-९० पर राहुल सांकृत्यायन का लेख।

हाना समझ नहीं आता पढ़ना । किसी प्रसिद्ध साम्प्रदायिक नेता या मन प्रवर्तक अनुयायी, स्वयं प्रवचनकार तथा के नाम से या मन प्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध करने रहते हैं । गौरवनाथ के इन प्रयोगों का हस्तलिखित प्रतिमाँ बदायुँ १८ वाँ पन्नागनी से पूर्व का प्राप्त नहीं है । उनके अन्य पद्य प्रयोगों की प्रतिमाँ भी मना नव १७ वाँ पन्नागनी से पहले का मरे अक्षरान्त में नहीं आई । अतः अब तक उनकी हिन्दी गद्य रचनाओं का इससे पूर्ववर्ती प्राचीन हस्तलिखित प्रतिमाँ प्राप्त न हो जाये, अतः साम्प्रदायिक के प्राचीन प्रथमाया के गद्य प्रयोगों का ही हिन्दी के प्राचीन गद्य प्रयोग कहा जा सकता है ।<sup>१</sup> ऐसी स्थिति में दो नौ भाषण वक्तव्यों की वाक्ता और चौरागी वक्तव्यों की वाक्ता आदि प्रयोगों का ही हमें महाराज मना पढ़ना है ।

एक अन्य प्रयोग १४वाँ पन्नागनी का और उपलब्ध होता है, जिसका नाम है अक्षरान्तकार ।<sup>२</sup> यह टाहुर ज्योतिरीदेवर की गद्य रचना है । रचना के अन्त में प्रचार और हिन्दी की प्रोढ़ता को देखते हुए यह महत्त्व ही कहा जा सकता है कि इसके पूर्व भी गद्य की रचनाएँ मिलना बहुत संभव है । नायिका अक्षरान्त अनुकरण, प्रमाण तथा समान आदि अक्षरान्त बड़े ही प्रोढ़ बन पड़े हैं ।<sup>३</sup> इस प्रकार मयिना गद्य की प्राप्ति अस्वास्त्य नहीं की जा सकती । गद्य के क्षेत्र में इन रचना का अन्त एक ही महत्त्व है । प्रसिद्ध विद्वान् सुनीलकुमार घटर्जी भी इन रचना के गद्य का प्रोढ़ता स्वीकार करते हैं । मयिनी गद्य के विकास में महत्त्व पूर्ण योग देनेवाला इस रचना के गद्य की सम्प्रदाय का परीक्षण आगे किया जायगा । एक उदाहरण रचना विद्यारथि की कीर्तिका मना गिनी जाती है ।<sup>४</sup> यह रचना १२वाँ पन्नागनी का उत्तरार्द्ध की है ।

प्रोढ़ता मयिना से मराठी का गद्य भी महत्त्वपूर्ण कहा जायगा । १२वाँ पन्नागनी के उत्तरार्द्ध में प्रचलित मराठी गद्य का भी प्रस्तुत करनेवाली

१ हिन्दी अक्षरान्तकार मासिक मन् १९२३, पृष्ठ २११ पर भी अक्षरान्तकार महाराज का गद्य अक्षरान्तकार गद्य नाम की परम्परा ।

२ हिन्दी गौरवनाथ का अक्षरान्तकार भी अक्षरान्तकार प्रकाश हिन्दी पृष्ठ १८ ।

३ अक्षरान्तकार मयिनी की मयिनी मयिनी पृष्ठ ३६ ।

४ हिन्दी गौरवनाथ का अक्षरान्तकार मासिक मन् १९२३, पृष्ठ २१६ ।

बंजनाथ कलानिधि की एक रचना का भी उल्लेख मिलता है ।<sup>१</sup> यह प्रति तादृश पत्र पर लिखी हुई है और इसका समय समवत १५वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जा सकता है ।

कई वर्षों पूर्व श्रीभगरचन्द्र नाहटा ने तरुण प्रेम सूरि की १४वीं शताब्दी के एक जैन विद्वान् की गद्य रचना की भी सूचना दी, जो तत्सम शब्दों से पूर्ण है,<sup>२</sup> और पर्याप्त प्राचीन है ।

अस्तु इन उपलब्ध रचनाओं को देखते हुए वर्तमान स्थिति में गद्य की प्राचीन रचनाओं के विषय में हमें बहुत सतोषजनक प्रमाण उपलब्ध नहीं होते । अस्तुतः शोध की वर्तमान स्थिति में हिन्दी साहित्य की प्राचीनतम गद्य रचनाओं को खोजने के लिए गद्य की प्राचीन परंपरा का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है । अबत सभी गद्य प्रधान रचनाओं में तत्सम शब्दों की भरमार है और पर्याप्त प्रौढता एवं स्थिरता है परंतु जब तक पर्याप्त शोध होकर इनकी प्रामाणिक हस्तलिखित प्राचीन प्रतियाँ नहीं उपलब्ध हो जाय, इस अनुमान का प्रत्यक्षीकरण पूर्ण सरलता से नहीं किया जा सकता । ऐसी स्थिति में हमें लोक भाषाओं के साहित्य की ही आशा बच जाती है । देशी भाषाओं के इस उपलब्ध साहित्य में अपभ्रंशोत्तर काल में ब्रज, अवधी प्राचीन राजस्थानी, प्राचीन गुजराती, मैथिली, मराठी आदि लोक भाषाओं से ही सहायता मिलती है । इनमें ब्रज भाषा, खड़ी बोली तथा सिद्धा और नाथो आदि की कृतियाँ सदिग्धता से परे नहीं कही जा सकती तथा प्राचीन समय की लिखित प्रतियाँ उपलब्ध भी नहीं हैं । इनके अतिरिक्त अन्य प्राचीन भाषाओं में तत्कालीन पुराने हस्तलिखित प्रामाणिक प्रतियाँ एकदम उपलब्ध नहीं होती, हागी भी तो अथ भ्रमि अज्ञात हैं, अब प्राचीन राजस्थानी या जूनी गुजराती का ही सबसे प्रमुख स्रोत रह जाता है । अस्तु लोक भाषाओं की यह शाखा हिन्दी की ही एक बोली है अब इन रचनाओं में मिलने वाले गद्य की परंपरा के विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करना आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होगा ।

१ डेविए पाटण कटलाग ऑफ् एम० एस्० एस्० पृ० ७५ ७६

२ भगरचन्द्र नाहटा का लेख जनल ऑफ् दी यू पी हिस्टारिकल सोसाइटी प्रप १२



गया कोई भी तत्कालीन गद्य ग्रंथ स्वतंत्र रूप में उपलब्ध नहीं होता।<sup>१</sup> अपभ्रंश की नवी शताब्दी में रचित कुवलयमाला ग्रंथ में हम गद्य के छोटे छोटे वाक्य देखने का मिलते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् श्री लालचंद भगवान गांधी ने अपने ग्रंथ अपभ्रंश-काव्यप्रयी में कुवलयमाला का कतिपय उद्धरण प्रस्तुत किया है।<sup>२</sup> अतः हिंदी गद्य साहित्य की परम्परा का उद्भव का बीज इसी रचना से हमें मिलने लगते हैं। कुवलयमाला के कुछ उद्धरण डॉ० हाररी प्रसाद द्विवेदी ने भी हिंदी साहित्य के आदिकाल में उद्धृत किए हैं। वे लिखते हैं कि— 'नवी शताब्दी की कुवलयमाला तथा में कुछ ऐसे प्रसंग हैं, जिनमें बालचाल की तत्कालीन प्रचलित भाषा के सुंदर नमूने आ गये हैं।'<sup>३</sup> प्राकृत के इस प्रसिद्ध ग्रंथ में प्रसंग वश जहाँ जहाँ अपभ्रंश का प्रयोग मिलता है उसमें उस समय की बोलचाल की भाषा पर छोटे छोटे गद्यात्मक वाक्यों द्वारा उस पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। इन छोटे छोटे वाक्योंवाक्यों द्वारा हम गद्य की प्राचीनतम स्थिति का सख्त अनुमान लगा सकते हैं। ऐसे कुछ उद्धरण यहाँ दिए जा रहे हैं।

(१) रे रे, अरोटट । मण रे जाद प पम्हुसई । जनाहन पुच्छह कथ्य तुज्जे करुन जिमि अलया ?

तण मणिउ साहिउ ज तेन उतस्स वलवखइ एल्लयह तणए जिमि अलया ।

तेण मणिउ कि सा विस महिला बनवखइ एल्लिख ।

अण मणिउ तेहह । साय मडारय सपूण्ण स्वलकण्ण गायथि महासिक् ।<sup>४</sup>

(२) भो भो भइ उता । तुम्ह ण याणह यो रात्तुले अत्तात्त ? तेहि माणिस भण है याए स्यामी । क वार्ता राजकुत्ते ? तेण मणिय कुवलय मालाए पुरिस द्वेषिणीए पानओ लवति इम च भो ऊण अण्का डिडण एक्को उटिठउ चटठो । मणिअच णेण यदि पाण्डित्येन ततो भइ परिणतइय कुवलयमाल । अण्णेण मणिअ अरे कवणु तव पण्डित्यु ? तणमणिअ पडगु पढमि, त्रिगुण मात्र पढमि कि न पाण्डित्तु ? अण्णेण मणिय

+

+

+

अह सहितस जजो स्वाथी पठमि ।

तेहि मणिअ इइ मी रे व्याघ्रसामि । माध ?

१ देखिए श्रीय पत्रिका में श्री नाहटा लिखित प्राचीन जन राजस्थानी गद्य साहित्य-लेख, पृ० ४९

२ देखिए अपभ्रंश काव्यप्रयी - श्री लालचंद भगवान गांधी, पृ० १०४-९

३ हिंदी साहित्य का आदिकाल आचार्य द्विवेदी, पृ० १९

४ अपभ्रंश काव्यप्रयी पृष्ठ १०४

तेज मन्त्रिभ्र इम र्वाप  
 मा ते भवन्तु सुमीमा अनुपस्य कृत्ता वन ?  
 यस्य यस्य यथा भूमि सुखत्र मधुसूदन

× × ×

ब्रह्मेण मन्त्रिभ्र भरे । तिसोया अम्ह न पुच्छइ र्वापा । पट्टा तन  
 मन्त्रिभ्र मुठ्ट पड मि

अन्तर्गत मन्त्रिभ्र अर । केरिमो मी पान्क जा तीपविनु

हेमिभ्रिउ राजागल मडपठिनु आवि मी से विम्पनु मुम्पुमाकु बहनि  
 त्रि इम समी ऊग चट्ट रमायण चिम्पिय

रायटनन प्रहा अगाहृषटिमाण जम बहुरजावतन चट्टाण नि

( बुधमयमाला कथायाम अ० भा० ता० १३० १११ )

वक्त्र उद्धारण में अरते अन्वयन क विषय में विद्य विद्यों की बातचीत  
 है । एक दूसरा कथानक त्रिमने कृत्त अनापामय क अनाहिता और रात्रियों का  
 कथन है तबका कविगय पक्ति की दृष्टि—

कुवलयमाला के इन उदाहरणों में संस्कृत के कठिन तत्सम रूप कम ले गये हैं। भाषा में एक परिवर्तन परिलक्षित होता है। संस्कृत तद्भव शब्दों को मिलते हैं। अतः देशी भाषा की ओर क्रमिक झुकाव इन वाक्यों स्पष्ट परिलक्षित होता है। एक और उदाहरण में ग्राम मेहतर की उक्ति में अत्यंत वदघ की अभिव्यक्ति देखिए—

तउ भणिय एवकेण गाम महत्तरेण

‘एहउ दुम्भणस्साहु । सव्व जे धु (यु) जा अरिदु । तुज्जा णउ । वकलतउ । परद्धउ (तु) प्रद्ध । सुगइ भ्रातु व (व) व भ्राति सपत्तु ।

तउ अण्णेण भणिय

यु ज विरइदु घणलवासा त सुहलप्यडे एतु प्रह दुत्पट्ठ मण मोहलुद्धउ सम्पत्ति बालितउ । एतु (उ) एतु (उ) प्राद्ध भल्लउ ।

तउ अण्णेण भणिय चिरत्तरा जूण्ण देटेण —

एत्य सुज्जति किर सुवाण्ण रे वहसाण रमुहगतउ कउ पाउ मित्तस्स वण । काभाति अन्नत धरणे एतु (उ) पाउ दुज्ज प्पणाहिय ।

तउ समयल द्रग सामिणा मणिय जेटठ महामय हरेण धवल वाहण धवल स्स सिरि भ्रमिति जाविमल जल । धवलुज्जल सा भडारी यति गग प्रावेमि दु मित्र द्रोच्चु तो णाम सुज्जति— —’

कुवलयमाला कथायाम (ज० मा० ता० ५१ ३७ ४७)

इस प्रकार विक्रम संवत् ८३५ में लिखे इस कुवलयमाला कथा ग्रंथ में अग्रश की यह परिवर्तित स्थिति तथा तत्सम शब्दों के बाहुल्य को स्पष्ट करने के लिए इन प्रासंगिक गद्य अंशों से हिन्दी साहित्य की आन्विकानीन गद्य की सबसे चीन परम्परा स्पष्ट होती है।

अपभ्रंश का एक और प्रयुक्त उक्ति प्रकारण ११वीं शताब्दी का कवि जे. रामोदरदास शर्मा द्वारा लिखित उपलब्ध होता है।<sup>१</sup> यह ग्रंथ बनारस की ओर सके आसपास के भाषा रूपों का मन्थन में योग देता है। पाटण भडार की ओर भी इस ग्रंथ की सूचना मिलती है। तत्सम शब्दों की ओर तेजी से विक्रमण हमें इस रचना में उपलब्ध होने लगता है। डा० द्विवेदी भी इस मत





आदि उद्धरणों में प्राचीन गद्य के उदाहरण मिल जाते हैं जो आदिकालीन गद्य रचनाओं की पृष्ठभूमि निर्मित करने में सहायक तत्व हैं ।

श्री नाहुटाजी ने पाठण भंडार की एक सूची के विवरण में उक्तिव्यंक्ति विवक्ति नामक ताडपत्रीय एक अपूर्ण प्रति का भी उल्लेख किया है, जिसमें लोक भाषा के गद्य की अपभ्रंश की सजा दी हुई मिलती है । यह रचना पर्याप्त महत्वपूर्ण है । वस्तुतः अब तक संस्कृत और प्राकृत की कुछ हता को कम करने के लिए टीकाओं के रूप में कतिपय गद्य ग्रंथों का प्रतिपादन किया जाता था । पद्य ग्रंथों में भी कुछ गद्यात्मक अंग मिल जाते हैं ताकि वह सरलता से जनता के समझ में आ सकें । पर अब लोक भाषा का अनुशीलन करने पर यह कठिनाई तो पर्याप्त रूप में दूर हो गयी है । इन प्राचीन भाषाओं के उदाहरणों से ही हिंदी गद्य की प्राचीनतम स्थिति की जानकारी हो सकेगी ।<sup>१</sup>

अब तक हिन्दी का प्राचीनतम गद्य १६वीं शताब्दी का ही माना जाता था परंतु हमारे शाघ के आरार पर यह गद्य १०वीं शताब्दी का पुराना मिल जाता है । यह रचना गद्य का एक सुन्दर शिखर लेख है, जिस पर आगे प्रकाश डाला जायगा । अतः ज्ञान की दत्तमान स्थिति में प्राप्त कृतियों के अनुसार ११वीं शताब्दी से भी ४०० वर्ष पहले गद्य का प्रादुर्भाव स्पष्ट हो जाता है । इन देगी भाषाओं में मिलकर हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास में योग दिया है अतः हिन्दी साहित्य की प्राचीनतम गद्य की रक्षा करने का श्रेय भी इन्हीं कृतियों का है । इन लोक भाषाओं में मयिली ब्रह्म अथवा आदि भाषाओं का साहित्य प्रायः इतना प्राचीन नहीं मिलता जितना कि प्राचीन राजस्थानी या जूनी गुजराती का । परंतु यह आगा की जाती है कि इन भाषाओं में भी इस प्रकार की रचनाएँ अवश्य होगी और इस समय खोजी नहीं गयी है । इन प्राचीन राजस्थानी साहित्य में जन बाह्य मय इसीलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है । प्राचीन राजस्थानी भाषा और जूनी गुजराती इस दृष्टि में अत्यंत सम्पन्न माने जायगी क्योंकि उनके पास गद्य तथा पद्य की प्राचीन से प्राचीनतम हस्तलिखित प्रामाणिक रचनाएँ विद्यमान हैं । यही एक ऐसी लोकभाषा है जिसका सीधा सम्बन्ध भी हिन्दी से है । विद्वानों ने इस

१ देविए देव नागर धप १, अंक ३, पृष्ठ ५५ ५८

२ शोध पत्रिका भाग ७, अंक १, ३ ।

३ देविए संस्कृत का साहित्यकार नवम्बर दिसम्बर अंक २ अंक १९, पृष्ठ ६८ ७१ । प्रकाशित लेखक का हिन्दी साहित्य की प्राचीनतम गद्य रचनाएँ शोधक नेम)

राजस्थानी साहित्य के गद्य की परंपरा ]

अपभ्रंश की बड़ी बड़ी तक बनी है ।<sup>1</sup> इसी क साहित्य में जन अजन क पुगनी रचनाएँ उतपन्न हुई हैं । जननर, रचनाओं म रयात और बात साहित्य क तिष्ठ ता राजस्थानी अत्यन्त मधुन विभाषा है ही ।

इस विभाषा क विनास तथा सम्पन साहित्य के लिए अनेक विद्वानों ने अनेक विचार बकत किये हैं ।<sup>2</sup> राजस्थानी या चारण साहित्य कीरता और वल्लभ का साकार कोण है । श्री जस्टिस् आगुताय, मुसज्जो, महामना प० मानवीयजी तथा विश्व कवि टंगोर न ना इन भाषा की सम्पन्नता और साहित्य पर अत्यन्त मुग्ध रूप म अनेक स्तुतिभाषि और यथायु विचार प्रस्तुत किये हैं । इन विचारों क यह तो निश्चित रूप में जाना जा सकता है कि राजस्थानी भाषा का यह साहित्य प्राचीन, प्रामाणिक तथा

1 बेनिए राजस्थानी भाषा-श्रीस्वामी नरोत्तमदास जी का भाषण ।  
2 डा० विमन—'There is an enormous mass of

literature in various forms in Rajasthan of considerable Historical importance, about which hardly any thing is known

—HUP of Royal Asiatic society—Great Britain

3 डा० मुनी० कुमार सज्जो 'There is however very rich literature in Rajasthan mostly in Marwari

Rajasthan literature is nothing but a message of brave flooded life and a brave stormy death The period covered by the literature extends from about a little before the 14th century AD to the present day During these five or six centuries we have scattered here and there over millions of couplets songs and historical compositions'

III Dr L P Tescatory—This vast literature flourished all over Rajputana and Gujrat where ever Rajput was hush of his blood to the soil of his conquest—

—Rajasthan Language & literature

सम्पन्न है। राजस्थानी के साहित्य को सम्पन्न बनाने में जनसाहित्य, का बहुत महत्त्वपूर्ण हाथ है। प्राचीनतम रूप में यदि राजस्थानी के पास कि ही कृतियों की निधि या धाती है, तो वह जैन साहित्य की रचनाएँ हैं जो सुरक्षित, प्रामाणिक तथा हस्तलिखित हैं। अनेक कृतियाँ इतनी प्राचीन तथा प्राणिक उपलब्ध नहीं होती। उदाहरणार्थ—वारणी साहित्य, बात और स्थान साहित्य का हम इस रूप में ले सकते हैं परन्तु जहाँ तक रचनाओं की विशाल संख्या, प्रामाणिकता तथा विश्वसनीयता का प्रश्न है, राजस्थान में उपलब्ध तत्कालीन हिंदी जन साहित्य की या पुरानी हिंदी या उत्तर अफगान की ये कृतियाँ अपनी

1 (i) But bardic poem are also important x x x they (i.e. the bardic prose chronicles) are real and actual chronicles with no other aim in view than a faithful record of facts and their revelation is destined, to destroy for ever the unjust blame that India never possessed historical genius

- Justice sir Ashutosh Mukherji Rajasthan Language and literature p 4

(ii) Why is this (Rajasthani) Literature not taught in our universities x x x Rajasthan is the Language of brave and heroic people Its place among the literatures of the world is unique Its study should be made compulsory for the youth of modern India The work of the revival of this soul inspiring literature and its language is absolutely necessary I am eagerly looking for the day when the full fledged Department of Rajasthan will be established at the Banares Hindu University, where complete facilities will be provided teaching and research work in Rajasthan literature

—Madan Mohan Malviya

The other day in Calcutta a few of my Rajasthan friends were good enough to recite Rajasthan martial songs to me I, was simply spell bound to listen to them What charm

सारी नहीं रसतीं । अथावधि प्राथम्य प्रमाणों और लोभ की स्थिति के आधार पर इन्हीं कृतियों से हिन्दी गद्य का प्राचीन रूप निर्धारित किया जाएगा । गंगाजी तब प्राचीन गुजराती और प्राचीन राजस्थानी एव ही भाषा थीं जिनकी गुजराती का साहित्य जो इन रूप में हमारी बड़ी गतायता करती है ।  
 १. यदि विद्वानों ने राजस्थानी का हिन्दी की बोलो नहीं मानकर राजस्थानी का हिन्दी की बहिन ( Sister language ) माना है और अपनी कृतियों में श्री इगना इस्तत्र रूप से महान धिया है पर तु हा० प्रियसुत<sup>३</sup>, हा० चाटुग मा<sup>४</sup>, दयाम गुनरदाम<sup>५</sup>, हा० पारे इ बर्मा<sup>६</sup> तथा हा० बाबुराम मन्ने

earnestness and noble sentiments these songs have They are the natural outburst of the people I regard them as superior even to the saint poetry How nice it would be if they were published And language and literature of the world could well be proved of them God willing I shall have them published from the Hindi Bhawan of Shanti Niketan I shall try my level best to place Rajasthan literature before the Indian public through the Hindi Bhawan

(ii) The heroic sentiment which is the essence of every song and couplet of Rajasthan is a peculiar emotion of its own of which, however the whole country may be proved<sup>१</sup>

See—Rajasthan language & literature page 4 compiled by the Literary, Rajasthan Academy Bikaner

१. रेडिक् साहित्यकार, वर्ष २ सं० १९ पृ० ११

२. Dr Sir George A Grierson Linguistic survey of India vol I page 9

३. डा० जग के बरती—origin & Development of Bengali Language p २

४. रेडिक् भाषा रसत हा० दयाम गुनरदाम पृष्ठ १९४

५. हिन्दी भाषा का इतिहास डा० पारेड बर्मा, पृष्ठ २४

भा<sup>१</sup> आदि प्रसिद्ध भाषा विज्ञानिया ने राजस्थानी को अलग भाषा ही माना है, हिन्दी की बोली नहीं। प्रसिद्ध विद्वान् रामो गरीतमदासजी और नाहटाजी भी राजस्थानी को स्वतंत्र रूप में अलग भाषा मानते हैं। डा० ग्रियसन ने इसका सीधा सम्बन्ध गुजराती भाषा<sup>२</sup> से बताया है और गुजराती से मारवाडी का पृथक्करण एकदम आधुनिक कहा है। डा० सुनीलकुमार चटर्जी गुजराती और राजस्थानी का उद्गम प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी को मानते हैं।<sup>३</sup> डा० टेमोटीरो ने भी इसी मत का प्रतिपादन किया है। अतः प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी की यही रचनाएँ हिन्दी साहित्य की आदिकालीन रचनाएँ हैं। इन्हीं रचनाओं के आधार पर इस भाषा को पुरानी हिन्दी कहा जा सकता है।

हिन्दी साहित्य के गद्य के उद्गम और विकास की परंपरा पर विचार करने में यहाँ राजस्थानी के सम्बन्ध में साहित्य का विशेषण करना अनावश्यक नहीं समझा गया है क्योंकि अधिकतर आन्ध्रकालीन हिन्दी साहित्य इसी प्राचीन राजस्थानी या जूनी गुजराती का है अतः हिन्दी के गद्य परंपरा का निर्धारण करने में राजस्थानी की कुछ बोलियाँ के उद्गम यहाँ दिष्ट जारहे हैं। राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ<sup>४</sup> १) मारवाडी (२) मेवाडी (३) जम्पुरी (४) मेवाती (५) मानवा। इनमें मारवाडी का साहित्य बहुत ही विनाल साहित्य है और जन साहित्य इसी मारवाडी में ही लिखा और प्रभावित हुआ मिलता है। हिन्दी साहित्य की गद्य परंपरा का उद्भव स्पष्ट करने के लिए हम १४ वीं शताब्दी की ७ वीं जन कृतियाँ का सहारा लेना पड़ता है। श्री नाहटाजी

१ सामान्य भाषा विज्ञान-पृष्ठ १९२ ९३ डा० वासुदेव सक्सेना।

२ 'Gujrati and Rajasthanī are hence very closely connected and are in fact little more than variant dialect of one and the same language

The differentiation of Gujrati from the Marwari, dialect of Rajasthanī is quite Modern

—Linguistic Survey of India Vol I I page 170

३ Gujrati and Rajasthanī are derived from the one and the same source dialect to which the name old Western Rajasthanī has been given "

Shri Chaturjya Origin & Development of Bengali language - Page 9



४ ताततालवार ५ आषजी ६ परवावगी ७ पटावजी ८ खपावजी  
९ भूगलिया १० करडि ११ भल्लरी १२ गडह १३ समेतु १४ पचसबहु  
वाइयइ । गूजरी गीत गाइयइ तास्यु ताण्डव नाचियइ मदगु वाइयइ हे  
हृदित्री वई किणी परिवाइयइ ।<sup>१</sup>

उक्त उद्धरण में एक गूजरी नायिका के मुह से जो सात गुभराती के  
नाम से बरनाये गये हैं उ हैं मरलता से प्राचीन राजस्थानी कहा जा सकता है  
अथवा पुरानी या गरल हिन्दी ।<sup>२</sup>

इसी प्रकार मालवी भाषा का उदाहरण देलिये—

२ जब मालवा देग की वावली रात्रण लागी, तब अवर देग की परि  
भागी । निवतु रे मोरी बहिणी । फणि फुनि मोरा देश काहउ  
वकल्लाणहि । मोरा देश की बात न जानहि । निणि देनि मडवगड  
केरा ठाह जणनिधन्वराउ । समूर का घाग । अवर दश का काहउ  
मानु । काटा मूअर तुटणा । कोरा साडा अर भूणा । ठाली अर  
वाजणी । पटिली अर नाचणी । दिवख रे मोरी बहिणी । बलि बलि  
काउ बिललाइ । तारा गाला महुवायइ । मालव देग की परि  
नोकी निरि की टाकी मेत चार का साडा । पूजियइ आदिनाथ  
मुगराज । दिहे साइरुवणि पणिपूजियइ ।<sup>३</sup>

उक्त उद्धरण मालवी का है जो प्राचीन राजस्थानी की एक बोली  
है । पुरानी हिन्दी की जीरे इन बाला के रूप में बढन दिखामी देते हैं । खद है  
मालवी में निम्ने हुए आदिनाथान जन या जीरेर साहित्य की बिल एक ही  
रचना उपलब्ध है नहीं तो बहुत संभव था कि आदिकालीन गद्य और पद्य के  
उत्पन्न में मालवी में भी पर्याप्त सहायता मिल सकती ।

अब पूर्वी का उदाहरण देलिये—

३ अब पूर्वी नायिका का सोलया मुणहुग रे भइया । स्यु जुगि जाणिवउ  
घोरे दिखुरे मारी बनिगी फुनि फुनि मार भेसु किततु अरति आदि ।  
गारे देग की बात न जानति । गहि भेग ऐमे मानुस कौमे—इवकु घोरे  
घोरे विवकिये । गरम टाग के साहन मराट मल्ल तुम्ह कतुके जान  
कतुके परान बना की आग । अर्ण तुम्हा मडा अतर आदि कइसु अतर

१ नागरी प्रचारिणी सभिका दफ ४८ अंक १ पृष्ठ २०९

२ साहित्यकार नन्दर—रिताम्बर, १९१७, पृष्ठ ६९

३ राजस्थानी दफ ३, अंक ३





# उपलब्धियों तथा मूल्यांकन

( आठिकालीन हिंदी जैन कृतियों और उनका गद्य )

अभी तक जिन महत्वपूर्ण तथ्यों पर विचार किया गया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि आठिकालीन उपलब्ध हिंदी साहित्य की हिंदी गद्य की सबसे पुरातन कृतियाँ रखने का सीमाय प्राप्त है। अनेक विद्वानों ने गद्य की इन कुछ रचनाओं पर प्रकाश डाला है और कतिपय विभिन्न ग्रंथों में प्रकाशित भी हो गई हैं।<sup>१</sup> इन रचनाओं का भाग सम्यक विवेचन और वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया जायगा। ताकि हिंदी साहित्य के प्राचीनतम गद्य के शिल्प की दृष्टि का मूल्यांकन हो सके; विविधता की दृष्टि से या तो आठिकालीन साहित्य कई प्रकार का मिलता है। उदाहरणार्थ चारणा का साहित्य जैन साहित्य सेना का साहित्य, लौकिक साहित्य, अलिखित साहित्य और उपदेशात्मक धार्मिक साहित्य। परंतु इनमें सबसे अधिक विशाल जन साहित्य है। अद्यत्तवधि प्राप्त आठिकालीन हिंदी गद्य की जा जैन रचनाएँ मिली हैं वे चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ की हैं तथा उनकी प्रतिलिपियाँ भी १४वीं शताब्दी के प्रारम्भ की हैं अतः यह अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है कि अवश्य ही ये रचनाएँ १३वीं शताब्दी के प्रारम्भ की होंगी। यहाँ हम पहले इन ही जन लेखकों द्वारा निमित्त गद्यरचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके बाद अजैन (लौकिक) आठिकालीन गद्यकारों की रचनाओं पर प्रकाश डाला जायगा। अस्तु हिंदी साहित्य की अब तक जो जन रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं उनका सामान्य क्रम से उल्लेख इस प्रकार है —

१४वीं शताब्दी —

- |             |                   |
|-------------|-------------------|
| • १ आराधना  | स० १३०            |
| • २ बालगिरी | सम्राट मिहस० १३३६ |
| • ३ अतिचार  | स० १३४०           |

१ देविये — प्राचीन गद्य सदाश, मुनिजिनविजय तथा प्राचीन गुजर काव्य सग्रह — श्री बल्लाल

सारांशित कृतियों धोन्वाल की पाठ्य मन्त्रालय में मिलीं और ये प्राचीन जन गुजरकाव्य सग्रह में प्रकाशित हो गयी हैं—देखिए सी० डी० बल्लाल सम्पादित प्राचीन जन गुजर काव्य सग्रह पृष्ठ ८६—९२



१ प्रारम्भिक काल ( स० १३००—१४०० )

(अ) प्रारम्भिक रचनाएँ

(ब) परवर्ती रचनाएँ

२ विकास काल ( स० १४००—१५०० )

(१) प्रौढ गद्य

(२) गद्य काव्य

प्रारम्भिक काल की रचनाओं का विवेचन १३०० से १४०० के अन्तर्गत तथा विकास काल की रचनाओं का विश्लेषण १४००—१५०० में किया जायगा ।

प्रारम्भिक काल की प्रारम्भिक रचनाओं के अन्तर्गत आने वाली कृतियाँ

हैं—

१ आराधना स० १३००

२ बालशिक्षा स० १३३६

३ अतिचार स० १३४०

४ भयकार व्याख्यान स० १३५८

५ सप्तमीय नमस्कार स्तवन स० १३५८

६ अतिचार स० १३६९

तथा परवर्ती रचनाओं की सीमा में आने वाली कृतियाँ हैं—

७ तत्त्वविचार प्रकरण स० १४०० के लगभग, तथा

८ धनपाल कथा

इस सब रचनाओं की प्रतिनिधित्व १४ वीं शताब्दी के लगभग की मिलती है अतः ये रचनाएँ निश्चित रूप से १२ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध या १३ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखी गई होंगी । यद्युक्त इनका जन्मकाल यदि वि० १३०० से ही माना जाय तो वास्तव में नहीं होगा ।

प्रारम्भिक काल की रचनाओं का विषयानुसार वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

१ धार्मिक कृतियाँ—

१ उपासना पद्धति जय

२ धार्मिक सिद्धांत भूतक

३ गद्यरम्य स्तोत्र सूक्त

२ साहित्यिक—

अ व्याकरण सम्बन्धी तथा

ब कथारमक

# धार्मिक कृतियों

## उपासना पद्धति ज्ञाप्य

उपनायक कृतियों में सबसे प्राचीन कृति अर्थात् भक्त कृत आराधना है। इन कृति का अतिरिक्त धार्मिक है और पदों के प्रमुख स्तन उपासना से यह संबंधित है। आराधना नाम से ही कृति का अनुमान उपासना मूलक होना स्पष्ट होता है। यह कृति पाण्डव के ताड़पत्रीय प्रति में मिली थी। इसका प्रकाशन सर्वप्रथम सन १९०० में बंगाल में प्रकाशित प्राचीन गुजरात काव्य ग्रंथ के संस्करण की भाँती टिप्पणी में इन पदों में किया था।<sup>१</sup> तथा इसके आठवीं अध्याय में श्री मुनिब्रह्मविद्या जी ने अपने पद्य प्राचीन गुजराती काव्य सभ्यता में स. १९०६ में किया।<sup>२</sup> इन पदों का द्वारा गद्य साहित्य के प्रारंभिक काम का प्रथम २-६ रचनाएँ विद्वानों के सामने प्रस्तुत की गई थीं वे भी मिली हैं।

मिल्य

आराधना की अर्थात् पद्धति अर्थात् भक्त कृत का अर्थ है विचारों के विनाश के अभाव की अभिव्यक्ति का स्पष्टीकरण करता है, जिसमें उपासना करने समय मन में किसी भी प्रकार का अशुभ न रहे। आराधना स्पष्ट अर्थात् संपूर्ण आराध्य के समक्ष स्थापित करता है तथा अपने पूजक सफल पारों और मिथ्या तर्कों पर यह इन उपासना पद्धति में अत्यंत अनिष्ट अनुभव करता है। जब परमेश्वर का स्मरण सब जीवों में समायाचना एवं अतिरिक्त सिद्ध साधु और धर्म इन चार महापुरुषों का स्मरण में आता ही आराधना का मुख्य लक्ष्य है।

विषय उपासना, आत्मज्ञानि तार एवं कृति, मानस विभूति, दुःखियों का परिशोधन महापुरुषों के उच्चतम गुणों का स्मरण तथा अर्थात् संपूर्ण पर विचार और आराध्य का अर्थ समस्त ही इन आराधना के प्रमुख

वण्य विषय है। सम्भवतः यह भी कहा जा सकता कि विषय वस्तु के आधार पर ये गद्यात्मक सजाएँ कालांतर में गद्य वणन की पद्धतियाँ हो गयी होंगी।

विषय एवं शिल्प की दृष्टि से आराधना और अनिचार सजक रचनाओं में पर्याप्त साम्य दिखाया पड़ता है। आराधना के कुछ उदाहरण देखिये —

- १ ज्ञानाधारि पुस्तक पुस्तिका सपुत्र सपुटिका टीपणा कबली उतरी ठवणी पाठा दारा प्रभति जानोपकरण अचना अकालि पठन अतिचार बिपरीत कथन उत्तमूज पुरुषणु अवन धान प्रमनिकु आलोवहु।
- २ सम्यक्त्व प्रतिपत्तिवरहु, अरिहतु देवता सुमाधु गुरु जिन प्रणीत धम्मु सम्यक्त्व दण्डकु उवरहु सागर प्रत्याखानु ऊवरहु, चरुहु सरणि पयसरहु।
- ३ परमेश्वर अरहत सरणि सकल कम निमुक्त सिद्ध सरणि ससार परिवार समुत्तरण यान पात्र महासत्व साधु सरणि सकल कम निमुक्त सिद्ध सरणि ससार परिवार समुत्तरण यान पात्र महासत्व साधु सरणि सकल पाप पटल कवत नफलक कलितु केवलि प्रणीतु धम्मु सरणि सिद्ध सष गत केवलि श्रुत आचाय उपाध्याय सवसाध व्रतिणी थावरु आविवा इहज काइ आगतना की हति ताहि मिच्छामि टुवकइ।<sup>१</sup>
- ४ पच परमेष्टि तमस्काः स्मरहि, तउ तुम्हि विदोष स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि ताथवर देवि इमउ अथ भणियउ अच्चइ अनइ ससारतणित प्रतिभउम करिसउ अनइ रुद्धि तमस्काः इहलाकि सपादियइ। आराधना समाप्रति।<sup>२</sup>

भाषा शैली—उक्त चारों उद्धरणों से १३वीं शताब्दी की इस सब प्रथम कृति आराधना की भाषा शैली की विशेषताएँ जानी जा सकती हैं। कृति की भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुत प्रचुरता है, पर बढ़ते हुए अपभ्रंश के शब्दों की भी कमी नहीं है। गद्यांश का देखने पर लगता है कि वाक्य अत्यन्त लम्बे और विराम दूर दूर पर हैं अतः वणन की यह शैली पुनतया समासप्रधान कही जायगी। अनेक शब्दों को एक साथ मिला कर कहा गया है। जहाँ तक कृति में उसक विषय के विवेचन का सम्बन्ध है, उक्त दूसरे और तीसरे उदाहरण इस पर पर्याप्त प्रभाव डालते हैं।

१ प्राचीन गुजर वाक्य संग्रह, पृष्ठ ८६

२ प्राचीन गुजर वाक्य संग्रह, पृष्ठ ८७

यद्यपि इन उपाहरणों की न पा म यह स्पष्ट है। गंगा है कि सगर के  
 वासु वधत का मोक्ष तथा गंगा की कीमतीता नष्ट है, यदावपी का पदन भी  
 दुर्लभ गा है। पर तु कवि की क गत्मकताम उभमें पर अभूतपूर्व प्रवाह अदरप  
 परिमणित हुआ है। अत्र वधत गना यगाप्रय मोक्ष रहित क  
 दालिन मा ज त पदत्रा है। पर आग क उट्टरानिनी का अनुप्रासा तथा पदों  
 का प्रवृद्ध और गण्डों की नाशमरता मा विनामिता तथा अभूतपूर्व  
 अनुपवन शैलि —

हय अदर, गान अनाम, युव अयन, स्वरा परिजन, मित्र सन्  
 प्रयनि पराति अर्द्ध जाह अनुगामी सग याति ऊगा गनुमनि की सना  
 अमाग मई हृदिया यनिवा गाराविया हसिया निजिग विना सिदा दादिया अम  
 पादिगा अस्त्रिन सविभवतारि अदगनि भरसमय मरत । भववाटि मनिवचनि  
 काई ताह गयहह सिद्धमि टुवहह । मापक और विरराकार्यक गण सुसमी  
 की याचना है गणा में सप्तृमयता हान हूण गा अगभग का प्रभाव गयत्र है  
 और माप म प्राधान राजधानी गणा का मा । इमग गह कारणों से कृति म  
 एक गमना और परसता मा गयो है ।

या अपभ्रंश के हैं। इसके पश्चात् प्रथमा और द्वितीया में प्रयुक्त उपप्रत्यय तथा क्रिया पदा में कृदन्त रूपों के हू तथा इउ प्रत्यय प्रयुक्त किए गये हैं।

अनेक नए श-शो का प्रयोग भी मिलता है यथा—ठवणि, पाठ, पांच ईह, तणहविषइ, पनर भडर, करावणि, तुम्हि, अनई, आदि। इनसे कहा जा सकता है कि भाषा के ये सक्रांति कालीन रूप हैं जिनसे प्राचीन राजस्थानी का स्वरूप विकसित हुआ है। उक्त उदाहरण एतदय देखे जा सकते हैं। इस रचना से यह ज्ञात होता है कि उस समय प्रौढ़ गद्य लिखने की अवश्य ही परम्परा रही होगी।

यद्यपि आराधना टिप्पणी की भाँति एक छोटा सी रचना है पर तु फिर भी गद्य को ज म देने वाले अकुर इसमें विद्यमान हैं। उपासना प्रधान एव धार्मिक प्रचार के उद्येश्य से लिखी हुई होन पर भी यह कृति आचरण में पवित्रता में पूर्ण निष्ठा सिद्ध करती है।

कृति का लेखक अज्ञात है। आराधना की प्रति गुजरात प्रदेश में ही मिली है, जो वास्तव में प्राचीन राजस्थानी का ही प्रदेश था। हिन्दी साहित्य में गद्य का उदभव करने वाली यह अब तक प्रथम कृति कही गयी है। कृति के वष्य विषय, ताड पत्रीय पौराणिकता, आचार गत पवित्रता तथा उपासना की विधियाँ और वणन शाली के आधार पर यह अनुमानत निणय किया जा सकता है कि इसका कर्ता अवश्य ही कोई तपस्वी साधक विद्वान कवि और जनसेवी लोकोपकारक जन साधु रहा होगा।

जो भी हा, कृति पर्याप्त महत्व की है।



## धार्मिक सिद्धान्तजन्य

गुण्य सदाभित्तक बही जाने वामो इसी काल की रचनाओं में निम्नांकित तीन कृतियों को लिया जा सकता है —

१ अतिचार<sup>१</sup> — म० १३४०

२ अतिचार<sup>२</sup> — म० १३६९

३ ताव विचार प्रकरण —

जहाँ तक इन कृतियों के नामकरण का प्रश्न है अतिचार से इनका विषय स्पष्ट होता है समस्त अतिचार नाम से दासों का परिहार परिमर्दिग हाता है। यह भी आकर मन्त्राधी यजन प्रस्तुत करने वामो ही कृतियाँ हैं। दोनों कृतियाँ सदाभित्तक हैं और इनके अन्त विषय भी अतिव्यक्तियों से सम्बन्धित होने का कारण धार्मिक है। प्रथम अतिचार ताव पत्र में भी लिया गया है तथा दूसरा अतिचार म० १३६९ में मिलित ताव पत्र की रचना है।

जहाँ तक अतिचार नामक रचनाओं के सम्बन्धित प्रश्न हैं वह कहा जा सकता है कि ये रचनाएँ मन्त्र के सिद्धांतों का विविधत यजन करने के नियमों का प्रतिपादन करती हैं। अतिचार मन्त्रमन्त्र या किसी नियम का अतिव्यक्त हो अतिचार कहना जाता है किन्तु नियम धर्म में अति का अर्थ प्रयुक्त होता है।

### आराधना और अतिचार

ये दासों का रचनाएँ वर्तमान समानाधिक है। अतिचार म० १३४० में लिखी आराधना रचना है। समानाधिक हा नहीं इनके अन्त विषय और अतिचार मन्त्र में वर्तमान आराधना है। अतिचार मन्त्र रचना ही है कि आराधना मन्त्र रचना

१ अतिचार नामक रचना — श्री कृष्ण कृष्ण ८८

२ म० म० मन्त्र मन्त्र — मुद्रिका म० ३६९ । ३



का विधिया पर प्रधान रूप में विचार किया गया होता है और अतिचार में आराध्य व आराधना के सद्भावितक तरका का । दोनों धार्मिक कृतिया हैं तथा ऐसी कृतियों का महत्व स्पष्टतया धर्म प्रचार ही कहा जायगा ।

आराधना में साधना एवं आराधना की विविध क्रियाओं व उपकरणों आदि का विधियाँ स्पष्ट की जाती हैं तथा धर्म का यह एक ऐसी स्थिति विशेष होती है जिससे आचारा का श्रवण स्पष्ट की जाती है और साधक को अति चारा से एकदम दूर रहने का एक महत्वपूर्ण सुझाव होता है । पापों के १८ स्थानों गृह्य रहस्यों का श्रवण दुष्काया पर पश्चात्ताप तथा सतकार्यों आदि का विवचन यदि आराधना में होता है <sup>१</sup> तो अतिचारा में गान, दशन तथा चारित्र्य और वीर्य—इन पाँच आचारा और बारह ब्रतों के दोषों की आलोचना का जाता है । श्री अमरचण्ड नाहटा लिखते हैं कि—आज भी परोक्ष, चानुमानिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के समय यह अतिचार लोक भाषा में माना जाता है जब कि प्रतिष्ठा के अयमून अधिकांश प्राकृत में है ।<sup>२</sup>

जहाँ तक अतिचार मात्र दोनो कृतियों में वर्णित गद्य की भाषा के प्रश्न <sup>३</sup> व आराधना के समान ही है । अतिचार का एक उदाहरण देखिए—  
कालवना पठय विनय हीन बहुमानहीण उपमान हाणु मुनिएहव  
धनरा वएहइ पढय — गाना पररण पाटी पासी बमती सापड  
सापुडो आगानन पग लागउ, गुउ कागउ पढनी प्रद्वण मच्छरु

अनराउ हउ कीधउ हई तथा जान द्र यु मनिनु उपेणितु प्रजापराधि  
विणास्य विण नितउ उवेस्य हृती सवित सार सभाजन कीधियइ अनेरइ  
जाना चाइ इ काइ अनिचा हउ सुक्षम उदुमनि वचनि काइ, पक्षदिस  
माहि तह सवहि मिच्छमि दुक्कट्टु ।<sup>३</sup>

उक्त उद्धरण में अयमून की उकारात्मक प्रकृति स्पष्ट है । उद्धरण में तत्सम धर्म अधिक है पण्य ( पडा ) उवेर य ( खला ) तथा करता पढता गुणता आदि बलमात्र हृदय मात्र भी गजस्थानी में प्रयुक्त है । उदा के तय रूप में उल्लेखनीय है । उदाहरणार्थ—सातमई लागउ पानि आगमइ आदि व कीधी बगली, गापु मही दोमउ आदि । मात्रि शब्द सांनुनामिक है—जा आज भा तत जा क एक व न में सांनुनामिक है । इव र की प्रकृति प्राचीन है । ए के रूप में प्रयुक्त गद्य नए है ।

<sup>१</sup> आराधना—प्रा० पू० १० पृष्ठ ८६

<sup>२</sup> देव नागर, धप । अक ३, पृ० १७

प्राचीन गुजर पाठ्य संग्रह पृष्ठ ८७



३ हव हिया माहि सम्यक्त्व धरउ । अरिहत देवता, सु साधु गुरु जिण प्राणीतु धम, सम्यक्त्व दडकु ऊचरउ । हिन अठार पाप स्यानक थो सिरावउ ।<sup>१</sup>

आराधना की भाषा से तुलना करने पर इन दोनों अतिचारों को गद्य की भाषा में बहुत ही अंतर स्पष्ट होने लगता है । उक्त दोनों अतिचार सजक रचनाओं में समाप्त प्रधान शैली कम होती गई है । वाक्य छोटे, सरल और प्रवाह लिए हैं । भाषा में अधिकतर गंभीर ठेठ प्राचीन राजस्थानी के हैं । यह गद्य थोड़ा प्रयास में ही सरल गद्य कहा जा सकता है । या कथ्य विषय धार्मिक होने से भले ही थोड़ी कठिनाई उपस्थित हो सकती है परंतु जहाँ तक गद्य का सरलता और शब्दा में सौन्दर्य का प्रश्न है, वह मध्य परिलक्षित हो जाता है । गद्य की सरलता और सुगठित वाक्य योजना तथा प्राचीन राजस्थानी शब्दों के बाहुल्य की दृष्टि से ये दोनों रचनाएँ आदि कालीन हिंदी जन साहित्य की बहुत ही महत्वपूर्ण रचनाएँ मानी जायेंगी ।

प्रारंभिक काल की परवर्ती रचनाओं के अंतर्गत आने वाली धार्मिक सिद्धांतों का पापक गद्य साहित्य की एक बहुत ही सुंदर कृति—“तत्त्व विचार प्रकरण” है । इस कृति का रचना काल म० १० के लगभग है । इस प्रति का प्रकाश मला का श्रेय श्री अग्ररचद नाहटा को है ।<sup>२</sup> लेखक को यह कृति भी उही के सौजन्य से प्राप्त हुई । श्री नाहटा जी का यह रचना षोडशे के बड़े ज्ञान भंडार को सूची बनाते हुए अभर्षासह भंडार में जिन प्रभसूरि परपरा की २३० पत्रा वाली एक प्रति में लिखी हुई मिली ।

तत्त्व विचार प्रकरण इन गद्य कृतियों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है । इसका समय १४ वीं शताब्दी निश्चय रूप से होना चाहिए क्योंकि यह रचना जिसमें मिली है वह प्रति १५ वीं शताब्दी में लिखी हुई है और इस सग्रह में अधिकांश जिनप्रभसूरि जी तक की ही रचनाएँ उपलब्ध होती हैं, तिनका रचना काल १४ वीं शताब्दी है ।

तत्त्व विचार प्रकरण सग्रह की प्रति के १३५ में १३८ पत्राओं में लिखी हुई है । इस सग्रह में १३ वा १४ वीं शताब्दी की अनेक पद्यबद्ध रास चतुष्पादिका त्रिपदिका माम दोहक आदि महत्वपूर्ण रचनाएँ मिली हैं । तत्त्व विचार में धर्म के कुछ महत्वपूर्ण अंगों का प्रकाश मिलता है ध्यावका के लिए नियम मापका के लिए व्रत तथा त्रिपदिका शतांश पुरुष चरित तथा

१ प्राचीन गुजराती सग्रह, पृष्ठ ८२

२ देखिए राजस्थान भारती, भाग ३ अंक ३४ पृ० ११७-१२०



भोग परिभोग आहार और आवश्यक धम और अरिहृत देवता के विषय में गद्य के बहुत ही सुन्दर उदाहरण मिलते हैं —

४ भाग परिभोग व्रतु द्विविध भोजनत वमत ज भोजन । तताइ दुविधु भोगविवइ । आहाए तबोलु फलू विलपनु । परिभोग ज पुणु पुणु भोगविषइ । भवन विरतया । आभरण वस्त्रादिकु—सवहि परिभोगु निषघ कीजइ ।

५ एउ वारह विष आवक धम होइ । धम सम्यकरव मूलु । त किसउ ? अरिहृतदेवी गुरूणा सुसाहणो जिणमय महापकाण ।

६ अरिहृत देवता किसउ होइ ? चउत्रीश अतिदाय सयगत्तु अष्ट महाप्रति हाय क्त धोभु अष्टादग दोष रहितु । नीरागु । निर्दोषु । सवश ॥ और अत म कृति का उद्देश्य तथा मुख्य सवेना निम्नांकित गद्यांश द्वारा समाप्त होती है —

७ वारहे भेदे तपु कीजइ । सतरहे भेदे सजमु पालियइ । आठप्रवचन माता उपयोगु दीजइ । रजाहरणु । मुठ्ठती । गोछउ । पडिगएउ घरइ ॥छ॥

एय तत्त विवार रइय सुय सागराइ उद्धरिय

धोवकखर महत्य भवाण मणुगट्ठाण ॥ छ ॥

तत्व विचार प्रकरण समाप्तमिति ॥ छ ॥

उक्त सभी उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कृति धम प्रचार, चारित्र्य, सधम और सुखानार के परिपालनाय लिखी गई है साथ ही दान आवश्यक व्रत, अरिहृत आदि गूढ बातों की सरल व सम्यक् परिभाषाएँ भी लेखक ने दी हैं । अतः स्पष्ट है कि लेखक ने यह रचना जन साधारण के लिए लिखी है ।

साथ ही जन धम व दर्शन की कुछ बातों को भी कवि ने जन साधारण के लिए सुलभ बनाने का उत्तम प्रयास प्रश्नोत्तर शैली को अपना कर किया है ।

प्रास्तुत रचना के वष्य विषय धार्मिक हैं । लेखक ने वसमें विभिन्न धार्मिक तत्वों का विश्लेषण किया है, उनकी पद्धति पहले प्रश्न रूप में एक सूत्र रखकर उसकी व्याख्या करने की है ।

तत्व विचार के प्रकरण में हम कोई भी बया या श्रृंखलाबद्ध वर्णन उपलब्ध नहीं होते और उपलब्ध गद्य में एक उत्कृष्ट गद्यात्मक जालिष्य का अभाव है पर तु वष्य विषय अत्यन्त कठिन होने पर भी लेखक ने बोलचाल की भाषा में उसे समझा कर जन साधारण के लिए सुलभ बनाया है ।

**भाषा—**

जहाँ तक तत्व विचार की भाषा के निषय का प्रश्न है, यह बहुत ही सरलता से कहा जा सकता है । कि यह सरल गद्य है उपलब्ध गद्य रचनाओं



रचना तत्कालीन गद्य की सम्पन्नता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करने में सक्षम है। गद्य की सम्पन्नता का कुछ उद्धरण एतदर्थ यह जा सकते हैं —

(१) उज्जयिनी नामि नगरी तहिठ भाज्जेवु राजा । तीर्थहि तणह पचह मयह पडितह माहि मुट्टु घनपाल नामि पडितु । तीर्थहि तणइ धरि अ यदा क्त्वापि साधु विरहिण निमित्तु पड्ठा । पडितहणा भाया श्रीजा दिवस हणा दधि लज्ज ऊन बोजतु काई तिणि प्रहावि ब्रनिया विहरावण सारी लज्ज नहुतउ ब्रतिया भणियउ कता दिवसहणी दधि । तिणि ब्राह्मणा भणियउ, तीजा दिवसहणा बनि—

(२) ब्रनिया ठाला नोसरता पडित घनपालि गवाञ्जि उपविष्टि हुतइ हीठा । विणवियउ किसइ कारणि ठाना गवाञ्जि उपविष्टि हूनइ नीठा । विण वियउ किसइ कारणि ठाना नोसरिया पडियाणी दधि दियह छह । तदन लह गवाञ्जि हुतउ उठिउ महामुनि ममोउ अविषउ । महामुनि ब्रनिया । भववनहु । किसइ कारणि दधि न वियरु महामुनिहि मणियण । श्रीजा दिवसहणी दधि न उदगरो । पडितु भण " किसउ दधि माहि पुण पूपरा छई ? तउ महामुनि भणइ कुलिणि हुयउ ।

(३) तहिवार घनपाल पडित प्रतिबोध हुयउ । परम श्रावक हुयउ । तउतिणि श्रावक विधि कीधी अनइ इमउ अगिग्रह कीयउ, तीर्थ गुरु देव मूनिउ । अनरउ इणि जीम करउ स्तवउ नही । अ यण परमेश्वर रूपम नायणउ चरितु रूपउ । ब्राह्मण जाइउ भोज्जेव राजा लागइ कहियए । भोज्जेव रइ पुस्तकु अणाविउ । वाचियए । भणियउ पडितराजा चरित्र स्वरउ विपिद्धाआ । पुणु जहिठे रुग्गमनाधु घानियउ छइ तिणि स्वानकि महेशवरु पाति । घनपाल पडितु भणइ तीर्थ गुरु देव मूनिउ अनरउ न स्तवू ।

(४) भोज्जेवु राउ अति आग्रहि लागउ । घनपाल पडित रोम चढी । सीपालउ हूनउ । मगही बलती हुतिपहि माहि घानियउ भाज देव राजा वार्ता पुस्तकु वालियउ बइठान ऊठिया राति कहिठ पडियाणी पूछियउ किसइ कारणि भभाविवि करउ ? घनपाल पडिति भणियउ परमेश्वर हणउ चरित्रु कीयउ अनइ वालियउ । तउ कष्ट । तिणी भणियउ तुम्ह करता मो केताहि एक श्लोक आविया । पडितु भणइ कहि पडियाणी जेतला पद आविया सेना कहिया । पडिति कतउ एहु चरितु रूपम नाय हणउ कीयउ ।—

उक्त उद्धरण से रचना की भाषागत सरलता, सरलता तथा सीं दय का अध्ययन किया जा सकता है। हिंदी साहित्य की कथात्मक रचनाओं की परम्पराओं में घनपाल कथा का स्थान सर्वप्रथम माना जा सकता है।

### अभ्युदय काल (गद्य)

गद्य के प्राचीन काल में उपन्यास होने वाली इन रचनाओं के पश्चात्





- (३) कल्याण मंदिर बालावबोध स० १४८५ मुनि सु दरसूरि शिष्य  
 (४) उपदेश माता बालावबोध सोमसुंदर सूरि  
 (५) पष्टिशतक बालावबोध स० १४८६ सोमसुंदर सूरि  
 (६) योगशतक बालावबोध अज्ञात  
 (७) भक्तामर स्त्रोन बालावबोध स० १४३० अज्ञात  
 (८) नवतत्व बालावबोध स० १४०२  
 (९) पयत आराधना बालावबोध दयासिंह  
 (१०) पडावश्यक बालावबोध  
 (११) विचार  
 (१२) क्षेत्र समास बाला स० १४२९  
 (१३) शीलोपदेश माला बालावबोध  
 (१४) सप्रहणी बातावबोध स० १४९७  
 (१५) श्रावक बहुदतिचार स० १४५६ के आस पास जयशेखर सूरि  
 (१६) पृथ्वी चंद्र वाग्बितास स० १४७८ मानिक्यसुंदर सूरि

इन रचनाओं में अधिकतर रचनाएँ बालावबोध संज्ञक हैं।

प्रयो म बालावबोध एक शली ही हो गई थी। इसे हमारे मन में बालावबोध भाषा टीकात्मक पद्धति कहा जा सकता है। वास्तव में जैन धार्मिक गद्य अधिकतर प्राकृत भाषा में लिखा गया है। अतः जन साधारण के लिए सगल सुलभ बनाने के लिए जन विद्वानों, लोक सेवक जन कवियों और उनके अनुगामियों ने उसे जन भाषा में बोधगम्य तथा सरल अनुवादों, टीकाओं, विस्तृत टिप्पणियों आदि रूपों में प्रस्तुत किया। साथ ही उ होने एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी किया कि शास्त्रीयता के बंधनों में कसे प्रया के आधार पर स्वयं भी मौलिक ग्रंथ रचे है। अधिकतर यह अनुवाद और टीकाएँ प्रमुख दो रूपों में मिलती हैं — १— टब्बा

२— बालावबोध ।

### टब्बा

यह भी टीकात्मक पद्धति है। इस रूप में जैन टीकाएँ इस समय की बहुत ही कम प्राप्त हैं। इस प्रकार की शतों में विस्तार नहीं होता। इस शली का गित्य बहुत ही संक्षिप्त होता है। बालावबोध से इसका आधार अत्यंत सूक्ष्म होता है। इस शली में पहले मूल शब्द लिखा रहता है। और

(१) देखिए— ततदथ लेखक का साहित्यकार पृ २ अंक २०, पृ० १० में हिन्दी साहित्य की प्राचीनतम गद्य रचनाएँ—शीपत्र लेख,



विगण धम सूत्र, या स्थान सिद्धा व या किसी उपदेश प्रधान तत्व से होता है। वस्तुतः इस शला का पहल तथा कालांतर दोनों कालों में खूब प्रचार हुआ। यह शला भाषा टीकात्मक पद्धतियों में सबसे उत्कृष्ट तथा प्रधान है।

उक्त भूचा में दी हुई इन छानियों का वर्गीकरण विषय के आधार पर वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

- (१) व्याकरण मूलक गद्य साहित्य
- (२) कथात्मक गद्य साहित्य
- (३) धम सम्बन्धी गद्य साहित्य
- (४) ऐतिहासिक गद्य साहित्य
- (५) गद्य काव्य का उदभावक एवं प्ररक गद्य साहित्य
- (६) अथ (विविध विषयक)

व्याकरण और कथात्मक गद्य साहित्य के साथ साथ धार्मिक साहित्य के रूप में मिलन वाली अनेक जन गद्य रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। यो प्रमुख रूप में यदि देखा जाय तो प्रारम्भिक और अम्बुदय काल दोनों कालों में मिलने वाला रचनाओं में अधिकतर जैन रचनाएँ धार्मिक गद्य की ही हैं परन्तु फिर भी गद्य के क्षेत्र में जैनाचार्यों द्वारा लिखा सरल गद्यात्मक कथा साहित्य नियम मूलक गद्य साहित्य भाषानुवाद, टिप्पणियों टीकाशा भाष्यो, और बालव्याध व्याकरण आदि के रूप में विशाल सख्या में उपलब्ध होता है। इस धारा का विस्तार में परिचय आगे के पृष्ठों में दिया जायगा। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक जन गद्य साहित्य अजन गद्य साहित्य गद्य काव्य का प्ररक साहित्य तथा अथ विविध विषयक गद्य साहित्य भी महत्वपूर्ण हैं जिसका विस्तार में विश्लेषण इस प्रकार है —

### व्याकरण मूलक गद्य साहित्य

गद्य साहित्य के अम्बुदय काल में व्याकरण मूलक गद्य रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थों की परम्परा गद्य के प्रारम्भ काल से १३०० में ही मिलन लगती है। व्याकरण पर लिखी गई इन छानियों की परम्परा का श्रीगणेश सप्तमसिद्ध की सम्बन्ध १३३ की रचना बालशिला के द्वारा है। बालशिला राजस्थानी का एक महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ है। जसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस ग्रन्थ में बालका का व्याकरण की शिक्षा दी गई है। संस्कृत ने बहुत ही सुगम शली का प्रयोग किया है। व्याकरण सम्बन्धी



कीजई, दीजई । लीजई इत्यादी कर्मणि वतमानाया  
आत्मनेपदम् । करिजे, लेजे, देजे, इत्यादी एकारात् वचने सप्तमी । २।

काजउ दाजउ, लीजउ इत्यादी कर्मण्यत्मानेपद ।

म कीधु म लीधु म दीधु इत्यादी कर्मणि मा शब्दयोग जई वरत,  
जई तेत, जई दत, इत्यादी क्कियातिपति

करि सिई, लेस (स ई, देसिइ इत्यादी नहीं करई, नहीं लियई, नहीं  
दियई इत्यादी भविष्याति

अथ क्तुनप्रत्यय प्राप्ति माह

करतउ, लतउ, देतउ इत्य ङी क्तुनिरि वतमान शतडानशो । कीजतउ,  
लाजतउ, दीजतउ, इत्यादी कर्मणयानाश ।

करीउ, लउ, देउ इत्यादी कत्वा ।

करो जाणु, पढो सकउ, करिबउ लेवउ नेवउ इत्यादी कर्मणि तन्वा  
नीयो ।

( अथ विशेष प्रत्यय प्राप्ति माह )

करावई, कराविवउ, कराविसई, करावतउ, करायो, कराविवा  
इत्यादी इनतात् प्रत्यया । ( उचित प्रक्रम पठ )

उक्त उदाहरणो स कृति मे राजस्थानी शब्दो के माध्यम स वर्णित  
व्याख्यात्मक शली स्पष्ट होती है । वस्तुतः बाल शिखा का महत्व व्याकरण  
ग्रयो पर लिख ग्रयो मे सव प्रथम कृति होने के कारण और भी बढ जाता है ।  
इस रचना स स्पष्ट है कि इसमें बाल चाल की भाषा का स धारण स्वरूप  
है । पहले ही लेखक ने जिन शब्दो का प्रयोग किया है उनका विभिन्न  
कालों का स्वरूप देखा जा सकता है —

वतमान में —	दियइ करइ, दीजइ, कीजइ लीजइ आदि
विधित्तिग —	करिज देज, लेज ।
सोट —	करि लइ, दइ, कीजउ दीजउ आदि
भूतकाल —	कीकउ लीघउ
भविष्यकाल —	करिसि, देसि, करिसिइ देसिइ, कीजिसिइ दिजिसिइ आदि

वृद्धत साधारण —	करिवउ, नेवउ
वृद्धन वतमान —	करतउ, नेतउ कीजतउ दीजतउ,
भूत वृद्धत —	कीघउ दीघउ लीघउ,
भविष्य वृद्धत —	करुणा इस देणा इस

उनके गल्पा तथा क्रिया रूपो का अध्ययन इन उदाहरणो मे किया जा  
सकता है — की, ली, ती, दी, ( वही, जहा, तथा ) । दिवडा ( हमणा )



आदि ज्ञानों को हृदयगत करने का पर्याप्त होगी। इन उदाहरणों से गद्य के तत्कालीन रूपों का समयात्मा मन्तव्य है। लेखक न कृति में विभक्तियों पर विचार किया है तथा याद गद्य हृदय त भेद, उक्ति भेद आदि पर भी विस्तृत प्रकार बाला है। कृति अनुवाद रूप में है

- (१) ज कीजइ लीजइ दाजइ, पढाइ, गुणीइ, इत्यादि बालिवइ, युक्ति क्रिया करी माहि ज वस्तु कर्ता व्यापरीइ त कम। तिहा द्वितीया। चत्रु कटुकरइ। करइ इसी क्रिया। कठण करइ चत्रु। जु करइ सु कर्ता। निहा प्रथमा। किसउ करइ, कटु ज कीजइ त कम्म। तिहा द्वितीया। चत्र कट कराति। एव चत्र काष्ठ दहति। ग्रामयाति। नाम्त्र पठति।<sup>१</sup>
- (२) जहनइ वारणि क्रिया कर्ता कम्म हुइ। अनइ जहरहुइ दान दाजइ कोष कीजइ तिहा संप्रदानि चतुर्थी। विवेकिउ मांशइ कारणि खपइ। खपइ इसी क्रिया इत्यादि। धम्म सुखनइ कारणि हुइ। क्रिया कर्ता पूर्ववत्। किमानइ कारणि धम्म हुइ, सुखनइ। निहा चतुर्थी। साधु मोक्षनइ कारणि तपु करइ।
- (३) जिहा देश कानि जहनइ विणइन इत्यादि इ वारनइ बोलिवइ जे कर्तनत्र अथवा जे कम्मनउ आधारु हुइ ते अधिकरण तिहा सप्तमी। चत्रु ग्रामिषसइ क्रिया कर्ता पूर्ववत्। जिहा वमइ, ग्रामि। तिहा अघारि सप्तमी।

क्रियात्रा या विश्लेषण भी सुंदर है

- (४) मेधि वरिसाइ मोर नाचइ। नाचइ इसा क्रिया। कठण नाचइ मोर ज नाचइ ते कर्ता। तिहा प्रथमा। किपइ हतइ नाचइ मेधि भाव लक्षणि सप्तमि। कारका का विवेचन भी सुंदर है —
- (५) छ कारक सातमउ सम्ब धु, कर्ता करण, सम्प्रदान अर्थात् अनु अधिकरण, सम्बधु जु करइ सु कर्ता। ज कीजइ त कम्म। जाण वारी क्रिया कीजइ त करणु। यह देवतणी वाछा। ये ह रूपइ काइ। परीइ काइ त वारकु सम्प्रदान सत्तकु हुइ त वारकु अरा दान सत्तकु हुइ। जह क हं ज माफि वेह पास जेह तणउ, जह तणी तणउ तेज रहौ इत्यार्थ सम्ब धु। ग्रामि, अनइ क्षयि, वनि, विनि मासि बाहोर इत्यार्थ अधिकरण।<sup>२</sup>

दूसरी रचना ओचितर है। इस रचना को भी दलाल ने १७ वाँ

१ प्राचीन मुद्रराती गद्य सदन

२ राजस्थानी गद्य का विकास, अप्रकाशित प्रबंध लेखक श्री निवसदरूप शर्मा, पृ० ६८





वस्तुतः इन सभी कथाओं में विषय की मुख्य संवेदना, धर्म प्रचार, चरित्र निर्माण और ज्ञान प्राप्ति ही है। कथात्मक पद्धति से इन रचनाकारों ने श्रोताओं के मनावज्ञानिक पावन का स्पष्ट किया है। इन कथाओं द्वारा वर्णित मनोविज्ञान भी उत्कृष्टतम है। जैन दशम, आचार कर्म, तथा भक्ति व धर्म के विभिन्न अंगों जैसे कठिन व दुर्लभ विषयों पर प्रकाश डालने और उनको सरलतम भाषा में समझाने के लिए जैन लेखकों ने यह कथात्मक शैली अपनाई है और वर्णन पत्रों के लिए कथात्मक गद्य को ही ठीक समझा है। अतः ये कथाएँ अत्यन्त सरल, स्वाभाविक भाव प्रधान, उपदेश नीति, तथा चारित्रिक गरिमा वाशक सिद्धांतों और उपासना पद्धतियों को स्पष्ट करती हैं। इन कथाओं में महत्वपूर्ण कथाएँ प्रमुख जैन विद्वान् तर्क प्रभसूरि के प्रथम स० १४११ से ही उपलब्ध होती हैं इनमें प्रमुख रूप से सम्यकत्व, वारव्रत, धावक अतिचार, उपवेशमूलक, गृहस्थधर्म तथा योग शास्त्र, नमस्कार वाला वयोध, तथा प्रमाणक आदि अनेक विषयों पर लिखी कथाएँ उपलब्ध होती हैं। इन गद्य कथाओं का रचयिताओं में प्रमुख प्रमुख रचनाकार हैं—श्री तर्कप्रभसूरि ( स० १४११ ) श्री सामसुन्दरसूरि ( स० १४५०-१४९९ ), श्री माणिक्यसुन्दरसूरि ( स० १४७८ ), श्री हेमहर्षण ( वि० स० १५०० ) आदि हैं।

विभिन्न विषयों तथा उपदेशों के प्रचाराय जन भाषा में लिखी गई इन गद्य कथाओं में द्वादश ग्रंथों पर लिखी गई अनेक कहानियाँ हैं। विषयानुसार इन कथाओं में कुछ का उदाहरण, नीचे भाषा तथा इनके प्रवाह का अध्ययन करने के लिए नीचे दिए जा रहे हैं —

- (१) सम्यकत्व तथा व्रतों सम्बन्धी रचयिता श्री आचार्य तर्कप्रभसूरि स० १४११ यथा प्रथमव्रत ऊपर चद्रसूर राजा पुत्र कथा प्रथम अहिमा व्रत पर लिखा एक कथा के गद्य का उदाहरण देखिए —
- (१) जय पुरु नामि पुरु । शत्रुपय नामि राज । सूर चद्र नामह करी वि पुत्र । ज्येष्ठानुरागि करी राजेंद्रि ज्येष्ठु युवराजा कोषठ । व्रति करी । चद्र पति मायाई करी गणित नहीं । तब अपमान बगहनउ चद्रि गगतु स्तीषठ ।<sup>१</sup>
- (२) वासती नामि नगरी, कीर्ति पालु नामि राजा भीमु नामि तेह तणउ पुत्रु । पुत्र ही कर्हा अति वरामु सिद्धु नामि श्रेष्ठि । सुपुणु परम आवकु जिन भक्तिवतु यत्तई । अनेइ नि तभा माहि

कीर्ति प्राप्तु राजा मिह श्रुति मुग कमनु भ्रमर त्रिम जामगठ  
 हठत वनह । नेत्रसह प्रमावि प्रनीहाम् आवी गत्र इरहृद बीनपद  
 मत्तरात्र । सुम्हरहृद देगलहाण एहु पुक्तु निव्याहाम् द्वारि आवि  
 उ दर । राजा म-हि माहि मेतिह ।<sup>१</sup>

सम्बन्धत तदा धावको वे आचार पर भा लनेक कयाए सपत्तय  
 है त्रिनकी भाषा आचरन सरन य प्रबाहृण है । इन कथाओं का प्रारम्भ करने  
 को यथा समभव एक ही है परन्तु फिर भी प्रत्येक कथा अपने में पूरा तथा प्रभाव  
 धारिणी है । भावत छोटे, पने तथा भाव पूरा है त्रिममें एक ही-य सवत्र विद्य  
 गान है वीसी में कहीं भी निमित्तता नहीं है । एकाग्र एक ऊपर तिमो  
 मनीदवक कथा का एक उद्धरण देसिए —

प्रमाण समह धन मातु ऐमी करा मरुण गण अनि एहु करतह  
 हृणह अष्टि पीमहृ पारी करा निवत हृय विधि मठ करिवा माणठ ।  
 पुणानु भावि देह नई पत्रिबती पगाई त्रिपत्र हूया । प्रनेरह  
 नि मु अवरवाय विद्या पाण मठिना घरहृण । अ वरु पारी हृती  
 तेह वरु माहिउत एहु अमूतिहृ मुनगावमनठ हाक स करी  
 निनिहि त्रि नगरि बीबिवा आविउ । मु हाक मूक्तु अष्टि लणह  
 बाणरनि आवसिउ । मु पाण परी करी ततार रहृद आविउ  
 मु पार परण वताहु पुणु आगे करा इगउ व नवह ।<sup>२</sup>

इस कथाओं में उन भाषा भाषण का सरगना सवत्र विद्यमान है । विविध  
 विषयों पर निम्ना लक्षणात्मक अनक प्रकीर्ण कथाएँ एक ही प्रमाण है ।

एक बुद्धिवा पर तिमो एक लक्षणात्मक प्रमाणक कथा का एक उदाहरण  
 यहाँ देसिए —

एक मि एहि अति दहिहृणकरि बुद्धिवाण हाकरि एक हृती ।  
 हृणउ इमह, नामि मरुणउ दारिउत एहु हृणउ । मु अ त्रिविवा बागनि  
 काम स क तथा व नह पाणउ । अनेरह नि मुणगावमह उद्याव  
 वा हृणउ बाणरन आवमन हृणउ मु पति इविउ मरुण आवी  
 तिमो ई त्रि मरुणिय ऐण मरुणु हृणउ हृणउ इविउ । त्रिम बाण्टु  
 दिव्यहृणु हृणह त्रिम ए ई मही पाणि इविउ ।<sup>३</sup>

उक्त उद्धरण में डीकरि दीकिरउ वाउरु हठउ आउि सउठ ठेठ राजस्थानी के हैं जा आज भी बोल जाते हैं ।

उपरोक्त प्रधान धार्मिक कथाओं में अनेक नीतिमूलक कथाएँ मिलती हैं जिनकी मुख्य संवन्ना कवल पान या नश्वर समार से विरक्ति ग्रहण करना ही है । मगावती कथा का एक उदाहरण गद्य का प्राञ्जलता को पूणतया स्पष्ट करता है —

सवारा पुकडओ साप जातो दीठउ । चदन बानानु हाय परहद  
कीषन । चनबाला जागी । पूछइ पूछनुम्हे वा माहलू हाय  
हनाउिउ । मगावतीइ कहिउ माप जाइछ, तइ भणा । चनबाल  
माप न श्वइ । मगावतीइ कहिउ - तु किम दगइ ? तुक्षनइ कीः  
जान छइ ? तीणइ कहिउ कवल पान <sup>१</sup> ।

इसी प्रकार सामगु दर मूरि द्वारा अनूजित अनेक कथाएँ जन दगन पर प्रकाश डालती हैं । इन कथाओं में गन्धर्व क कत य तथा गहस्य धम के गुणा के सुन्दर वर्णन है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

- (१) तथा कुलशाले ज कुन बाप पिता मादिइ नउ बस कहीइ  
अनेइ गान मद्य मास राशि भानादिजनउ नियम रूप ए जाचार  
गहे बिहु नाने ररी ज समान सर पा हइ । कुनिइ करा आचारि  
करी न सर पा हइ ।
- (२) प्रसिद्ध चण्ड्याचार ज उत्तम मनुष्य मात्र प्रसिद्ध पेशा  
आचार भावनाचन्द्राधिक वाक यत्पार न ग ममाचरइ ते धम  
याप नहो ज ममाचरइ त धम योग्य ।
- (३) राजाउि राजा मन्त्रावर पुरोहित श्रेठा प्रमुख माटानउ अवण  
वाउ विगपिन राजइ । ते बीजता इ वाक इ लभमाना हानि  
जीवित य विनागा क साप ऊजइ तह भणा कहिनउ दोष  
य तइ ते धम योग्य ।<sup>२</sup>

इस प्रकार हिंदी गद्य साहित्य के अनेक उदाहरण इन आदिकालीन कृतियों के प्रस्तुत किए जा सकते हैं । यद्यपि इनसे अत्रिकाय कथाएँ अपने पूर्ववर्ती विद्वानों ने संस्कृत और प्राकृत कथाओं में अनूजित हैं परंतु तो भी इनके उदाहरणों में तरफाकीन भाषा के गद्य क्रम और विकास का इतिहास स्पष्ट हो जाता है ।

१ प्राचीन गुजराती गद्य सदन पृ० ७०

२ पटी, पृ० ११८ ११९



विद्वत्ता का परिचय मिलना है। विषय वस्तु यद्यपि धार्मिक है, परन्तु हिंदी साहित्य की प्राचीनतम गद्य रचनाओं में अम्युदय काल या स्वर्णकाल की कृतियों में इस पदानुसंध कालावधि कृति का सबसे प्रौढ़ कृति कहा जा सकता है।

आचार्य सूरि का यत्नितम जीवन, जन्म आदि स्पष्ट नहीं होता। सहायक ग्रंथों में से ही कुछ परिचय मिल पाता है।<sup>१</sup> लगभग १३६० में दीक्षा व साहित्य साधना प्रारंभ हुई। तरुणप्रभ धुर धर महारथी थे तथा संस्कृत, प्राकृत और लोक भाषा या तत्कालीन बालिया में रचना करने में उनकी गवित अभूतपूर्व थी।

### ग्रंथ का शिल्प

कालावधि शैली, भाषा टीकात्मक पद्धति है, जिस पर पूर्व पंथों में प्रकाश डाला जा चुका है। प्रस्तुत कृति जन धर्म के छ आवश्यक कर्मों पर लिखी गई है जिसका मुख्य मकसद धर्मोपदेश, शील तथा धर्म प्रचार ही है। कृति का रचना काल स्वयं लेखक के शब्दों से स० १४११ स्पष्ट होता है। रचना शैली उपदेशात्मक है, शब्द छोटे और गभीर विवेचना करने में सक्षम है। आचार्य की कृति उनके गभीर अध्ययन, मनन और अनुशीलन का परिचय देती है। इसकी बंधारमक शैली उदाहरणार्थ अर्थात्तर यासों और दृष्टा तो स पुष्ट किय हुए गद्य की प्रस्तुत करती है।

जहां तक कृति की भाषा का प्रश्न है। ऐसी उत्तम गद्य कृति दूसरी नहीं है। संस्कृत प्राकृत और उसके साथ जन भाषा के उदाहरण समन्वित हैं। लेखक का भाषा पर अनाधारण अधिकार था। शब्द चयन गठन हुआ तथा गवित्य रहित है उमम एक अभूत-पूर्व सभार है। गद्यों का सुगठित स्वरूप हिंदी साहित्य में गद्य की तत्कालीन सम्पन्नता को सिद्ध करता है। आचार्य की काव्यात्मक प्रवाह गद्य की सरसता को और निम्नार देता है। कालावधि शैली में रचा गया यह पहला ग्रंथ है जिसे प्रौढ़ गद्य लेखक की अभिरुचि, जगता की धार्मिक मनोवृत्तियों एवं चरित्र को सरल करने के तरव तथा रचयिता के भाषा को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की असाधारण क्षमता है। कृति की भाषा दुर्लभ नहीं, पथम सरल है। विलम्बता से यह कृति जोतों दूर है।

१ देखिए युगप्रधानाचार्य गुरुविली—प्रति (क्षमाशल्याण ज्ञान मंडार वीकानेर में सुरक्षित)



- ४ भवनामर स्तोत्र बालावबोध
- ५ नवतत्व बालावबोध
- ६ पयस्य आराधना बालावबोध
- ७ पञ्चावश्यक नातावबोध
- ८ विचार ग्रन्थ बालावबोध

इन ग्रन्थों के कुछ उद्धरणों पर विचार किया जा सकता है। क्योंकि इन कृतियों की शला गिल्फ और वस्तु में लगभग पर्याप्त समानता है। इन कृतियों में छोटी छाटा कथाएँ हैं। भाषा अधिकांश कृतियों की प्राचीन राजस्थानी या जूनी गुजराती है। इनमें उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। प्राकृत और मस्कृत के दुर्लभ वाक्यों का सरलतम बनाने के लिए तथा जनसाधारण के लिए सुलभ करने के लिए ही इन कृतियों की रचना हुई है। योगशास्त्र, हेमचन्द्र का ग्रन्थ है, उस पर दो बालावबोध हैं जिनमें कथाएँ लिखी गई हैं।

जहाँ तक इन ग्रन्थों के साहित्यिक तत्व का प्रश्न है वह अधिक नहीं है फिर भी इन कृतियों में भाषा की कठियाँ स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। उक्त रचनाओं में सभी का विश्लेषण करना यहाँ संभव नहीं है। कवय एक दो का परिचय तथा गद्य के उद्धरण यहाँ दिए जा सकते हैं।

उपरोक्त माता बालावबोध आचरण की पवित्रता पर प्रकाश डालने वाली छोटी बड़ी प्राकृत कथाओं का ग्रन्थ है। रचना का उद्देश्य धार्मिक उपदेश है। प्राकृत गाथाओं का विश्लेषण करने के लिए ही रचनाकार ने उनकी व्याख्या गस्तुत की है। योगशास्त्र बालावबोध श्री हेमचन्द्र सूरि का लिखा संस्कृत ग्रन्थ है। श्री सोम सुन्दर सूरि ने उसी पर यह बालावबोध लिखा है। रचना के नाम से ही स्पष्ट है कि लेखक ने उसमें योग सम्बन्धी तत्वों का विश्लेषण किया होगा। इस ग्रन्थ में योग की स्थिति, योग के गुण वर्णन, पंच महाव्रत, आदि के सात आवश्यक के गुण सम्यक्त्व का विश्लेषण इन्द्रियों का वर्णन, मन का गुच्छिन्नकरण और उसका स्वरूप, भावनाओं का वर्णन, नौ आगनों तथा अविचार और आवश्यक के पाँच अणुसत्तों का परिचय मिलता है। इन धार्मिक उपदेशानों की भाषा सरल है। कथाओं की सरसता से धमकत उपदेशों की सारी दुर्लभता मिट जाती है। इन कथाओं में भाषा के विकास के सोपान हैं।

दोनों कृतियों में साहित्यिक तत्व साधारण हैं। यह सही है कि पञ्चावश्यक बालावबोध की भाँति ये रचनाएँ प्रौढ़ नहीं हैं परन्तु फिर भी गद्य





वासति नगरी, कीर्तिपाल राजा । भीम बेटा । राजानइ मित्र सिं  
 श्रुति । एक बार दूत एक जावी राजा तइ बीनवइ—स्वामी नागपुरि  
 नगरि नागचंद्र राजा तणउ गुणमाला कया । ते ताहरा पुत्र हइ ।  
 दर बाछइ प्रसाद करउ । पुन मोकलउ राजा सिंघ श्रुति नइ कहिउ  
 जाउ कुमर नउ रिवाह भहोःसव करि जावउ श्रुति कहइ —नागपुर  
 इहा थकउ सी जाजण पाझेउ हइ मझ रहहि । तउ सी जाजण  
 उपहरउ जावा नीम छइ । तह भणी मही जाउ राजा कुपित कहइ  
 जउ नहि जाअ तउ तुहइ उटे घाली । जोजण सहस परइ  
 मूकाविसु ।<sup>१</sup>

बालावबोध शैली के जय कई ग्रंथ मिलते हैं, जिनमें खरतर गच्छ के  
 मरुसु दर मूरि क नाम उल्लेखनीय है । इनका रचना काल स० १४८७  
 स १५३० तक है । राजस्थानी में इनकी अनेक टीकाएँ उपलब्ध होती हैं ।  
 बालावबोध रचनाओं में सबसे अधिक इन्हीं की हैं । ये रचनाएँ इस  
 प्रकार हैं —

- (१) शीलोपदेशमाला बालावबोध ।
- (२) पुष्पमाला बालावबोध ।<sup>२</sup>
- (३) पढावश्यक बालावबोध ।<sup>३</sup>
- (४) शत्रु जय स्तवन बालावबोध ।<sup>४</sup>
- (५) वपूर प्रकरण बालावबोध ।<sup>५</sup>
- (६) योग शास्त्र बालावबोध ।<sup>६</sup>
- (७) पव निग्नयी बालावबोध ।
- (८) अजितशक्ति बालावबोध ।
- (९) भावाभिवारण बालावबोध ।
- (१०) कल्प प्रकरण बालावबोध ।
- (११) योग प्रकाश बालावबोध ।
- (१२) पण्डित शतक बालावबोध ।

१ यभयजैन ग्रंथालय बीकानेर में सुरक्षित ।

२ वही, संग्रहालय ।

३ पु० सद्य भंडार पाटण में ।

४ वही ।

५ वही ।

६ गोपीजी भंडार उज्जयपुर तथा मुनि विनयसागर संग्रह, काटा ।

(१३) बामनस्युक्तकार बामनशाय ।

(१६) विश्व सुत महान बामनशाय ।<sup>१</sup>

इन कृपा के अनिरीकृत मन्सुत्तर सूत्रि का कुल अर्थ रचनाएँ मा  
 १५ है ।<sup>१</sup> राक्षस ना गद सितने में मन्सुत्तर की सुभा रचनाएँ पदार्थ  
 पूरा है ।<sup>१</sup> रचनाएँ विदित विषयों पर विद्या गुरु है, पर अर्थिका  
 जो व दूत गामिह है । ज्ञा भी है, यह सत्य है कि कि नी उन याम्म  
 गिनानान बामनशाय सगत द्विती गद रचनाएँ विगत सदा में  
 २४ है ।

### सोत्रर सूत्रि

जयन्तरसूत्रि (म० १४०० १४६२) जयन्तर प्रमुग गद गगत  
 महोन २६ प्रथो का मन्म विद्या ।<sup>१</sup> जयन्तर सूत्रि अने गमद के  
 २ बदि तथा मापाय २४<sup>१</sup>, जिनकी जैन अर्थ विषयों पर जोड  
 १५६ रचनाएँ मिलता है ।

विमुक्तन दावक प्रवृत्त जय अर्थ कामों के जय विमोचन गद प्रका  
 । अर्थना स्थान बनाता है । इका प्रमुग प्रवृत्त आवक सदाविपर है ।<sup>१</sup>  
 अनिरीकृत इम काल के गदकारों में गगाम्मद क था म पुत्रम गुरि का  
 २ विषय बामनशाय (म० १४१६)<sup>१</sup> इमहासि (म० १५०१) का  
 २४ बामनशाय १ भासि रूप प्रमुग है । इन गदकों का रचनाक्रम में  
 गद क गगत हात है । २४६ रचनाओं का गगत गगत है, जिनका  
 २४ अर्थ है । गगी अर्थ प्रो में प्रमुग । —अर्थ गगत प्रतिष र

(स० १४६६)<sup>१</sup> तथा कालिदासाय कथा<sup>२</sup> (स० १४८५) इमें कालिकाचाय कथा बड़ी महत्वपूर्ण है। गद्य की शैली में यह रचना काव्य का ही उस घोलती है। प्रासादिक शैली में माधुम्य का उभेय दृष्ट्य है। नाहटाजी के भंडार में यह रचना सुरक्षित है। शब्द चयन सरल, लावण्यता, प्रासादिकता अनुप्रासात्मक याचना दृष्ट्य है। उदाहरण और दृष्टान्तों की तो घटा ही उमड़ी जाती है। एक उदाहरण इस परंपरा का उल्लेखनीय है —

(१) जिसउ चचल इन्द्रधनुष मु आवार, जिसउ चचल मन नउ व्यापार। जिसउ चचल बीमनु भूत्वार। जिम दीहिलउ ए चारित्र। जिसउ चचल ठाकुरनउ अधिकार। जिसउ पीपलनु पान तिसी चचल राज्य लक्ष्मी जाण। तुम सरीखा सुबिरबी प्राणी इसीया मसार रूपीया कूआ माहि काइ पढइ दुगति काइ रडवडइ ।<sup>३</sup>

इस प्रकार धार्मिक गद्य साहित्य में बालाववाच टोका साहित्य और अतिचार सनक रचनाएँ अधिक मिलती हैं, जिनका लक्ष्य धार्मिक होते हुए भी उनमें साहित्य और भाषा विषयक सौंदर्य पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है।

## (४) ऐतिहासिक गद्य साहित्य

गद्य की इस धारा में इतिहास से सीधा सम्बन्ध रखने वाली कुछ गद्य रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। इन ऐतिहासिक रचनाओं में कुछ महापुरुषों जैनाचार्य और गण, गच्छ तथा पट्ट का परंपरा विवरण मिलता है। ऐतिहासिक गद्य साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाली इस प्रकार की रचना अद्यावधि सिर्फ एव ही उपलब्ध हुई है परंतु अजमेर, रागौर, जैसलमेर, दिल्ली, मेरठ गुजफ्फर नगर अम्बाना छावनी, आदि स्थानों के राजभंडारों की सम्बन्धी घोषणा पर, यह बहुत संभव है कि इस दिशा में योग देने वाली कई गद्य की रचनाएँ उपलब्ध हों।

ऐतिहासिक गद्य साहित्य में पहली उपलब्ध प्रति गुर्वावला है। रचना बीकानेर में सुरक्षित है। रचनाकार श्री गिनवदन है और रचनाकाल स० १४८० व. ऋणभंग। गिनवदन ने इसमें तपागण्ड के जैनाचार्यों की पट्ट नामावली महाशार स्वाभी से सोमगुदर सूरि तक दी है। इसमें विशेषता यह

१ प्राचीन गुजराती सदर्भ, पृष्ठ ६६ मुनिजिगविजय।

२ अमय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर ग।

३ प्रति अमयजैन ग्रन्थालय बीकानेर।



वस्तुतः इसी प्रकार की गद्य रचनाएँ गद्य साहित्य के विकास क्रम में नया माह देना में सशम है ।

### (५) गद्य काव्य का उद्भावक एवं प्रेरक गद्य साहित्य

अभ्युदयकाल में गद्य का यही उद्भावक रचनाएँ मिलती हैं । इसलिए काव्यात्मक दृष्टि से अभ्युदय काल, आदिकालीन हिन्दी गद्य का स्वर्णकाल कहा जा सकता है । जब तक प्राप्त रचनाओं में तुक प्रधान गद्यात्मक रचनाएँ जिनका विवचन पहले किया जा चुका है, तो कई मितती हैं, परन्तु उनका काव्य की दृष्टि से महत्व साधारण ही कहा जायगा । या बहिष्कृत उनमें बहुत है तथा संख्या में भी कम हैं । गद्य का यही उद्भावक एवं प्रेरक गद्य साहित्य काव्य की दृष्टि से और भी अधिक महत्वपूर्ण है । अभ्युदय काल के पूर्व भी गद्यका यही भाँति सुपमा प्रस्तुत करने वाला गद्य कुछ अर्जुन रचनाओं में मिला है जिन पर विस्तार में आगे प्रकाश डाला जायगा । जैन रचनाओं में गद्य काव्य का उद्भव और विकास प्रस्तुत करने वाले तत्त्व अधिक मात्रा में परिलक्षित होते हैं, यद्यपि इनका काव्य अर्जुन रचनाओं से अधिक सम्पन्न नहीं कहा जा सकता परन्तु फिर भी जैन रचनाओं का ऐतिहासिक महत्व इस दृष्टि से अविस्मरणीय है ।

यहाँ गद्य काव्य शब्द का अर्थ समझ लेना भी आवश्यक प्रतीत होता है । काव्य के दृश्य और श्रव्य दो प्रमुख प्रकार होते हैं, जिनमें दृश्य काव्य में नाटक और श्रव्य काव्य में गद्य पद्यात्मक तथा मिश्रित रचनाएँ आती हैं । पद्य में जितने काव्य रचे गये हैं, उनमें अधिकांश छंद प्रधान होते हैं । पद्यात्मक विभाग के अंतर्गत प्रबंध और मुक्तक होते हैं और प्रबंध में महाकाव्य, सङ्घ काव्य तथा चरु काव्य भेद किये जा सकते हैं तथा मुक्तक के स्तोत्रस्तवन एवं सुभाषित होते हैं । पद्य का यही ही भाँति गद्य काव्य भी काव्य प्रधान होता है, पर उसको छंद के बंधन में बाँधना अनिवाप्य नहीं है । छंद को छोड़कर शेष सब काव्य के गुण उसमें देखे जा सकते हैं । यामिन ने गद्य के वृत्तगण उत्कलिका और चूणक तीन प्रकार तथा साहित्य-दणवार विश्वनाथ ने मुक्तक गद्य और कह कर चार भेद किये हैं । जिनमें पाद या पद के अर्थ जिस छंद में मिलता है उसे वृत्तगण, अन्य सभी समान प्रधान गद्य का उत्कलिका प्रायः छोटे छोटे समस्त पद को चूणक और समस्त पदों के अभाव वाले गद्य को मुक्तक नाम दिए गये हैं ।



साम्य प्राप्ति का भाषाभाषी गद्य की ऐसी कृति का अर्थ ही तिली हुई होंगी, जे प्राग अनुपलब्ध है । कई विभाषाओं में ता सम्यक्-सोध का अभाव भी इसका कारण हुआ है । जो भी हो यह स्पष्ट है कि आदिकाल की हिंदी गद्य-साहित्य परंपरा पर्याप्त प्राचीन है ।

गद्य और गद्य काव्य में भी अंतर है । गद्य के सम्पन्न होने के पश्चात् ही गद्य का यथा सृजन संभव है । गद्य का यथा रस पश्चात् होता है । रसात्मक काव्य गुणापत्त विशिष्ट शब्द संचय रूप, परछाया के बंधनों से रहित रचना गद्य काव्य के नाम से अभिहित है । साधारण गद्य को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता है । गद्य होने हुए भी जिसके पढ़ने और सुनने में पद्य का आनंद या रस मिले, वही गद्य काव्य है ।<sup>१</sup>

अतः गद्य काव्य में पद्य का आनंद अनुभूत कराने की शक्ति होती है । उसमें व्यंग्योपम आभावश्यक होता है और सरसता एक रस विद्यमान रहती है । अतः यहाँ इसी गद्य काव्य का परम्परा के इतिहास पर संक्षेप से विचार किया जा रहा है ।

जिस तरह गद्य का विकास पद्य के साथ ही साथ हुआ प्रतीत होता है ठीक वैसे ही गद्य काव्य का विकास भी पद्य काव्य के साथ ही साथ हुआ होगा । गद्य काव्य की प्राचीनता भी पद्य की प्राचीनता की भाँति ही पुरातन नहीं जायगी । वेदा में नहीं कहीं जो सरस भाषा मिलती है उसमें काव्य पद्य काव्य और रस पद्य की अनुभूति कराने वाला मिलते हैं । वेदों के पश्चात् महाभारत में भी गद्य काव्य के विकास में ऐसा प्रतीत होता है । महाभारत के पश्चात् जैन आगमों में गद्य काव्य के अवस्थित उदाहरण मिलने लगते हैं और इसी पश्चात् नाटकों को लिया जा सकता है । नाटकों के गद्य में भी गद्य काव्य का उत्पन्न में पुरा सहायता की है । भास, कालिदास, भवभूति आदि के नाटकों में सुंदर गद्यांगों में सुंदर गद्य काव्य के दर्शन होते हैं । सम्वत् ४५० में दण्डी का दण्डकुमार चरित, जो ईसा की छठी शताब्दी के आस पास में रचा गया है, गद्य काव्य की उत्कृष्ट रचना है । सुबधु की वामयदत्ता की भी नहा भुनाया जा सकता है । इस रचना का प्रत्येक पद्य ही सरस तथा रचना में शतपत्र बज्जीड निर्वाह है । वासवन्ता के पश्चात् गद्य काव्य में महान प्रगति पाणभट्ट हैं, जिनके प्रसिद्ध ग्रंथ कादम्बरी और हय चरित हैं । कादम्बरी सुंदर सरस और उत्कृष्ट रचना है,

१ दक्षिण-राजस्थानी गद्य काव्य परंपरा शीर्षक श्री अग्रचंद्र नाहटा का लेख





ह, जिसे गद्य काव्य वा पूर्वार्द्ध कहा जा सकता है।<sup>१</sup> अपभ्रंश में ता गद्य का स्वरूप मिलता ही है। इन प्राचीन ग्रंथों गद्य जिन जिन ऋणों में जैसा भा सुरक्षित मिलता है, उनका उद्धरण गद्य रचनाओं के इसी अध्याय में परंपरा के रूप में दिया गया है इन ग्रंथों में सबसे प्रमुख अथ कुवलयाला के कथानक, प्रवर्धितामणि के भाषा कथानक तथा उचित यचित प्रवरण में उद्धृत गद्यांश है। अपभ्रंश में सुन्दर गद्य का यकी अलग से कोई रचना अभी तक उपलब्ध नहीं होती पर भंडारा की शोध हान पर इस प्रकार की गद्य कायात्मक कई कृतियों के मिलने की आशा है क्योंकि यह कहना एकदम बहुत कठिन होगा कि अपभ्रंश उसी सम्पन्न भाषा के पास, जिसने इतने उत्कृष्ट महाकाव्य साहित्य को दिए है, गद्य का यकी अभाव है।

अपभ्रंश के उत्तर काल में गद्य का यकी रचनाएँ मिलने लगती हैं। प्राचीन राजस्थानी तथा जूनी गुजराती में गद्य काव्य के सुन्दर नमूने उपलब्ध हुए हैं। १० वीं शताब्दी का यम्बई के प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालय में स्थित शिलालेख<sup>२</sup> में राजल के नवगणित वर्णन में कवि ने उत्कृष्ट मौलिक उपमानों से युक्त सुन्दर गद्य का यकी लिखा है। अष्टादश आठि कालीन हिन्दी गद्य काव्य मूलक रचनाओं में सधन अधिक प्राचीन यही रचना है जिसका रचना काल या लेखन काल १० वीं शताब्दी का है। यह गिरातख अनेतर कवि का है और गद्य काव्य की परम्परा का प्रारंभ करने वाली सबसे प्राचीन आठि कालीन रचना होने के कारण गद्य का यकी उद्गम के रूप में तथा पृष्ठ भूमि के रूप में इस पर आगे जनतर (गौकिक) गद्यसाहित्य के प्रसंग में प्रकाश डाला जायगा। साथ ही मथिना की ठाकुर ज्वातिरीश्वर की रचना घणरत्नाकर—के गद्य काव्य का परिचय भी विविध उद्धरणों द्वारा दिया गया है, जो बहुत संभव है, गद्य का यकी परम्परा के उद्भव और विकास को समझने में सहायता करेगा। हिन्दी की प्रादेशिक भाषाओं, लोक प्रचलित परम्पराओं और मौखिक या अलिखित साहित्य में इस प्रकार की अनेक रचनाएँ अभी छिपी पड़ी होंगी जो संभवतः धीरे धीरे प्रकाश में आयें। मथिना की ही भाँति मातधी की अवधो ब्रज मगही, भोजपुरी, बुंदेलखण्डी आठि बोलियों में भी संभवतः गद्य काव्य की और भी रचनाएँ प्राप्त होंगी पर इन समय तक हिन्दी की इन प्रादेशिक विभाषाओं में प्राचीन राजस्थानी

१ वही, लेख वही प०।

२ लेखक द्वारा आदिनात पर की गई शोध में उपलब्ध रचना, सन् १९५७-५८ (डॉ० मानीचंद्र द्वारा साभार उपलब्ध)

या जूना पुत्रराशियों की कृतियों ने पर्याप्त भाग दिया है और वे रचनाएँ प्रकाशित होने के साथ साथ प्रामाणिक एवं विश्वमान्य हस्तलिखित प्रतियों के रूप में भी इन समय उपलब्ध हैं।

११। माहिष्य में एक काव्य की परम्परा प्रामात्र नहीं प्रकट होती। इसकी एक काव्यात्मक प्रवृत्ति का सम्बन्ध करने वाले एक प्राकृतिक भाग्यों में निराला काव्यात्मक रूप ही है। हिन्दू में वन मध्य की रचना ही विनाशों ने १७वीं शताब्दी के प्रारम्भ में शायी २। गोरमनाथ की सुन्दर रचनाओं का रूप में हीना मिलता है तथा उसका ज्ञान १३ वीं से १५ वीं शताब्दी तक बनाया गया है, पर गोरमनाथ की कृतियों की हस्तलिखित प्रतियाँ १८ वीं शताब्दी के पहले की उपलब्ध नहीं हैं। अतः मनु स्मृति प्रसंगिक नहीं कहें जा सकती। एतत्काल काव्य की प्राचीन सामग्र्य के आधार पर स्वतन्त्र सम्प्रदाय के अन्तर्गत भाषा दोनों का ही हिन्दू का प्राचीन एक रूप माना जाता रहा है परन्तु इस समय का परिष्कार भी विनाश प्रवृत्तियों में वर्तित हमारा प्राकृतिकान्ता हिन्दू मध्य माहिष्य की धारणाओं एवं उपलब्ध प्राचीन रचनाओं द्वारा ही जाता है। यदि सम्बद्ध काव्य लिखा गया के काव्यात्मक रूप का समझा मनु उक्तुन कहा जाय तो सम्बद्ध नहीं होगी तथा हिन्दू में एक की परम्परा १० वीं शताब्दी में ही मानी जा सकती है। हिन्दू माहिष्य में १७ वीं शताब्दी में लिखी सुन्दरियों की रचना (सं० १६३१) एक काव्य की उन्मूलनीय रचना है जो श्रीहानर का अन्तर्गत सम्बद्ध माहिष्य में प्रकाशित है।

मनु—हिन्दू का प्राकृतिक विभाषाओं में प्राचीन साठमनाथ का जूनी पुत्रराशियों की कृतियों की तब उपलब्ध रचनाओं का एक काव्य के मूल में सम्बद्ध काव्य भाग दिया है। साठमनाथ में एक काव्य का भाग में उपलब्ध पता है —

- (१) साठमनाथ
- (२) धार्मिक—  
एक दोनां के दोनां का ही रूप है —
- (१) सुन्दर
- (२) साठम

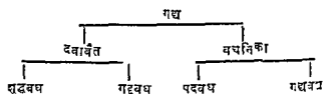
और यचनिदा के

- (१) एक काव्य
- (२) एक काव्य

---

\* तब मनु—विनाशित साठमनाथ विनाशित।  
एक सुन्दर काव्य ही है एक एक काव्य ही है।

इनका रेखाचित्र इस प्रकार है —



वचनिका व दवाबैत के शिल्प पर आलोचकों ने पर्याप्त पकाव डाला है। दवाबैत कोई छान्नी नहीं है, जिसमें मात्राओं, वर्णों तथा गुणों का विचार हो। यह अत्यानुप्रास ही गद्य-माल है। अत्यानुप्रास मध्यानुप्रास और किसी प्रकार सानुप्रास या यमक सहित गद्य का प्रकार है। यह संस्कृत, प्राकृत, फारसी उर्दू और हिन्दी भाषा में भी अनेक कवियों और ग्रन्थकारों द्वारा प्रयोग में लाया हुआ मिलता है। सहलजी लात के प्रेम सागर, उर्दू तथा फारसी के बहार खिजा, नौबतन आदि ग्रन्थों में देखा जाता है। यह दवाबैत दो प्रकार की होता है एक शुद्ध वध अर्थात् पदवध, जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरी गद्द वध, जिसमें अनुप्रास नहीं मिलते हैं।<sup>१२</sup>

१ देखिए सत्यता, मार्च १९१३ पृ० २१२

२ पद वध का उदाहरण —

(१) प्रथम ही अयोध्यागर जिसका घणाव  
 वारे जोजन तो चीडे सोल जीवन की घाव  
 चीतरफ व फनाव, चौमठ जोजन के क्षिराव  
 निसके तले सरिता सरिजू के घाट  
 अत उत्तानन सूँवहै, चौसर कोसो के पाट ॥

गद्य वध का उदाहरण —

हाथियो कहतके खभू गगते छोने अरावत के साधी  
 मद्रजाती के टोले ।

अत दहु क दिग्गज विध्याचल क गुजाव, रग रथ चिल्ले  
 सुडा टहके घणाव ।

झूत की जलूम बीर घटू के ठगके वादलो की जगमग  
 मेरे गीरो की गवी भण के ।

रामन इदमू के नार भारी कनक ली हुन जवाहर के जेहर  
 दीपमाला का रूस ।



(२) नरसिंहदास गौड़ की दवावत (३) अचलदास खीची की वचनिका  
(४) रतनमहेश दासोत्तरी वचनिका आदि मिलती हैं। राजस्थानी  
गद्य काव्य को उही कही वार्ता या वार्तिक नाम से अभिहित भी किया गया  
है। कई रचनाएँ श्वी देवताओं के गुण वणन अर्थात् सलोका नाम से भी  
मिलती हैं। वार्तिक के रूप में सिद्धर वशीत्पति का यह प्रकाशित है।<sup>१</sup> केहर  
प्रकाश ग्रन्थ में तुकात्त गद्य को वार्ता कहा गया है।<sup>२</sup>

अस्तु—राजस्थानी के इन गद्य काव्या की परंपरा दवावत और वचनिका  
के रूप में २० वीं शताब्दी तक पाई जाती है, जिनमें प्रमुख ग्रन्थ १६ वीं  
शताब्दी का जैसलमेर से प्राप्त भुत्वलानुप्रास तथा १७वीं शताब्दी की अनूप  
संस्कृत लाइब्रेरी में प्राप्त कुतुबुद्दीन साहिजादे की वारता, १८ वीं शताब्दी  
की नरसिंह दास गौड़ की दवावत तथा स० १७७२ की जिनसुखसूरि दवावत,  
१८ वीं शताब्दी अर्थात् स० १७८८ का रतनुकीर भाणवृत्त राजरूपक  
(प्रकाशित), १८वीं शताब्दी के प्रारम्भ में वाचक नित्यभक्ति विरचित जिन  
तामसूरि दवावत तथा २० वीं शताब्दी का (स० १९२६ का) कविया गोपाल  
द्वारा विरचित गिखर वशात्पति एतिहासिक गद्य काव्य, जिसका दूसरा नाम  
पीढीवार्तिक है, इस प्रकार राजस्थानी की गद्य काव्य परम्परा अद्यावधि  
सुरक्षित है। हिन्दी में भी २० वीं शताब्दी में रायकृष्णदास की साधना गद्य  
का यह उद्दृष्ट रचना कही जा सकती है। वचनिका दाँती में ही आदिकाल  
का हिन्दी जैन गद्य काव्य लिखा गया है इसीलिए उक्त विरचित में गद्य  
का यह इन राजस्थानी शलियों का परिचय दिया गया है।

अस्तु—आदिकाल के हिन्दी जैन साहित्य में गद्य काव्य का सब प्रथम  
और सर्वोत्कृष्ट रचनाओं का यहाँ अध्ययन प्रस्तुत करना गद्य काव्य के शिल्प  
भाषा वणन आदि सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।<sup>३</sup>

१ रतनमहेश दासोत्तरी वचनिका। सम्पादक डॉ० एल० पी०  
टस्सीटोरी प्रकाशित रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल।  
अभय जन ग्रन्थालय में रचना की प्रकाशिन प्रति सुरक्षित है।

२ कल्पना, मार्च १६२३, प० २१२

३ कल्पना, मार्च १९५३, प० २१२

४ कल्पना मार्च १६५३, प० २१२

५ देखिए—प्राचीन गुर्जर नाट्य संग्रह प० श्री सी डी दत्तल,  
पृ० १३—१३०



स्वयंवर आयोजित होता है। पृथ्वीचंद्र को इसकी सूचना मिलते ही एक विशाल सेना साथ म लकर रत्नमजरी को वरण करने की कामना से वहाँ पहुँचता है। उसका प्रेम रत्नमजरी का भी पिघला देता है। पृथ्वीचंद्र की कीर्ति, शक्ति से परिचित होकर वह भा उसे प्राप्त करना चाहती है। परन्तु बीच में अनेक व्यथान उठ खड़े होते हैं। बत्ताल अपनी माया फैला देता है और रत्नमजरी को उठा ले जाता है परन्तु पृथ्वीचंद्र के प्रति उसका प्रेम दृढ़ होता है। इसपर पृथ्वीचंद्र भी देवी की आराधना करता है और देवी प्रसन्न होकर उसे रत्नमजरी को प्राप्त कराने में पूरी सहायता करती है। अंत में दोनों को एक दूसरे की प्राप्ति होकर पाणिग्रहण का आनंद प्राप्त होता है।

कथा इनकी ही है, परन्तु कवि ने इस छोटी सी प्रणय गाथा को विविध वणन में सजोया है। वणन के इस स्थूरा रूप में उलझ कर लेखक ने कहीं कहीं रचना का अर्थ गौरव सिद्धि भी कर दिया है। कहीं कहीं नाम परिगणन में श्रम कर कृति की कथा वस्तु मुस्ताने सी लगती है और कथा का सारा ढाँचा ही लडखडाने लगता है। कहीं कहीं लेखक के वणन में ही भावुकता पूरा और सरस बन पड़े हैं।

पूरी रचना को कवि ने पाँच उल्लासों में विभक्त किया है और प्रत्येक उल्लास विविध वणनों द्वारा सवारा गया है। शब्द चयन अनुप्रासात्मक हैं, रचना का गुण उसके तुकात होने में का धारमक होने तथा शब्द विश्वास के नादात्मक होने है। गीत की ध्वन्यात्मकता एक अनूठे अनुरणन का उद्देश्य करती है। वणनों के अंतराल में, जहाँ कवि का मन खूब रमा है वहाँ उसकी वाक्यात्मकता ने अभूतपत्र सफलता प्राप्त की है उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं की ऐसी सुंदर मालाएँ अभ्यन्त मिलता कठिन है। कवि ने कथा के माध्यम से वणन चमत्कार दिखाया है।

रचना का प्रारम्भ ही जन भारती से वाग्मिलास की याचना द्वारा किया गया है।<sup>१</sup> कृति का रचनाकार मूलतः कवि था, अतः उसके गद्यवार पर कवि की विजय स्पष्ट दिखाई पड़ती है। वणन का सामर्थ्य देखिए—पुण्य की महत्ता का कितना उत्कृष्ट निम्न सीधा? -

पुण्य लगइ पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध पुण्यलागइ मन बाधित सिद्धि, पुण्य लगइ निमन बुद्धि, पुण्यलगइ घर श्रद्धिबद्धि, पुण्य लगइ शरीर नीरोग,

१ या विश्व काप वाली बल्लीलया कल्पित प्रदा  
प्रदता वाग्मिलास में सानिरथ जैन भारती—प्रा०गू० का० स०  
पृ० ८३

पुत्र सगद् अमगु रनाग, पुत्रनगद् कुटु ब परिहार तथा सुनाग पुत्र  
 सगद् पनागीयद् सुरा पुत्रनगद् नय नवारग पुत्रनगद् परिगद् पटा,  
 वातना दीगद् अदन छाग, पुत्र नगद् निरुपम क्क, अनाय अयना,  
 पुत्र सगद् वडिवा प्रयान भावाग, सुराग मगा साग, पुत्र सग  
 पीठबी भाग, पुत्रनगद् धामददायिनी मूर्ति, अमृग स्तूति पुत्र  
 सगद् मना साहार, अमृग शृगार, पुत्र सगद् एव बहमान, पण  
 किरु बहीयद् पामीयद् केषन गाग ।<sup>१</sup>

रचनाकार ने अनेक कथनों द्वारा अपने बहुमुखी ज्ञान का परिचय किया है। राज्य, राजा, दहनाति, सातडीप, भोजन, यज्ञ, वषा, वसत, गिरिह, सात शय, मुद्र स्वयंवर, वधोग ह्यार देग नगर समा प्रजा, वाचिह मायक, स्वध, सयोग, श्रुनु प्रकृति सदान, भाग न हाथी पाश, एव तथा शृगार आदि के विविध काव्यात्मक और परिष्कारमय अनुनामात्मक कथन हैं। दृष्योपद् परिह मयिनी के पाररनाकर से वर्णन साम्य रखती है। नीचे मुनामात्मक दृष्टिग मुद्र कथन दिए जाते हैं उनसे आकार पर प्रस्तुत एव वाच्य क काव्य मोष्ठर, यष गामीय और पनातिह का गद् अ अनुमान लगाया जा सकता है।

मरहट्ट देग का कथन —

सीह माहि वषाणायद् मरहट्ट म । नाद् दमि नाम अवन  
 अत्रिहम जना नगर, त्रिही न मानीयद् कर । पुग, त्रिही हुं स्वय,  
 वाग, न नीचत्रद् सामाग, भाग, मानाणा तथा मार्य जह दममाहि  
 नग बहद् सीह मुयद् निबहई । गिरि देग पुत्र नग निरेग ग  
 एरजद् मग । सीगि अमि वृणावृग वाग एव त्रिही अनाय  
 न कगद् ।<sup>२</sup>

राजा एव राज समा का वर्णन

राजना विना एव । जीव राजगना कु कम रवि एव वाचा एव ।  
 विविध मुद्र कनी अमुग दुरिह एव कुरा गग गंय वाचिह  
 एव । एव एव वाचिह परिह म मरह एव, म ना ठनी  
 गिरि मरहट्ट म, एव एव मरिह एव, बहि म एव एव गग  
 एवुग मुद्र मनाग मुद्रमगि मरिह राजा बहहा । विना

१ दृष्योपद् परिह प्राचीन मुद्र काव्य मद्र, पृ० ६३

२ बही, पृष्ठ ६४



राजा दीसइ छइ, मस्तकि अवे तातपत्र छइ, पासइ बलइ चामर  
पवित्र बाजइ विचित्र वादित्र, मस्तगि मुगट, नानि कुण्डल हृषि  
हाराड हार, महाउदार धनदतणउ अवतार, रूपतणु भण्डार । धणउ  
किसिउ कहीयइ । जिसउ पृथ्वी लोकतणउ इन्द्र जिसउ सोलकला  
सपूण चन्द्र इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र ।<sup>१</sup>

वणन की धारावाहिकता दान्दो का प्रवाह तथा अभिव्यक्ति की  
चित्रात्मकता स्पष्ट परिलक्षित होती है । इसी की तुलना म नाम परिगणन  
शली म लिखा तत्कालीन वण रत्नाकर ग्रन्थ का देव वणन देखा जा  
सकता है ।

कइ सनु दपु । नागल, तोंगल, तापसि तैलि ताति तिवर तुरिआ  
तुलुङ्ग तुरूकटारुअ धेओल धागल धाकल धानुक धोभार धुनिआ  
धलिकार डोंव डोवटारुअ छागि पगार हाडि ढादि भल चण्डार  
चमार गोण्डि गोति गोआर—।<sup>२</sup>

वस्तुतः इन ग्रंथों की शली तथा वणन परम्पराओं में पर्याप्त साम्य  
परिलक्षित होता है । प्रकृति वणन में भी दोनों ही रचनाकारों ने नाम  
परिगणन शली का अधिक आश्रय लिया है । कवि ने वर्षाकाल का प्रारंभ ही  
राजकुमारी रत्नमञ्जरी के यौवन की भाँति किया है —

हिव ते कुमारि चडी योवनि भरि, पखिरी परिकरि त्रीठा करइ  
नव नयी परि । इसिइ भावसरि आविउ आपाढ़—विस्तरिउ  
वर्षाकाल, जे पयो तणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि  
मधुर ध्वनि मेह गाजइ दुभिसि तणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्ष  
भूपति भावता जयठवका बाजइ चहुँ दिसि बीज झलहलइ पयो  
धरमणी पुलइ, विपरीत आकाश, चन्द्र सूय परिमास, राति अधारी  
सबइ तिमिरा उतरनउ ऊनयण, छायाउ गयण, दिसि घोर, नाचइ  
मोर सघर वरसइ काराघर, पाणीतणा प्रवाह पलहलइ वाडि ऊपरि  
बेनावलइ—पवत तउ नीयरण विछूटई भरियाँ सरोवर फूटइ ।<sup>३</sup>

अब वण रत्नाकर का भी वर्षा वणन देखिए —

मधव गज्ज, आकाशक मेचकता, विद्युल्लताङ्ग तरंग, कदम्ब सौरभ

१ पृथ्वीचन्द्र चरित प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह, पृष्ठ ६७

२ वर्षारत्नाकर सुनीतिकुमार चटर्जी द्वारा सम्पादित—पृ० १  
प्रथम कल्पेन

३ प्रा० गु० का० सं० पृ० १००, द्वितीयोत्तम

विषयवत् सभाय द्दरत्त कोण्डन, धाराक सभाय, आदिग्यव तु  
 एषा पथीक मोहित्य, बद्ध मन मनार, भीषधीक उपचय, नदीक  
 समद्वि विरहाय उदय्या, दानीक सुनुम्भिया, पदिक्क, तु सभाय  
 अगम्य तीम वैदशियक विनम्य, कम्पक प्रेगादिक्, सुवलीक लीङ्ग  
 एषम्विषय गम्यगुण समूह वर्दा देव ।<sup>१</sup>

वचन के हउ वच में कला का प्रवाह भी आरंभ होता रहता है । कला  
 की पारम्भाहिकता देगिए

निगिद्ध रत्नमयरी कु अति राता रहइ धाननी करारा निहा कुठि  
 राइया म थी । जेह ताइ परिवारि पी मनक प्रवारि कम्पुठिका  
 कम्पुठिका, लीलावती पद्मावती पद्मावती—अनक एली पत इ । लीह  
 महति निहो भापी विनारहइ प्रणाम नावराया उद्योगि कली दिव्य रूप  
 ली रायप्रसाइ मनि विना पहडी । एह पाग्य कयन कर, विनर,  
 कि विद्व पर ईगीउ थीठपइ नरम्बर मरावर मधी लच्छि  
 दीपी ।<sup>२</sup>

+ + +

होती वाता गामती दूत दूइ बहूमान लु कयन मह राता पथीकउ  
 कयवर ली वाविउ, कइक अरि वातादि लय नाण हाविउ ।<sup>३</sup>

+ + +

हिह गम्यकेतु राता ल वाता मानना मनि वैराग्य वाविउ, राता  
 पथीकउ प्रनिह रिक्त नाविउ । मनइ दुना वाता कय नाग्य  
 पु न अलून महा । तूरहिइ लीइ अहूण वैवा मनिध्य करइ, मय  
 विप्य हरइ ।<sup>४</sup>

+ + +

त्रिभारह पया बइ राता लय कठि पयवता रही, लयतइ धूमरतु  
 राता हू राग पठा, र मे हउ विरहय, धूम लु लयना लयउ मेव  
 ललीनइ उपावि उ करणम ।<sup>५</sup>

- १ वाकरराजवर मुनीविजुमार - टर्की मयागिण प० १८८ पन्नुप  
 कल्याण ।
- २ प्रा० मु० का म० प० १००
- ३ वही, पृ० १०३
- ४ वही पृष्ठ १७० श्लोक अन्तम
- ५ प्रा० मु० का म० पृ० ३१२ पन्नु उ पाम ।

पाथो उल्लासो के वणन उल्लास प्रधान हैं । प्रकृति का परिगणनात्मक स्वरूप वणन देखिए —

जह् अटवी माहि तमाल, ताल हताल, मालूर खजूर, अजु नचदन  
चपक बकुल । विचित्रिता सहकार काचनार जाबू जबीर यानीर  
वणबीर कीर केति नदब निब नारिण नालीयरि द्राव दाडिमी देव  
दाह अकुन बकिरिल नाग पु नावली मूधिका मालती माधवी जपा  
मन्वरु दमनरु पारधि केतकी मुचकुद कुद मदार तगर सेवत्री  
राशगिरि ।<sup>१</sup>

प्रकृति वणन के इस स्थूल स्वरूप में रचनाकार का काव्यात्मक वसंत वणन दृष्ट है जहां उस पुरी प्रकृति हसती खिलती दिखाई पड़ती है । वसंत में प्रकृति का सारा वातावरण ही राग की इंद्र धनुषी रूपनाओं में डूब जाता है । रचनाकार के वाक्य कौशल का निखार देखिए —

निसिइ आविउ वसत, हूउ शीततणउ अत, दक्षिण दिसितणउ  
शीत वाउ वाइ विहमइ वणराइ । — मउरिया सहकार, चपक  
उदार, वउल बकुल भ्रमर कुल सकुल, कलरव वरइ कोकिल  
तणाकुल । प्रवरप्रियगु पाडल, निमल जल विवसित कमल, राता  
पनाग सब गीवास कुद मुचकुद महमहइ, नाग पुग्नाग गहगहइ ।  
सारसानी श्रेणी, दिसि वासीइ कुमुम रेणि, लोकतणे हायि वीणा,  
वग्नाउ वर गीणा धवल शृ गार सार, मुक्ताफल तणाहार, सर्वांग  
मुँर वा गाहि रमइ भोग पुरदर । एकि गीत गवारइ दान  
दिदारइ विचित्र वादिन वागइ, रमलि वृणा रग छाजइ एकि  
वाहि फन चूटइ वणतणा पलव पूटइ हीडोलइ हीचइ  
धानता वाहि ह गलिइ सीचइ, केलिहरा कउ तिग जो भइ प्रीतमत  
होगइ ।<sup>२</sup>

रचनाकार का वणन में आलंकारिकता की मालाएँ पिरीदी हैं । अत्यानुप्रास तथा वणन की प्रवाहात्मकता तथा विविध उदाहरणों ने रचना की सुन्दरता में पर्याप्त योग दिया है । एक उदाहरण एतदथ पर्याप्त प्राण —

साभनउ याने वणयाइ जे वध पवत, नदी त ज नीरवत कटक ते  
न नीरवत, सरावर त जे कमल वन भय त जे समावत, महात्मा ते

१ वही, पृष्ठ १०४

२ वही, पृष्ठ १०२



रहितु भिक्षु, वेग रहित तुरगम, प्रेमरहित सगम—रस्त्र रहित शृ गार, सुवर्ण रहित अलंकार,—चरण रहिन बाल, राज्य रहित भूपाल, स्तम्भ रहित प्रासाद, दान रहित मान, मुष्टि रहित कृपाण । जिम पाणी सरोवर, तिम रत्नमजरी पापइ ते न शोभइ लोक तणउ व्यतिकार, ते सभा, हुई निष्प्रभा ।<sup>१</sup>

इस तरह रचनाकार ने क्षम्य अस्त्र, रागनीति, युद्ध, शृ गार, वीर, सौंदर्य रत्न, स्वप्न आदि के विविध वर्णन किए हैं । वर्णनों की अधिकता तथा अनावश्यक विस्तार से कही कही तो पाठक का मन उचटने तथा ऊबने लगता है, पर श्री सूरिजी ने परंपरागत शैली का पूरा निर्वाह किया है । कवि का बहुवद् होना उसकी प्रथम प्रतिभा का परिचायक है । रचनाकार के जातिज्ञान का एक उदाहरण देखिए —

जिम कलिवाल प्रवतमानि चउरासा जाति बोलोम । किसी ते पाति—  
श्री, श्रीमाला, उसवाल, बाघेरवाल डोडू, पुष्पकवाल, डोसावाल,  
मेडनवाल, माभू मुराणा, छेनवान, दाहिल, सानी, धडवड खडेलवाल  
पौरुश्रा गूजर, मोड, नागर, जालहटा, खडाइता, कपील, जाबू, वाडडा  
दाव दसउरा करहीया, नागद्रहा मेवाडा, भटेउरा कथरा, नरसिंह,  
उरा हारल, पचमवस सिर पडला नमोह रीतकी अगदवाल, जिणाणी,  
बाभ घाघ पालहाउत उचित बगहू अहिछत्रवाल श्रीगवउ बालमीकि,  
टाकी, तेनटा तिसउरा—पद्मावती नीमा जेंहराणा, मापूर, धाकउ,  
पत्नीवाल हरसउरा, अजयमरा कामल, सगउडा, सिहूरा, जेसनाल  
नादेरा, जाइलवाल, चाबेल । एणि सविहू ज्ञाति कुल बस माहि व  
खाणीइ सु श्रादक कुच ।<sup>२</sup>

इस प्रकार कवि अथ अनेक वर्णन सफलता के साथ करता है । गद्य काव्य की इसी वचनिका शैली पर लिखी गई इसी शताब्दी की एक रचना अचल दास खीची की वचनिका मिलती है । जिस पर आगे प्रकाश डाला जायगा । यह रचना जोतर है । तुलना के लिए इस समकालीन रचना के एक दो गद्य काव्य के उद्धरण नीचे दिए जा रहे हैं —

पगि पगि पउलि पउलि हरती की गज घग्ग, ती ऊपरि सात सात  
सइ घनक पर साठा । सात सात ओलिपाइक की बइठी, सात  
ओलिपाइक की उठी । खेडा डडण मुन करफरी चुहचकी ठाइ ठाइ

१ प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह, पृष्ठ ११६

२ प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह, पृष्ठ १२५

ठरना, इसी एक चारट दंडि पत्र दिनि पही निण वाहितकह  
नितादि पर माकादि बरहरो ।

- (२) इना एक से पातमाह रा बटव अथ अचन मबर ऊपरि छुटा, याटका  
छई यन छुटा, यह का पाता ल्या । परवना तिरि पय पागा, दुया  
टे पर भागा, गुर गुरा नही येह यागा ।

अथमगम साधी री बचनिवा म लयन एक का निर्वाह  
नही मिलता, परन्तु यथाविधा मैत्री की रासम्पत्तौ भावा का, जैनपर, पही  
गवते प्राचीन रचना है ।

इस प्रकार इन रचनाओं के तुलनात्मक अर्थ उन से स्पष्ट होता है कि  
इनके अस्तित्व का सिद्ध होता ही न पर्याप्त समय है । यगरतावर में  
यदिनी के अर्थ है । कर्ता कम और क्रिया भा-दिनी व है । ठीक इसी  
प्रकार पृथ्वीचन्द्र चरित के अर्थ कर्ता, क्रिया कम आदि प्राचीन रासम्पत्तौ  
के हैं । अतः पद्यति यों तीनों रचनाओं की समान है ।

पृथ्वीचन्द्र चरित की मगम न मगम की इही पद्यतियों में ५ उल्लासों  
में मगमप क्रिया है । रचनाकार ने अक्षरों में इनको भी दिष्ट है । इस इति में  
अनेक अर्थ संयुक्त के हैं अथ कवि का, अक्षर का अर्थ है । पुरी रचना  
आलोचना सुकृत है । कवि न दिविष वर्णों—देवान लया दधीय चरितियों  
क मगम अथ विषों का वाग्दामक प्रवाह में आता है । मगम छ ३ अने लया  
कतापूर्ण है । कवि की अक्षरता, कथा प्रवाह का अर्थ निदिन कर ली है  
परन्तु फिर भी रचना आलोचना अथ अक्षर की परम्परा का अर्थ विद्याय  
करती है । अतः मगम ने पुनर्जा में रचनाकार का मगम व अर्थ  
प्रयोजन स्पष्ट किया है और दो अर्थों का दे निव है । १) कर्ता व होना,  
अक्षरता की अर्थ वाग्दामक रचनाओं में पृथ्वीचन्द्र चरित अथवा वाग्दामक  
अक्षरता ही देता है ।

- १ श्रीमद् धनगण्डे श्री गुरु माणिक्य गुरिणा  
पृथ्वीचन्द्र चरित अथ चरितं नाम निमित्त  
संवत् १४७८ वर्षे श्रावण शुद्ध २ रती पृथ्वीचन्द्र चरित पवित्र  
पुस्तकालये निमित्त मगमिन् ।  
नगर मेरमही मातृ म अक्षरता विद्याय  
वाग्दामक अर्थवाक्य अर्थानुवि नानानु

## शोकाधिकार

गद्य का य की परम्परा में १५ वीं शताब्दी में पद्मोच्चर चरित के पश्चात् एम महत्वपूर्ण रचना शोकाधिकार मिली है। यह रचना भी पद्मोच्चर चरित की भांति प्रासन्न शैली में रची गई है। रचना की प्रति मुनि जिन विजय की को उपलब्ध हुई।<sup>१</sup> प्रति में रचना सवत नहीं मिलता, प्रति की लिखावट, पड़ी मात्रा, अउ के बदले उ का प्रयोग आदि तत्पयो से अनुमान किया जा सकता है कि यह १५ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के अंतिम दशक में लिखी गई होगी। रचनाकार का नाम भी अज्ञात है।

रचना कथा प्रधान है। वण्य वस्तु अद्यावधि उपलब्ध रचनाओं में एकदम मौलिक तथा सुन्दर है। रचना प्रकाशित रूप में प्राप्त है। हाल ही जैन श्वेताम्बर का फेस के प्रमुख पत्र जैन युग में डॉ० ह० च० भायाणी ने इसे प्रकाशित किया है। रचना की कथा वस्तु के आधार पर इसका नामकरण भी डा० भायाणी ने शोकाधिकार किया है, जो पर्याप्त सगत है।

शोकाधिकार का कथा प्रसंग बहुत ही वरुण तथा सक्षिप्त है। संक्षेप में कथा सार इस प्रकार है —

गम में माँ त्रिशला को भार से परेशान देखकर ५ महीने के भगवान महावीर ने अपना भार हल्का कर लिया और गम में अग स्फुरण और हलचल बढ़ कर दी। अग स्फुरण में माता को कष्ट होगा, यही जानकर वे बिल्कुल सूक्ष्म बन गये। मा ने सोचा किसी ने मेरा गम नष्ट कर दिया है। यह जान कर वह अत्यन्त शोकविह्वल हो गईं सारे राजप्रासाद में शोक की लहर व्याप्त हो गईं। सारी स्थिति विषम हो गई। महावीर के, माँ को सुख पहुँचाने वाले इस काय ने माँ का अत्यधिक कष्ट दे दिया। यह जानकर महावीर ने हल्के से अपनी उंगली फटकाई। स्पन्दन से माँ का शोक दूर होकर पुन आनन्द हो गया। संक्षेप में रचना की यही कथा है। कल्पसूत्र, सुखबोध टीका आदि ग्रंथों में यह वरुण विस्तार में मिलता है।

रचना का प्रारम्भ ही लेखक ने माँ त्रिशला के वाक्पूयपूर्ण उद्गारा से किया है। शोकाधिकार की भाषा प्राचीन राजस्थानी या जूनी गुजराती है। वणन प्राप्त शैली में है, जिसका दूसरा नाम वचनिका है। काव्य एवं गद्य काव्य का दृष्टि में शोकाधिकार का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। रचना अद्योपात्त तुक्कान है तथा कुल ५१ गद्य काव्यात्मक वाक्यों में समाप्त होती है। कृति में वरुण रम की धारा लेखक ने प्रारम्भ में ही बहाई है —

अथो । आ विमल मन्त्रि उपाय इति, विमल यथायत्, अथा  
 यथो । माहुरइ मन्त्रि विमलु, इति विमल हिन्दो वि विमलमन्त्रे

एत के हतक हा जान मे मो वा विमल उपाय मन्त्र में परिवर्तित हा  
 जाता है । मो वा उपाय बस अन्वय तथा गारा मन्त्रार हा वाचन का  
 दोहता है । वा अन्वय बस और मन्त्रार सुबको वाचन मन्त्रा ह । यवन  
 को अनुवाग बद्धता प्रसाह, माण्डारिका तथा वाच्यमन्त्रा दुष्टस्य ह —

इति माहुरइ मन्त्रि जे माहुर मन्त्र एउ प्रपस मन्त्र । एण हार,  
 माहाय गहार । बाहुकायो एण न मन्त्र बसय, न एण मन्त्र  
 दोमइ नितय । एउ अन्वय पट्ट दुबून ते मन्त्रा संसार नु मुत्तु । एउ  
 उक्तीण मन्त्रार त देखता मन्त्रा मन्त्र ।<sup>१</sup>

विविध उपाहरणों द्वारा कवि ने मो विमला के आसन परकथाय का  
 हाल किया है । एउ की वाच्यमन्त्रा उपाय और कविज मन्त्र हीन मन्त्र  
 और बना देगी है —

मह विमल कोषय वायु, जेह कारण देवद पाटिउ एवउ मन्त्रा ।

× × ×  
 कय मरोवर यानी बसुनु मह विमलो । विमल कय प्रजापी  
 कोषटा वादि वाता । कय मन्त्र देवा मन्त्रो, माण्डारिको मन्त्र  
 वाता । महमहीय विमनि, माण्डारिको मन्त्रा । मन्त्रि । मन्त्र मन्त्र  
 वायु विम माहुरइ मन्त्रा । एवइ मन्त्रि विमलु, मन्त्रि मन्त्र  
 मन्त्रु, अन्वय मन्त्रि वायु मह मन्त्रमन्त्र मन्त्रा मन्त्र विमल मन्त्र  
 देवि महम मन्त्रा ।

× × ×  
 जे हुना बरमा त मन्त्रा बरमा । जे मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
 मन्त्रा मन्त्र । — मन्त्रा, मन्त्रि, मन्त्रि मन्त्र मन्त्रि, जे मन्त्र मन्त्र  
 मन्त्रा मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र ।<sup>२</sup>

जे हुना वाच्यमन्त्रा मन्त्रा मन्त्रि मन्त्रा । जे मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
 जे मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र, जे मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र  
 मन्त्रा मन्त्रा, जे मन्त्रा मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

१ जे मन्त्र मन्त्र १६२० मन्त्रो ० ।  
 २ जे मन्त्र मन्त्र १६२० मन्त्रो ४० ।  
 ३ जे मन्त्र मन्त्र १२७ मन्त्रो १६ १६ ।  
 ४ जे मन्त्र मन्त्र १६२० मन्त्रो ११ २६ ।



अतः मे लखक ने माँ को गद्य स्फुरण का पुनः ज्ञान होने पर दो पत्रियों में वणन कर रचना समाप्त की है —

वाजिवाल (गा) मागलिक तणामूदग

राजभवन माहि सपूण आन द

इस प्रकार १५वीं शताब्दी में गद्य का जन्म हुआ। उक्त रचनाएँ उपलब्ध होती हैं, जो भाषा की दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण हैं और गद्य के क्षेत्र में नये सोपान प्रस्तुत करती हैं। १० वीं शताब्दी के बम्बई के प्रिंस आफ वेल्स व शिलालेख राउलवेल के गद्य की भाषा भी पर्याप्त गद्य काव्यात्मक है, जिसके गद्य के उद्धरण आगे दिये जायेंगे। अतः गद्य का उदगम १० वीं शताब्दी से ही माना जा सकता है। १५ वीं शताब्दी के पश्चात् तो धारा में अनेक प्रौढ़ राजस्थानी भाषा में कृतियाँ उपलब्ध होने लगती हैं।

वस्तुतः ऊपर हमने अभ्युदय काल की गद्य काव्य की उद्भावक एवं प्रेरक आदिकालीन गद्य रचनाओं की मुख्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला है। अद्यावधि गद्य काव्य मूलक वचनिका शैली में उक्त तीन रचनाएँ ही उपलब्ध होती हैं। विविध प्रादेशिक भाषाओं में सम्यक् आद्य होने पर बहुत सम्भव है कि मैथिली में वणन रचनाकर की भाँति गद्य काव्य की प्रेरक कुछ और अनूठी रचनाएँ उपलब्ध हों। यों अभी तो राजस्थान के अनेक जैन भण्डार मुहर व पड़े हैं। अतः शोध की वर्तमान स्थिति में प्राप्त उक्त गद्य काव्य मूलक रचनाओं का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अब आदि कालीन हिन्दी लौकिक (अर्जुन) गद्यकृतियों पर प्रकाश डाला जा रहा है।



ही प्रारम्भ होती है और १० वीं शताब्दी से लेकर १५ वीं शताब्दी तक हिंदी की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में अनेक रचनाएँ गद्य काव्य की शैली में लिखी गई हैं। इन रचनाओं में प्रयुक्त गद्य (उन कवियों द्वारा रचित कुछ ही रचनाओं को छोड़ कर) अत्यंत सरस, सबल तथा पर्याप्त महत्व का है। जनेतर गद्य के अंतर्गत जट्टावधि जितनी भी रचनाएँ मिली हैं, उनमें से किसी भी रचना का पाठ उन रचनाओं के पाठ से कमजोर अथवा सिधिल नहीं है। इस ओर जितनी भी रचनाएँ मिली हैं, उनमें वचन का शिल्प जन कृतिपों से भी ठोस प्रतीत होता है अतः इस ओर पर्याप्त शोध की अपेक्षा परिलक्षित होती है। गद्य काव्य की शैली में अद्यावधि जितनी मजबूत रचनाएँ उपलब्ध होती हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जा रहा है। इन रचनाओं में हिंदी की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं मालवी—मथिली तथा तथा राजस्थानी—आदि सभी की लौकिक रचनाएँ हैं।

### राउलवेल या रोडा कृत शिलालेख

आदिकालीन हिंदी गद्य साहित्य में गद्य काव्य की परम्परा को पुष्ट करने वाली अजब रचनाओं में जट्टावधि उपलब्ध सभी रचनाओं में प्राचीन १० वीं शताब्दी का यह शिलालेख है। यह शिलालेख हिंदी साहित्य में गद्य काव्य की परम्परा का श्री गणेश करता है तथा हिंदी साहित्य में गद्य और गद्य की रचनाओं में सबसे प्राचीनतम है। गद्य काव्य के रूप में इस शिलालेख का गद्य भाग लिखा जा सकता है। रचना राउल नाविका के मन्वशिव के सम्बन्ध में है। इसका गद्य काव्यात्मक प्रवाह संतोषप्रोत्साहक है। गद्य काव्य की परम्परा के उद्भव और विकास की सूचक रचनाओं में यही शिलालेख सबसे प्राचीनतम है। अतः हिंदी साहित्य में गद्य काव्य का प्रारम्भ करने वाला यही शिलालेख कहा जा सकता है। रचना का गद्य प्राचीन राजस्थानी भाषा में है। इस रचना में शब्द सात भाषाओं के हैं जिन पर पश्चिम का साहित्य प्रभाव मिलना है जो परम्परा का प्रभाव कहा जा सकता है।

गद्य की प्राचीनता और सम्पन्नता की दृष्टि से आदिकालीन का हिंदी अंग्रेजी रचनाओं की परम्परा के रूप में प्राप्त होने वाला सबसे सम्पन्न यही गद्य है, जो अम्बई के प्रिंस आफ वेल्स सग्रहालय के १० वीं शताब्दी के एक शिलालेख से उद्भव की उपलब्ध हुआ है। यह शिलालेख अद्यावधि प्राप्त होने वाली गद्य और पद्यारण्य रचनाओं में सबसे प्राचीन है। इसकी भाषाओं को यह स्पष्ट होता है कि यह रचना १० वीं शताब्दी की ही है।



और श्री हरिवंश कोछड<sup>१</sup> ने अपने ग्रन्थों में किया है। लेखक को यह शिला लेख डा० मोतीचन्द्र सग्रहासयाध्यक्ष प्रिंस ऑफ वेल्स वर्म्बर्ड के सौजन्य से प्राप्त हुआ। एतदर्थ लेखक उनका हार्दिक आभार प्रदर्शन करता है। शिलालेख के दोनों कोने टूटे हुए हैं पाठ कुछ बट फट भी गया है तथा बीच बीच में से भी पंक्तियाँ भ्रष्ट हो गई हैं। फोटो प्रति (स्टम्पेज) से यह ज्ञात हुआ है कि यह रचना बहुत बाव्यात्मक और पर्याप्त महत्व की है। रचना का सम्पादन डा० हरिवंशभाभायाणी तथा डॉ० माना प्रसाद गुप्त ने किया है। दोनों के पाठ विद्वानों के सामने आ चुके हैं।<sup>२</sup> इनकी प्रामाणिकता का निर्णय पाठक कर सकते हैं।

जहाँ तक इस रचना की बाव्यात्मकता का प्रश्न है लेखक के उपमान मौलिक है। श्रु गार्विक अथ वच्रे मधुर और मौलिक उपमाओं के दण्ड प्रस्तुत करते हैं। वणनकार ने उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं की मालाएँ पिरोयी है। लेखक का वणन राउल नामक नायिका के सम्बन्ध में है। यह भी सम्भव हो सकता है कि राउल नाम कवि का भी रहा हो परन्तु कवि के रूप में यह नाम अधिव्यक्त सायक नहीं प्रतीत होता और राउल नामक नायिका के रूप में ही अधिव्यक्त समत बैठता है।

कवि ने गद्य काव्य के रूप में ही पूरे गद्य को प्रस्तुत किया है। यदि बातों में इन रचनाओं में गद्यात्मक जितनी भी रचनाएँ उपलब्ध होती हैं उनको देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि तुकात रूप में वणन करन की इन लेखकों में परम्परा रही थी। उदाहरणार्थ वणनरत्नाकर जसी रचनाओं के बाव्यात्मक एवं तुकात गद्य को देखा जा सकता है। निष्कर्षतः यदि यह कहा जाय कि गद्य के बलात्मक रूप में अद्यावधि जितनी भी कृतियाँ मिली हैं वे सब तुकात रूप में मिलती हैं, तो अनुचित नहीं है।

यह शिला लेख में कवि ने नायिका राउल का नख निख वणन सात भाषाओं में बड़ी सज्जन से किया है। यहाँ उदाहरणार्थ नायिका के केश बलाप और रत्नम आभा से युक्त भाल आदि के सम्बन्ध में दो उद्धरण दिये जा रहे हैं। वणन में कहीं कहीं घट बट फट गये हैं पर अलंकारिक वणन भाषा की सरलता और प्रसन्नता तथा उपमानों की मौलिकता आदि को इस दृष्टि से देखने से इस गद्य की सम्पन्नता का अनुमान किया जा सकता है। वणन का सौन्दर्य देखिए —

१ अपभ्रंश साहित्य, डॉ० हरिवंश कोछड पृ० ३५, सन १९५२

२ भारतीय साहित्य आगरा तथा राउलबल मिला प्रकाशन, इलाहाबाद



ग्रन्थ के भण्डारों की सम्यक् शोध होने पर बहुत सम्भव है कि ४०० वर्ष के इस काल में गद्य काव्य की परम्परा का पोषण करने वाली और भी कई रचनाएँ उपलब्ध हों।

### वर्णरत्नाकर

गद्य काव्य शैली में लिखी अर्जुन रचनाओं में ठाकुर ज्योतिरीश्वर के वर्णरत्नाकर का नहीं भुलाया जा सकता। अद्यावधि १४ वीं शताब्दी की जितनी भी अर्जुन गद्य रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं, उनमें कोई भी रचना ऐसी नहीं है कि उनसे गद्य को वर्णरत्नाकर के गद्य के समान रखा जा सके। मैथिली के ठाकुर ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखी इस रचना का गद्य बहुत ही सरस, कायात्मक तथा प्रवाहपूर्ण है। अतः गद्य काव्य की परम्परा में इस रचना का महत्व सर्वत्र जाना रहेगा। वस्तुतः इस युग में जिस प्रकार मैथिली की यह रचना उपलब्ध है बहुत सम्भव है उसी प्रकार की सुन्दर रचना गद्य के क्षेत्र में हमें अथ प्रादेशिक विभाषाओं में भी उपलब्ध हों। गद्य का यह विषय पूर्णतया शोध का विषय है। गद्य का यह अथवा कलात्मक गद्य का रूप में प्राप्त होने वाली इस अर्जुन रचना का महत्व अग्रजित कुछ उद्धरणों में सम्भवतः अंका जा सकेगा। यह रचना प्रकाशित है और प्रसिद्ध भाषाशास्त्री विद्वान् डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने इसका सम्पादन किया है। यह ठाकुर ज्योतिरीश्वर की गद्य रचना है। रचना के वर्णन प्रकारों और शिल्प की प्रौढ़ता को दर्शाते हुए यह सहज ही कहा जा सकता है कि इससे पूर्व भी गद्य की रचनाएँ मिलना बहुत सम्भव है। नायिका वर्णन, ऋतुवर्णन, प्रमानक तथा क्षमज्ञान आदि सब ही प्रौढ़ बन सके हैं। इस प्रकार मैथिली गद्य की प्रौढ़ता अस्वीकृत नहीं की जा सकती। गद्य के क्षेत्र में इस रचना का एक ही महत्व है। प्रसिद्ध विद्वान् सुनीतिकुमार चटर्जी भी इस रचना के गद्य की प्रौढ़ता स्वीकार करते हैं। मैथिली गद्य के विकास में योगदान वाली इस रचना के गद्य की सम्पन्नता विभ्रान्त है। यही नहीं, गद्य काव्य शैली में प्रणीत इस रचना का महत्व १५वीं शताब्दी में उत्पन्न प्रथम माणिक्य मुन्दर गूरि विरचित प्रसिद्ध रचना का पृथ्वीचन्द्र परित से विभी भी भाँति कम नहीं है। अतः गद्य का सीढव वर्णन की चित्रात्मकता, भाषा का प्रवाह और प्रामादिकता का अनुशीलन

१ देखिये वर्णरत्नाकर ठाकुर ज्योतिरीश्वर प्रणीत—बंगाल द्वारा मुद्रित मस्करण, सन् १८४० सा० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी तथा बाबू मिश्र।





पद्म त्यजल जनि । जावाण अधकार करीजा पउ आदित्यने मने  
नुकायल अधकार अछ स मिलित भउ, तदनंतर भउ कहसा,  
धुमना सम्भार गीत सणवार उटवक कोलाहल नक्षत्रक उदगम दीपक  
उजोत श्रोत्रियाङ्गिक प्राणायाम नवोटाकइ विरति प्राडाक हरप  
पञ्ज (क) पञ्चक प्रभरक उपशम मथिक्क विश्राभ सदयोनहिक  
सरग कौशिकक समानार, गोभागु बाल युवतिहिक उत्कण्ठा  
युवजनक अभिलाष भोगोजनक द्वितीय भाजनक उद्यम, गामायुक  
शानद नञोवतिक सम्पूणता प्रभृति स घया दपु ।

इसी प्रकार ललक न चर्पा अधकार च द्रमा, मेष, वसत दारद आदि  
के वणन मौलिक उपमान चुन चुन कर किय हैं, ऋतुभा के इन वणनों क  
साथ साथ कला, रत्न महादाग, वस्त्र, ज्योतिष अभियेक, धृतवश्य,  
कुट्टनी कामावस्था आखेट रथ वन सरोवर, वणनो के विविध चित्र  
लीचे है । इस गद्य की भाषा मधिली है, जिसकी काव्यात्मकता और भाषा  
तम सबलता स्पष्ट है । गुद्ध चयन सरल सुन्दर और पर्याप्त प्रभावगाली  
हैं । रचना का विभाजा लेखक न कल्लोल शब्द से किया है और  
प्रत्येक वणन के नाच उसका समाप्ति सूचना सूत्र लिया है ।

मथिली भाषा की इस रचना के समथ रची जाने वाली कायात्मक  
गद्य की अद्यारथि जा जा रचनायें उपलब्ध हैं उनमें सबसे महत्वपूर्ण रचना  
पञ्चाच द्र चरित है । जिसका गद्य वणरत्नाकर की भाँति सगन्त है । माल  
कारिक—सुपमा उपमानों का माला तथा उत्पन्नाओ की छटा देखकर कोई  
नो व्यक्ति पञ्चीच द्र चरित की कायात्मकता का लाहा मान सकता है ।  
यन्तुन ये दोना रचनाएँ समान रूप से गद्य काव्य की सुपमा में योग प्रदाय  
करती हैं ।

### काहल दे प्रबन्ध

गद्य काव्य शैली में निम्नी ११०० य लौकिक गद्य रचना का हल दे  
प्रबन्ध मिलनी है । रचना का हस्तलिखित प्रति राजस्थान पुरातत्व मंदिर  
जयपुर में सुरक्षित है । काहल दे प्रबन्ध के रचयिता कवि परमनाम है । यह  
पूरा राजा प्रबन्ध प्राचीन राजस्थानी में लिखा एक सरस महाकाव्य है,  
निम्न पर १५०० पंक्तियों में विचार कर चुक है । पूरा ग्रंथ कवि ने पद्य में  
ही लिखा है, पर बीच बीच में गद्य काव्य शैली में भी लिखा गया है ।

१ काहल दे प्रबन्ध—राजस्थान पुरातत्व मंदिर जोधपुर द्वारा  
प्रकाशित



चउकीसर तूना लूआ । शत भूमिका सहस्र भूमिका सभा नी  
रचना ।

- (२) महाराजधिराज श्री का हठ २ सभा पूरी बइठउ लइ । सिंहासनि  
पाउ परठिठ छइ । मधवना उलय बाध्या छइ । परीयछ दसो  
छइ । श्वेतकीर्ता गद्य गहन गहीया छ । सौरमना सोड साचरिय  
छइ । सभा माहि सरी मल्हाणा छइ । जाइ बेली बालउ पाडतना  
परिमल पचवण पुष्पजातिना प्रकर पाधारिया छइ । गुल्लालना  
गद्य गहगहीया छइ । पडीया कपूर पाए चपाई छइ । घोडा  
वही आलइ धालीया छइ । हाथियानी सारसी आगलि कानि  
पडिउ काइ नधी सभलाह । पच शब्द वचिष बाजइ छइ ।  
गल्या पीतल रताजणी तणा पखावज धोकार करइ छइ । नत्यकी  
पात्र नश्य करइ । ततवितत घन शृपिर पचवण बाजिअ बाजइ  
छइ । पचवण छत्र धरिया छइ चामर धियजना बिहु पवि हुइ  
छइ । अमात्य प्रधान सामत मडतीक मुकुट वद्ध श्रीगरणवइ  
गरणा धर्मादिकरणा मसाहणी छावरी बारहीया पुरुष वइठा  
छइ ।<sup>१</sup>

इस प्रकार इस महाकाव्य में प्रयुक्त इन गद्यात्मक उद्धरणों द्वारा  
रचना के गद्य भाग की सम्पन्नता का अनुमान लगाया जा सकता है । का हठ  
के प्रबंध पद्मनाभ की एक प्रौढ़ रचना है जिसमें प्रयुक्त इन गद्यांशों में भी  
गद्य की भाँति अपूर्व प्रवाह तथा सरसता है ।

उक्त उद्धरणों द्वारा आदिकालीन हिंदी जन रचनाओं में प्रयुक्त  
गद्य साहित्य के विकास का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जा  
सकता है ।

### अचलदास खीची की वचनिका

आदिकाल की जनेतर गद्य रचनाओं में अचलदास खीची की वचनिका  
एक महत्वपूर्ण कृति है । यह रचना वचनिका शैली में चारण कवि शिवदास  
द्वारा लिखी गई है । रचना पद्य और गद्य दोनों रूपों में लिखी हुई है । पूरी  
कृति एक उत्कृष्ट बीर काव्य है, जो आदिकालीन चारण शैली में गद्य काव्य  
की सरस बीर गद्यात्मक गुणमा प्रस्तुत करती है । कृति का गद्य पर्याप्त  
प्रवाहपूर्ण है । वचनिका शैली गद्य की वायात्मक शैली होती है और अचल  
दास की यह वचनिका प्राचीन राजस्थानी के गद्य के सौंदर्य की बाणी देन

बानी अनूठी कृति है। त्रिगुणा कथावस्तु ऐतिहासिक है। रचना की कथावस्तु एक काव्य मन्त्राभा शर्मा पर विरहार्थ म विचार इसी अर्थ्याय के पूव पष्ठों म किया जा चुका है। यही इस गद्य भाग का हा मूल्यवान् प्रस्तुत कृतिया जायदा। अथवादाग शीघो रो यथनिवा म टीव उक्तो प्रकार का गद्य भाग मिलता है, जय यद्मनाम का कृत बाह्य ६ प्रबन्ध महाकाव्य मे शीघ-धाप म गद्य भाग मिलत है। इस अतुमाग मगाया जा सकता है कि कथावित्त रचना म पद्य और गद्य शिष्यों म यस्तु यवन या कथा यवन करता की यह प्रवृत्ति उक्त काल म यवन की एक विविष्ट माली हो रही होगी।

अथवादाग शीघो रो यथनिवा का गद्य अथवात यथावात विरहायला भाति गारहो क अतुगत निगा गया है। प्राधात रात्रस्यातो क प्राधान जन भर्तृ कविषो द्वारा प्रणीत वाग और यथनिवा शनी का यह साहित्य इत्या अथिह समग्र है कि इन पर कई प्रबन्ध लिख जा सका है। य कृतिपां वाग, कथाग और यथनिवा नाम ग द्वारा की मन्था मे "पसाय होती है, तथा मप्रकाशित है। रात्रस्यातो साहित्य की यही लीनों पात, कथाग और यथनिवा काव्य या गद्य गतिपां है जिनम इग विनास साहित्य का मृजन किया गया है।

अथवादाग शीघो । यथनिवा १ गद्य और काव्य शानो शर्मा म प्रवृत्ति

अथवादाग शीघो रो यथनिवा रो भाति 'अथवादाग शीघो रो वाग' कृति भी मिलती है। इसका विवरण "गन्ध्याय क रत्नगिरिगिरि शर्मा की शोत्र भाग १" म भी मिलता है। श्री डॉ० मोती लाल मनारिया ने भी अपने ग्रन्थ "रात्रस्यातो भाषा और साहित्य" पृ० १०० पर इसका उल्लेख किया है। रचना की कथावस्तु मगमम यही है। एक ही उद्धरण इस प्रकार है -

(अ) अथवादाग यर मउ किमउ उार दक्षिण पुरव पच्छिम काउ नर विवाट थाइया अउउपाय । अकारो दापय दूरउ मारउ मीसरउ निपय ठा दरपय छाया मारद पाण्ड कउ थायन भाउउ यवरयाति । छा छा हा रात्रा यय । नर । पार- त्रियउ त्रिति हउ पायगाए मउ गाहउ गिउउ ।

(ब) एत यावत्तु है मरुद्विदित रात्रक मगममी मगाया । मिय अणक मगम रिउ यनु मन्था । रात्र निषय नीमी मगाय

महत्वपूर्ण है। कवि ने इस धीरे पूजाकाव्य को जिस प्रकार काव्य में सजीया है। ठीक उसी प्रकार इसका कथावस्तु की अत्यन्त स्पष्टनीय ढंग से गद्य बात में भी लिखा है। पुरी रचना की कथा वस्तु में लेखक ने गद्य भाग में केवल मात्र युद्ध और सज्जावणन ही किया है। जोहर वणन काव्य में किया है।

माहू के मुत्तान ने नागरीण (कौटा राज्य के अन्तर्गत) पर चढ़ाई कर दी। अचनदास एवं उनके अनेक सहयोगी उपशासक युद्ध में हजारों

मुहरत दिया। गढ़ि ढोषा किया। तीन लाख भड आया इमा मीरी आंख मुहु पकडजिसा। करै घात वोलै पारसी वगतत तवा क्षिरने जाणो आरसी। कवाणा कुआ जिभ कुरवरिया, वीलाख मेहाजिम औसरिया। काली निहाव गोला बुहाव। गढ सिखर उडी कामरा राजीव तुडी। सूरु अक्षरग जीघ ची जग गइ डिमल भुरज गगाहिउ चतुरगणी वकाचगा चाहउ। आढा अचल ताणि आठि माल पनेरे सइस जोघ पीचाला। सौह सग्राम का समरा अणी का भमरा, गारडि का गाडा फोजा का लाडा। चावरतनी का विंद, नारा का नरीद। चौईस आखडी चालण सुती राव ताहण। महाराज मागियो सो पायो। वाचा वधो सुरताण पातसाह आयो। एव जी खती घरम ऐ कितारथ कीजै लका समाण गढि गागुरण लीजै। मीर मुगल साके आण घमघमी उठायो गढि प्रमाण मोरचौ वणायो घारा पनहा उजडा वखडा पमाय तेल ले हाम पइया इग्यारै हजार नर खलहाण हिंदु मुसलमाण। राव ताहण हूँ गढ चैरचै लडै तो सुरा सौहडा समवडै। जो हू गढ पीलिया मरु तो प्यारजुगा लग उवरू। उवरै सी उवरी करै सो मरी गढ पर्व आधारी, रावताहण पधारो।

[ उक्त गद्यांश में तुक्कात्त प्रौढ प्रासात्मक गद्य की छटा दिखाई दे रही है। वाक्य छोटे और सरस हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अभिव्यजना का सभार है। रचना माधुर्य से पूर्ण है तथा वर्णन शैली प्रासात्मक एवं प्रासादिक है।

उक्त उद्धरणों से रचना के शिल्प का अनुमान लगाया जा सकता है ]



दोना पशा की सैन्य का तुलनात्मक वर्णन देखकर दोनों दला की सक्ति की परिभाषा प्राप्त कर लीजिए । कवि ने सुल्तान की सेना का वर्णन पहले और अचलदाम की सेना में लड़नेवाले सहयोगी शासक राजा नगिह दास तथा मिभि न राव रागाभा का वर्णन फिर किया है दोनों का तुलनात्मक एवं विचारात्मक सरत वर्णन देखिए —

॥ अथवात ॥

### बादशाह का सैन्य वर्णन

(१) इसी परतवी खड दालय गोरी राजा बाण लखमा लवा, रोचकर बनि । तरते बाणू लखमा लवारा कटक बधे । त कटकबध रउआर भार भपार मगरवातन गणवर । तइ कटक ब मारहि तउ कहि कहि दिखालउ । महाधर तउ वउग । मीया उसमा खान फने पान गजनी खान उमरखान है बति खान खान तउ युगीत सारिला (१४ १५)

(२) देसतउ वउण कडण सतिया नमियाड जुगा मायात आसरिदू गउरि बाबिन नीलइरिदुछेर तउ राइभेणि राणी गण पउली घट उलीक राणी तिलार सिलारपुर लगइका कटक बध मँक वेस तउ मांडव धार उमीण सीह उर वरीलू हुसगोवाद लगइ का कटक बध । इसी एक ते पातसाह का कटक बध, दस देस का । खण खड का नगर-नगर का खान मीर उमरा चतुरग दल चडि चाह्या । पातसाह आपणा पी पलो छान्या ॥ (२२) ॥

(३) अउर पातिसाह हुआ गागिला आगिलरा अर भल भलेरा-रया तउ चउरामी दुगलीया या निहाई पाडइ । यो तउ सुरतान दूसरउ अताउहीन जिणि चवरासी गड दुग लीया एक ही दिहाडइ ॥ २४ ॥

### हिन्दू राजाओ का वर्णन

(१) हिन्दू राजा वउण वउण । सकलही एकबदी सकलकला सपूरण राजा नरसंघदास सारिया । ते नरसंघ दास रा कटक बध चानता सातरि आगिनइ दलि पाणी पाखिनइ दलि कादम तइ कादम बइ गइ खेह उठती जाइ । दूसरो बिकमाइत (१६)

अथवात

(२) ते राजा हरसंघ दाम सारिया बतीस सइम साहण दिणि खेति मरिह चान्योउ । मदीन मत हन्ती मरिह चान्योउ । आपण जाइ सभ पात्योउ समदि ताइ माड उपचाल्यो । अनक राइमद गलित परि मेहया त राजा नरसंघदास सारिया । त राजा नरसंघदास का कुबर तउ बादजी





गिवाणी जउ साभलउ रहइ अणी पाणी । आज तउ सोम खानन वाहइ  
दे नही निलक चुपरितउ महिल तु नही, सीह उरिर लू नही । हठ बउ  
राब हमोरि आघाम्यो (२३)

अचलेश्वर के ऐश्वर्य का वणन करने में कवि शिकुल नहीं  
अघाना । दूर दूर के प्रशंसा में उसका यश प्रसारित है । उसकी  
तुलना में कोई दूसरा राजा टिकता ही नहीं । अचलेश की भाँति तो अचलेश  
ही है । ऐसे अचलेश्वर को धर्मवाद है निम्ने माडू के वादगाह से भयंकर  
लोहा लिया । वणन की सरनता और प्रवाह उल्लेखनाय है । राजक की  
अलंकारिकता चित्रण को और अधिक सशक्त बना देती है ।

घनि घनि हो रागा अचलेश्वर धारउ जौयो । जिणि पातसाह सउ  
खाउउ लीयो । तणी पातसाह आया । समातरि सत छाड नही मन्नाटाइ नही  
हीण न भाखइ । पागार ल धिन न हाइ तर ते राजा अचलेश्वर सारिया अचल  
ने अचलेश ही होई । तउलस भरतउ किसउ ऊतर दक्षण पूरब पछिम बउ  
मउ क्किवाउ । आइ या बजइ माल अहकारि रायण इसरउ धरि तीसरउ  
सीघणा । छड तरसर छयाणवै पाखड बउ आधार वालउ चकरवति । घनि  
घनि हो राजा अचलेश्वर धारउ जौयो जिणि पातसाह सउ खाउलीयो  
(२७ २८)

वाल्मीकि का दल अचलेश्वर का मत्त पर टूट पड़ा । प्रलय मच गया ।  
दिशाएँ डोन्नत लगी । अम्बर में दूनी गद छा गई कि सूर्य के दान भी  
दुलम हो गए । न हाथियों का पार न घाड़ों का । वणन में उत्साह और  
प्रवाह देखिए —

इगा एक तै पातसाह ग बटव बध अउनसवर ऊारि छूटा । वाट  
बारबड ईधण छूटा । दह का पाणी लूटा । परबता सिरि पथ लागा, दुछाट  
घट भागा । सूर सूत्र नही नेह आगा । हैवर गेवर पाइल मुहवि न पारा  
वार । गौरी राव गिर आस तउ गउ गण मजगहार बसात पातसाह का बटव  
बध हाइ नुक्की गमाइ ।

### अथबिरिदावत

यारे माहि रिड साहि रिभाउ बलिया सहि कपि कुदात सबलसाहि  
मान मरदान निगत माहि घापता हरिज । मग्राग माहि जग तथरिण  
भागना माहि जइत मन पुरिगाग दूसरी अतावदीन निमै पकि बारभि  
पारभि जाइ टिकी छ । तनि तनि पउति पउति हस्त की गजघटा । ती  
ऊारि मात्र सत मे गोप ।



(५) तउ तउ काहर पुरिस तू है तो यो ही बड उमित । चारइ कीयो पाछी पाबउ मलगह न चालइ । पाल्हण सी भलाभना लोका का कहूया करणा । चार सांभल्या आसू पूछि अकमाना लीयो । विजइ बध बागडी की को नाई सकल ही, प्रिविमी प्रतिपि ज्यो ज्यो गढलीजउ हमारइ बइर सुरिताण गोरी राजा तउ कीजो । भाल्हण सी पुहविहि रह यो अनि समभ्या सरणि । तिणि बेला ही या मरी राइ राइ रोवण लगि (८८ ६०)

युद्ध में वीरगति पाने पर रानियाँ क्या अपना आत्म समर्पण म्लेच्छों के हाथ करेंगी ? क्षत्रिय बाजाआ के लिए यह कल्पना भी अस्वाभाविक एवं असंभव थी । अतः जोहर होगा और उनका मरुपु से अलिंगन हो यही इस युद्ध का सही उत्तर होगा ।

अतः चिन्ता किस बात की । रणथंभोर के महाराज हम्मीर के घर पर भी तो क्षत्रिय बाजाओ ने जोहर कर अपनी ताज और मुक्त की मर्यादा की रक्षा की थी । अतः जोहर ही राजपूत रमणियों का शृंगार है । वणन की उत्साहमयी उक्तियाँ देखिए —

मानवी कौक हारे बावकी हो तैंतीस बोडि द्यता सहित सिरजणहार ल्यो तुम्हारे कौतिल दक्षण हार । हा तो छी चित्त बसत तम्हे वाइ मान उपाण मन माहि अहित । इवे तम्हे यो करउज्यो जोगइ जोगाइत बइ घरि जउहर हुवा तिलकु चुपरि महिलउत बइ घरि जोहर हुवा । सीह उरिरोलू बन् घरि जउहर हुवा । कालिह क दिहाहें रिणबभउरि राजा हमीर बइ घरि जउहर हुवा । तिणू जउहरा जिबा बात ऊणी हुई हुबै त्या म्हे पूरी करि दिखालउ । पूरो हुई छुबै खा पुनरमि आहुडि उजालउ । हो तउ छाउ चित्त बसतु तिणी कारणइ छ उदु चित्तु । तम्हें नाई न मानउ आपण मन महि अहित । इण बालि राजा अचलेसवर बउ राज लोक हस्यो । हे माइ मरण चालोमु पुरसामउ । आई श्री पूछउ—नइ इबै चित्त छ, त्या कउण छ ।

राजा अचलदास की जोहर करने की बतलाई गई उभरती रीति की क्रिया प्रवृत्त किया गया । भयंकर युद्ध में भी राजपूतों के वैभवी अचलदास वीरगति की प्राप्ति हुए । रानियों ने जोहर के कुछ मरुद कर अपने आत्म सम्मान की रक्षा की । पाल्हण सी ने मरते ही समस्त अतः पुर में शोक छा गया । वणन की सरसता देखिए —

‘मुन सहउ नीमरउ न दीसउ नीकउ । चांइ हतउ गज घटान फूट । पामा पानन तउ घाइ भारी धीरउ कहा राणा । मोकलसी पासि गयो थी ।



## अन्य विविध विषयक गद्य साहित्य

आदिकालीन गीत और अजन गद्य रचनाओं के साथ साथ हिन्दी में गद्य साहित्य सम्बन्धी उक्त रचनाओं के अनिर्विक्त इतर विषयों की रचनाएँ भी उपलब्ध होती हैं। यद्यपि इन रचनाओं की भाषा इतनी अधिक सशक्त और प्रवाहपूर्ण नहीं है फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन करने पर गद्य साहित्य का तत्कालीन वैविध्य स्पष्ट हो जाता है। विषय की दृष्टि से इन रचनाओं में पर्याप्त विविधता है। कोई वान शैली में है, तो कोई वृक्षिका शैली में, कुछ चरण शैली में है, तो कुछ जौ शैली में। इनकी शैली में जिस प्रकार का अंतर परिलक्षित होता है ठीक वैसे ही इनके वष्य विषय में भी है। कुछ रचनाएँ गणित की गिनती हैं तो कुछ ज्योतिष शास्त्र की, कुछ अथ शास्त्र की हैं तो कुछ नीति तथा राजनीति की। इस प्रकार विविध वस्तु विषयक अनेक रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। अभी तक अजमेर नागौर, मण्ड वगैरह सहायपुर, जिला, मुजफ्फर नगर, आदि स्थानों के जैन भडारों की सम्पन्न गाथ नहीं हुई है अतः साध होने पर आशा की जाती है कि इनमें जातर विषयों पर त्रितीय तत्कालीन अनेक गद्य रचनाएँ उपलब्ध हों।

वाचस्पत्यय शैली में लिखी गई, इन काव्य में मिलने वाली कुछ गणित की रचनाओं की भाषा का यहाँ परिचय दिया जायगा। गणित के अनिर्विक्त पुनर्जन वाचस्पत्यय नाव आदि सम्बन्धी गद्य ग्रन्थ मिले हैं। इन ग्रन्थों की वृत्त पद्धति में वैज्ञानिकता कितनी है यह कहना तो बहुत कठिन है परन्तु इन गद्य की सिद्धि इन दृष्टि में वैज्ञानिक गद्य कहा जा सकता है कि इनका वष्य विषय एक निर्विक्त विज्ञान से सम्बन्ध रखता है।









करीउ, धरीउ, गणीउ ये भूतवातिक वृद्धत के प्राचीन रूप हैं। गणितसार की भाँति अनक आकितक ग्रथ भा मिलते हैं। इन ग्रथो म ससृष्ट व्याकरण को पुरानी हिन्दी के माध्यम से स्पष्ट किया है। सग्रामसिंह की प्रसिद्ध रचना बालशिक्षा इसी प्रकार का औकितक रचना है। आचार्य सोमप्रभ सूरि की भी एक औकितक सज्ञप रचना मिली है। भाषा के लिए उसका उद्धरण यहाँ दिया जा रहा है। श्री सी० डी० दलाल ने इसको इस प्रकार उद्धृत किया है —

अउ करइ, तउ वरइ, सइ इत्यादि हउ वरउ लिउ त्रिउ इत्यादि तथा वरावइ लिवडावइ दिवरावइ यथा लभाइइ, लभयति, सपादयति उत्तारइ उत्तारयति हउ कीजउ तीण कीजइ यथा-लैवदति तइ मइ हुइ अइ मुइ अइ बडसइ यथा-सहि आवश्यकु पलिउ अह सवेहि राजि जाणीइ तथा वरतउ इत्यादि तथा गुरि अणुजाणितु चेलु व्याकरण पढत १

इसके उद्धरण प्रमुख कुछ शब्दों व प्रत्ययों का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है —

प्रत्यय —

प्रथमा विभक्ति	—	उ प्रत्यय	—	आवश्यकु-
द्वितीया विभक्ति	—	उ प्रत्यय	—	व्याकरणु
तृतीय—		इ राजि गुरि		
		एहि सर्वाहि-		

कुछ सवनाम देखिए—अऊ (ये) तीण (तेण)—सइ (ते) मइ (म)  
किया वर्तमान काल

(१) निउ दिउ, वरइ, हुई, बइसइ आदि।

(२) कीजउ, जाणइइ आदि

(३) दिवरावइ, लभाइइ, उनाइइ

वर्तमान वृद्धत — संतउ देतउ

भूत वृद्धत — थाणु जाणितु

इन उद्धरणों से उ की प्रवृत्ति कम हो गई और उसका स्थान प्राचीन राजस्थानों की इस हिने ले लिया है।

अपभ्रंश के काल की इन्हीं आदिकालीन गद्य रचनाओं के प्रत्ययों और विभिन्न शब्दों को समझने में तिलक कवि वृत्त इसी साताब्दी की एक रचना उचित सग्रह है। जिगमी सूचना श्री दलाल जी ने दी है। इसमें कवि ने

बहुधा प्राचीन साहित्यात् क शब्दो वा ही प्रयोग विना है । एवं उदाहरण  
देसित् —

देवदत्ति अह पाणिठ पावह पात्रियत गानु मार ।

इस उदाहरण छ दशम कश्च पात्र, मारह, आदि शब्दों के  
साथ साथ कश्च कश्च, कश्च छह, कश्च छह आदि शब्दों भी मिलते हैं ।  
इन शब्दों के रूप इस प्रकार हैं —

वर्तमान काल — कश्च (कर्त्ता)

पशुपद — (कर्म)

भूय कश्च—कर्त्तु

प्रथम—उ का प्रयोग प्रथमा में यथा कश्च, उदाहरण,

इ का प्रयोग कश्च कश्च, कश्च ।

इन परिवर्तनों की सुगमता के अतिरिक्त अत्र य अति अधिक स्पष्टता  
में देखा जा सकता है । इस अर्थ का अर्थ कश्चमहल गति है । अत्र अर्थ  
स्वरूप की रचना है । इस अर्थ के विविध रूपों द्वारा उदाहरण स्य आया  
का सुन्दर परिषद मिल सकता है । रचना म १४५० क शब्द पाठ की  
है । कुछ उदाहरण देसित् —

कर्ता आगलि ततीया कम आगलि प्रथमा त्रिया आगलि आत्मो पद तथा नव वचन हुइ ।

(३) अनइ जिहां वाकुडी उचित माहि कम न हुइ ते भावि उचित कहीयइ (भावे)

इसी प्रकार कुछ कारकों के उद्धरण स्पष्ट दृष्टव्य हैं —

(१) ज कीजइ लीजइ पढीइ गुणीय व्यादि बोलिवइ, मुचित त्रिया करी उचित माहि ज वस्तु कर्ता व्यापीह त कम्म तिहा द्वितीया । चेत्रु कट्टकरइ ।

(२) जेहनइ कारण क्रिया कर्ता कम्म हुइ । अनइ जेह रहइ दान दीजइ, कोप कीजइ तिहा सम्प्रदाहि चतुर्थी । विवेकिउ मोक्षनइ कारणि सपइ ।

(३) जिहां देशकानि जेइ नइ विषइ इत्यादि इ वार नइ बोलिवइ जे कर्तानिउ अथवा कमनउ आघारु हुई त अघिकरण । तिहा सप्तमी चेत्रु ग्रामि बसइ । किही वसइ ग्रामि ।

इसी प्रकार अथ वारकों के भी उदाहरण देखे जा सकते हैं —

कुलमडन के इस प्रथम अनेक विशेषणों और अव्ययों को एक लम्बी सी सूची दी हुई कुछ अवयव देखिए —

आगलि, पादलि, किम जिम तिम कम, तणउ, किसउ, जिसउ, तिसउ अनमउ, इसउ, सरीपउ, जेतलउ तेतलउ, एतलउ केतलउ जतना तेतला, केतला, पहिलउ पादिलउ आगिलउ छेहिलउ माहितउ, पुजिलउ आदि इसी प्रकार के कई शब्द रखे जा सकते हैं । उकार इनमें कई बार आया है परंतु ऐसा कम ही है ।

इहा गद्यों के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का प्रिया ए० १४६६ म गुणारत्न सूरि द्वारा विरचित त्रियारत्न समुच्चय नामक रचना से की जा सकती है । इस कृति के निम्नांकित कुछ उदाहरणों द्वारा कर्ता कम, भावे वतमान, भूत, भविष्यत् काल में प्रयुक्त सत्कालीन विविध शब्दों का परिचय मिल सकता है । कुछ उदाहरण देखिए —

वर्तमान काल (कर्ता) —

१ लिगइ त्रियइ जागइ करइ लिइ

२ तू कर, लिय दिय ।

३ हू करउ, तितं, त्रिउ

**कर्मणि —**

- १ कापठ, मोषठ, धोषठ
- २ आण्ड, करण्ड, जेतण्ड
- ३ खंड गामि गिण्ड
- ४ म द्योषु, म नापु म द्योषु णि

**विधिविग- —**

- १ करिच, सज्ज, दज, छादि ।

**आशा -**

- १ कात्रउ, सापठ करउ, सिउ, दिउ हुउ णि ।

**भविष्यत्काल —**

जायमि, गायमि, सायसि ।

**क्रिया पद दण्डि —**

- १ निञ्ज, निभज, तउ अमुक हयन ।

**भविष्यत्काल —**

- १ करिसइ, मसिइ णिइ करिणित ।

इन लोकोपयोगी शारा प्राचीन राजस्थानी या जूना गुजराती का विकास मरकता से प्रोत्साहित जा सकता है। हनु के प्रयोग प्राचीन है। करउं, दाखउ म उ का प्रयोग तथा अ का प्रयोग लोकोपयोगी के पृथक्त्व का सूचक है। विभक्तियोः द्वितीया का उच्चारण आज भी है। मलमी का ए प्री मिलता है। परन्तु माप माप इ भा मिलती है। यौततीया विभक्ति में इ का परिवर्तन प्रथम से मिल जाता है। इसी प्रकार तृतीयम सूत्र के आधार पर णि विचार और रश्मटनगणि के प्रोढ़ गद्य द्वारा यह सहज ही अनुमान लग सकता है कि इन गद्य कथाओं में लेखकों को अपूर्व महत्ता मिली है। इन कथाओं के उच्चारणों में प्रथमा द्वितीया का उच्चारण सुलभ हुआ मिलता है। इन गुजर कथापत्रक गद्य का एक उद्धरण यहाँ —

कामम आत्मन कारिअ वनजन वाह माता कण्डित । राजा सुखिओ विहु पुण्ड — सुहे वि मूरा गरिमा ज दणु छु धनइ एवहउ काणर बु काणर काइ । पुण्ड मूक कहिया मागिओ — राजन । अ

१ पञ्चम जैन मठार ग्रन्थ सूची, पृ० ३००

ससग नु विगप नही तु अम्हे बहु सगा भाई :—इसिउ सूडानू वचन साभली राजा ह्यिओ ।<sup>१</sup>

इस उद्धरण से भाषा जय कुछ मोटी मोटी बातों का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है ।

- १ अ उ के बदल उ तार दीघ हो गया । (ऊँ) यथा—अम्हारू
- २ अ उ अ आ—सूडओ
- ३ कही कही वचन उ ही मिलता है ।
- ४ छूँ प्रयाग छइ छउ क रूप म हुआ है, जो सहायक क्रिया का नायक करता है । प्राचीन राजस्थानी में सहायक क्रियापद की यह बड़ी प्रमुख विशेषता है । वास्तव में यह छ १५ वीं शताब्दी के बाद ही विकसित हुआ होगा, पर श्री मुशी का मत भिन्न है ।<sup>२</sup>

जो भी हो, यह छै आज भी जन प्रचलित है । अतः यह स्वीकार किया जा सकता है कि स० १४५० के पश्चात् ही छइ या छ का चलना प्रारम्भ हुआ । क्योंकि स० १४५६ में सोमसुन्दर सूरि ने इसका खूब प्रयोग किया है, जिनमें छइ नइ, हइ आदि के प्रयोग दृष्टव्य हैं ।

इस प्रकार संस्कृत प्राकृत आदि से प्रारम्भ होने वाले इस कथा गद्य साहित्य को सबसे बड़ा मोड़ पृथ्वीचंद्र के दाम्बिलास नामक रचना ने दिया जिसका विवेचन किया जा चुका है । इस रचना की आढर रहितता, काव्यात्मकता सरसता, प्रवाहात्मकता तथा समासबहुल स्थिति तथा पदों की प्रासादिकता के लिए निम्नांकित उद्धरण दिया जा रहा है, जिससे इसकी भाषा की सामर्थ्य का परिचय मिलेगा और गद्य काव्य की अनुप्रासात्मकता का भी ।

इह चतुदश महा स्वन्न तणउ साभलउ जूजुउ वणन व्यतिवर ।  
राणो प्रथम दीठउ गजेन्द्र । किसिउ गजेन्द्र चतुदत, विनयवत, सण्ताग

१ प्रा० गु० गद्य सदर्भ श्री मुनिजिनविजय पृ० ६० ६५

२ V about 1400 I P V S 1456 (छइ) Brings to be used as an auxiliary Verb Gujrati language & literature, Page (815 16) by K M Munshi

प्रतिष्ठित, गणेश गति अविच्छिन्न, विनाश कु म स्वयं, विनीतकपीपम  
 उद्दृग् शाश्वत, तत्र करान्तर मन्त्रन वाचित कपीन मूत्र, भ्रमर कुत्र  
 अनुकूल परिपूरण सुख्य दाय प्रशास्ति महत्त उत्र नयन उत्राय प्रधान  
 एराशय गत्र समान महा वाय, पथय प्राय मद्र, आर्य, गृह्णिताय जह  
 नमी न्नि प्रपन्ना भव विष दोषट ह्यो ।

विच्छेद त माह—एतद्विद पांडुर, अमृत प्रमाहबर, रत्न एवम मुकुमान  
 तान, तालू नागा आरत्त त्रिहृत्त विच्छेद दृष्ट भगो प्रवाल, विच्छेप  
 कपला लोभित रत्न वज्रवार शरीरभय, प्रवर वीवर प्रकाठ, वमन दस  
 रत्नात्त तो न पाइ विह्वित वान, पद्यम लणउ मन्त्र पुष्ट पटा पुष्पी  
 मास्त्रान्त उ पावसावति सुमि वाति पीडासत उ पुषात्त गुण समान  
 दिग्गो विरर नेव, गोय वीर त्ता उ गोय गदम अगजित, मन्त्र अत्राशित  
 भवोद् एव विष दौटत ता ।

इम प्रकार इम कृति म विभिन्न विषयो पर रचनाकार म अपना  
 बहुमता विचार है । नि हर्मत इच्छा माया भी प्राधान गत्रधाना वा  
 विच्छेद स्वयं लपना है । इत

- (१) प्रमा विच्छेद म प्रमुक्त उ प्रत्य उद्दृग् गवा गी उमक  
 स्थान पर त उ भी प्रमुक्त रथा है । उद्दृग्-पय एतु एषा  
 मत्र नो अर्पणरित भवकयो आदि ।
- (२) अ उ उ वा प्रयोग विनया है यत्त तानु नीनु आदि
- (३) विद्यापद म ल (यत्) अमल मन्त्र मित्र है । यत्त विनयत म  
 प्रत्य य उ उ ल धादि क्तो मे विनय है ।
- (४) प्रमा म नय प्रत्य मई विनया यदा—तेत्त अन्त, आदि
- (५) कती कती कति न अरथा कारकी क्तो वा भी प्रयोग किया ।  
 यदा—गुहा-या, मागिम मात्रामत आदि ।
- (६) म. गुहा यथा मादा व क्तो की दलि म एव अहार १ ।  
 वाक्को पर एव अन्त यत्त वारक नामक रचना वा भी १ । दमात्त  
 म अ-वे लय म अन्त विद्या । वाक्को व उद्दृग्-पय व  
 अन्तिय ए इतम अन्तो प्रवार यदा लपय म दी है । उद्दृग् रचना  
 म १८८२ वा उतलय है ।

१ प्रा० गु० म० म० पु० १२०  
 २ गु० गी० परिपूरु वा विनया माहिस्य विद्या में श्री भी शी०  
 दत्तात्रेय का मध्य पु० ११ १८

यथा—

- १ जे करइ स कर्ता
- २ जे कीजइ स कम
- ३ जिणइ करी क्रिया कीजइ स करण
- ४ जेह देवातणइ इच्छा अह खचइ काइ जै धरीइ वाह त कारक सम्प्रदान ।
- ५ जे हेतु अपाय विश्लेषु हुइ जे हेतु आदान ग्रहण हुइ त कारक अपादानु
- ६ जह कहइ जेह माझि जेह तणउ जेह तणी जेह सरइ जे कहइ इत्यादि सम्बध ।
- ७ गामि पाद्रि खलइ श्रेत्रि पवति माहि बाहिरइ इत्यादि आधार ।

इस प्रकार इहीं में सातो विभक्तियाँ ललक न स्पष्ट की हैं । भाषा पर्याप्त सरल है ।

गद्य की इन रचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत करने पर अभ्युदय काल की रचनाओं की सम्पन्नता स्पष्ट परिलक्षित होती है । विभिन्न भण्डारों की उपलब्ध प्रकाशित अप्रकाशित सामग्री के आधार पर लेखक ने आदि कालीन हिन्दी गद्य रचनाओं के इतिहास पर जो प्रकाश डाला है, उसमें कई रचनाएँ न आ सकी हों । साथ ही इन रचनाओं का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन आंशिक रूप से भी नहीं किया गया है । माटे रूप में इन रचनाओं के तथा अपभ्रंशकाल के, प्राचीन राजस्थानी या जूनी गजराती के शब्द रूपों के पारस्परिक सम्बन्ध को समझने की दृष्टि से ही इन शब्दों का परिचय कराया गया है । वास्तव में इन रचनाओं की भाषा अपने भाषा में अलग से शोध का विषय है ।

दिल्ली, सहारनपुर, नागौर तथा अजमेर के भण्डारों से आदिकालीन हिन्दी गद्य साहित्य की और भी कई रचनाएँ मिलने की आशा है । श्री मुनि जिनविजयजी ने भी इन रचनाओं के अतिरिक्त गद्य की कई रचनाएँ और मिलने की सूचना दी है जिनका अध्ययन इस कृति में नहीं दिया जा सका है । वस्तुतः अद्यावधि जितना भी उपलब्ध गद्य साहित्य है, उसी के आधार पर गद्य का यह विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । प्राप्त रचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदिकालीन गद्य क्षेत्र में अब भी शोध करने की पूरी-पूरी आवश्यकता प्रतीत होती है ।





आसि र काटा तीक्षा ऊना तरना त वानि जीभ उज (?)—

ब्रह्म १९७।

तइसउ अयिआरु पाविउ वाम्ब धउ जगहा वाइ ररिमा अइसउ  
वहस्पनि नानउ झुझइ १९८। १३३। आर्विर् र तु फरउ वानलु दोनउ  
कइसउ ॥१९९।

जणु चाखुहु करइ भापइ विपउ—जिसउ १९००।

पूनवहि करउ चाडु फाडिउ हरिण पास घालिउ ।

दुई कपाल जिसा किआ १९०१।

ते देखतह सबह तरणाह ।

पाविवेकरा खुदु सइ धमधम पडहि हिआ १९०२।

वनवासही वानही वा—वह करउ मूटउ वालु १९०३।

कें कें कतउ न सपिमउ लहि जगी आवि न मानु १९०४।

तेह र पइहिया धडिब १३४। न जिमा भावयि १९०५।

जणु पूनिवहि पूनवहि करा चाद कोउ इ तहि ।

करउ मुहावउ यानु मुणण म क फडिउ आया नाययि १९०६।

तेहि करउ तलि लउउ पहन उठइ<sup>३</sup> म क वि गोह लायो १९०७।

ज वाम्वा कइह प १३६। (व) जागह जमा (ज) पल्लनह तें लूमिउ  
विनयो १९०८।

ममुदात्तु ज मुत्त करो सोम स जत्त भाइ पत्त । (ज<sup>२</sup> ?) गुहरइ  
त उपमानु करहु १९०९।

वधि जापणा जउइ म कूडा वाणा नह (?) करा करिउ महा  
अवहरहु १९१०।

१३७। एकवदि (गन ?) इ एक वाधी मइ र इसो भागइ १९११।

जणु मुह चाडु उलगणह<sup>३</sup> नखत वाग मतायोम — रा आई अइसउ  
नावइ १९१२।

धण र पटुला ऊचा वाटुना पाणा मोनाह करा मगल कलस जिसा  
भा (२) १३८। वहि १९१३।

आनु कि काम्ब नेवह कराह धरत्त वारि जा (२) डु तास सोह  
पार्वहि १९१४।

निवनिहि ज्ञावि राम राइ स के (?) सा धारइ १९१५।

ज सोनहि करइ पास टुह जाधह जूयनत्त निवाडउ करइ १९१६।

तत्र भाटणु मान १३०। उ मु (?) भाणिदु मानादु वरुड एक जि  
हार १११७।

म गाह दानह अइमउ भावद जगुगारुड ज।—य—उ हुअउ एह  
ममार १११८।

न पुग नवडा नें शपरा पावरा पइत्रिआ माना—मरा चूडा १११९।

म देमि १८०। तुम्हाग ज वर त मय भावहि कूग ११२०।

तें र तइमा चाड वाग पत्रिआ पावरा ज चावुली मइ र हान (?)  
मौ (?) इ (?) कवि वर ११२१।

अर राम्व—अइ मनादु वियउ न एव तुम्ह नरी ध्याती ।

वउ इमउ त्रि (वाण) हा वरइ ११२२।

पइहागह निरा पइहिआह वादइ इडु ज मारु म  
हि वउनु वनु पाम्वद ११२३।

आ—चा—आ—एविवि अर मउहा गावराग रावन  
जा जगु भाव ११२४।

तें पुगु——टा एग जावनि १८१। ——व तात्रि वरा माह को  
पाम्वद ११२५।

जवापह वाम्व—दूमर (?) जाववाडु जगा भावउ ११२६।

गावनि र रनुवन—त्रिआ ११२७।

ज तारनि वादिनि वरुड निवानु नाणित अ——इ—(इआर)  
११२८।

——येटुताडु ऊदना १८३। ——म वरा व—(र) ११२९।

त इ र मवहि वउर वरा जवादि अवरा ११३०।

पावनिहि र वरुड ज गारा तत्रि त्रिडू (?) ( रिउ ) वेतु व  
मावना तत्रि र पाटगा (र) इ वरउ ११३१।

आ—मा——प (?) इ (?) क म मान ।  
पर (?) १४४। (उर) ११३२।

——उ——घाय त इ पर ताधा ११३३।

जति आपनि रनि अवाग रिअ अनि मुटु गया ११३४।

तुइइ न (?)——व (?) तुर्गि गरिउड वावनि (?) क जूम  
(इ) ११३५।

——आ १४५। ——नु——इ वान  
जा जगु वरुड मारु भूग ११३६।

]

[ आदिवात का हिंदी गद्य साहित्य

एह इसी मुवेस जहा आविउ पडाह । १३७।

सो घर रा (२) उलु वापइ । १३८।

अउर भणउ को क (?) मट्ट ता (?) म्— रुड<sup>१</sup>(?) । १४६।—११३९।

----- ११४०।

रोडें राडल—वेल क्या । २। णो । २। । १४१।

आठ<sup>२</sup> (?) ह (?)<sup>३</sup> भासह जइसा जाणो । १४२।

एउ निइ-----इ । १४३।

( "भारतीय साहित्य" वष ६ अंक ४ मे केवल गद्य भाग साभार उद्धृत )

## आराधना

[स० १३३० मा लखेला ताडपत्र माथी]

चानाचारि पुम्नक् पुम्निका सपुट सपुटिका टीपणा कवली उत्तरी ठवणी  
 पाग दारा प्रभति चानापक्कण अनना, अनाति पठन अनिचार विपरित  
 कयनु उमूत्रप्ररुनु अथद्धान प्रभतिक् आलायहु । दानाचारि देवद्रयु  
 भगिनु उरतिनु प्रनहीनचु जिनभुवन आसातना अधोपति नेवपूजा गुरूनिदा  
 द्ध्वनिगणमउ मसगु विवजागतना स्थापनाचायबासातना शका आकाशा  
 विचिकिता मिथ्या दृष्टि पमसा मिथ्यादष्टिपरिचउ ए पाच अनिचार आलोयउ ।  
 चारि आचारि प्राणानिपान मृपावा अत्तानान मयुन परिग्रह ए पाच अणुव्रत  
 णिगुविरति भागविरिभोगविरति अनयत्तविरति ए तित्री गुणव्रत । सामायिकु  
 दगावकातिकु पापपु अनियमनिभागु ए च्यारि मिक्ष्याव्रत, ईत्तणइ विपयू  
 जु बाद अनिचास ए आसेवियउ सु हु आलोयह । तपाचारि अनशन  
 ऊनारिता वनिमभपु रमत्यागु कायकनेगु सलानता पट्विध वाह्यतपताइ  
 विपइ प्राप्यचनु विनउ वयायलु स्वाध्यानु ( यु १ ) कायात्सग पड्विधआ-  
 भ्यनगनताइ विपइ जु अनाचारु मु हु आनापहु । वीर्याचारि सतइ बलि  
 सतइ वाग्नि सम्पत्त्वप्रतिपति वरहु अरिहनु देवता सुमाधुगुरु जिनप्रणीत  
 धम्मु मायववडहु ऊवरहु मागार प्रत्याख्यान ऊवरहु चऊहु सरणि पइ सरहु ।  
 परमेस्वर अरहन सरणि सक्कम निमु त्तसिद्ध सरणि ससार-परिवार समुतर-  
 गयान पात्र मगावमाधु सरणि सक्कपापपटलकवलनरला कलितु कवलि-  
 प्ररुनु धम्मु सरणि सिद्ध मध गण कवनि धुन आचाय उपाध्याय मवसाधु व्रतिणी  
 धरक धमिना इह ज बाद आगानता की दुती ताह मिच्छा मि दुक्कड ।  
 पुशिसाइ जाव आत्ता जाव तठकाइ जाव वाउवा जाव वणम्य इवाइजीव  
 बेरिनि शैल्यि चउरिद्रिय जन्वर म्यनवर गजर जा जनु ताह मिच्छा मि  
 दुक्कड । पनर कमड्ढमि जि मनुज्य प्राग अरुमभूमि जि मनुप्य मीहि मिच्छमि

दुक्कड । धूपन अनरद्वीपवणा मगुप नीह मिच्छामि दुगाड । मात नरवतणा  
 नारकि दगाविध भवापति अण्टविध व्यतर पचविध तादगा द्वित्रिध यमानिह  
 देवा वि बहुना । दृष्ट-अदृष्ट जाल अनान-श्रुत अयुन म्वजन परजा मिश्रु गनु  
 प्रत्यक्षि पराभि ज कइ जीव चतुगता जग यानि ऊरना चतुगनिरी समारि  
 भ्रमत। मइ हूमिया वचिया सहिया माराविया हसिया निदिया निनामिया  
 दामिया पाछिया चूकिया भवि भवागि भयगि भवमस्त्रि भवगि भवकोटि  
 मनि वचनि काइतीह सवहइ मिच्छा मि टुकाड । अइर पापस्थान वोमिरावइ  
 इहु सव प्राणानिपातू मजमानू मजइ माया मव्व माया सगू सामू प्रभु इपु  
 कलह अभ्याख्यातु रति अरति पगुय मिय्यात्व दगा गत्यु परपरिवादू अइर  
 पापस्थान त्रिविधहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमनि परिहण्ड । अतीतु  
 निदउ वतमानु सवरटु अनागतु पच्चमउ । पचपरमष्ठिनमस्कारू जिगासनि  
 सारू चतुइगपूव समुद्धारू सपात्तिसन नरत्त्याण समारू विहित दुरितापहारू  
 क्षुद्रोपद्रवपनतवयप्रहारू लीतात्तितसमारू सु तुम्हि अनुसरहु जिणि कारणि  
 चतुगानूववर चनुशसूवमत्रिउ यानु पगित्यजिउ पचपरमष्ठिनमस्कारू  
 स्मरहि, तउ तुम्हि विगपि स्मवउ अनइ परमश्वरि तीववरदेवि इसउ  
 भणियउ अच्छइ अनइ ससारतणउ प्रनिमउ मकरिमउ अनइ ऋद्धि नमस्वार  
 इहलाकि परलाकि सपात्तियइ ॥ आराधना समाप्तनि ॥

यदक्षर परिभ्रष्ट मानाहीन च यत्भवेत् ।

क्षतय तत् बुध मवकम्य न स्वलत मन ॥

स० १२३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावधह आगावत्सयाम् ॥



जई करत नई लेत जई देत, इत्यानी प्रियानिपत्ति ।

जई बीजत, नोजत, दाजत इत्यानी कमणि प्रियानिपत्तेरात्मनपद ।

करिसई, लस ( मि ) ई दसई इत्यादो नहा करई, नही

लियई नही दियई इत्यादो भविष्यती ॥

बीजिसई लाजिसई, निजिसई इत्यानी नही बाजई नही तीजई इत्यादो  
ज कर्मणि भविष्यत्यात्मनेपदम् । बालि करिसई इत्यादो स्वस्तनी ।

शिशु जिणिसई वप शशु ( सउ ) जीविसई इत्यादो आनीयुक्ते भविष्यति  
काल ।

### अथ कृतप्रत्ययप्राप्तिमाह

करतउ, लतउ देतउ इत्यानी कतरि वतमान गतमानो ।

बीजतउ लीजतउ दीजतउ इत्यानी कमण्यमानगु ।

करणाहूरू लणाहूरू दणाहूरू इत्यानी वतमान गुण्यचो ।

कीधउ दीधउ लाघउ इत्यादो जनीत निष्ठा करगुणानी च ।

करीउ लेउ नउ इत्यादो कवा ।

करिवा लवा दवा इत्यानी तुम् ।

करी जाणु पनी मकउ करिबउ तवउ देवउ इत्यानी कमणि

तयानीयो ।

करणाहूरू लेणाहूरू इत्यानी भविष्यति कात्रे तुमन् ।

### अथ विभेदप्रत्ययप्राप्तिमाह —

करावई कराविवउ कराविमई करावतउ करावी कराविवा  
इत्यादो इनाना प्रत्यया । ( उक्तिप्रथम पष्ठ )

## नवकार व्याख्यानम्

(सवत् १३५८ भां लखाएला पुस्तक मांयी)

नमो अरिहताए ॥१॥ माहरउ नमस्कारु अरिहत्त हउ । विमा जि अरि-  
हत्त , रागट्टेपुत्तिया अरिवरि जेहि हणिया, अपवा चु चतुपट्टि इदसवधिनी  
पूजा महिमा अरिहत्त जि उदयन दिव्य विमल बदनगान चउश्रीम अतिगामि  
समन्वित ऊट्या महाप्राति हार्यंगाभायमान मत्ताविनेहि खेत्रि विहरमान तीह  
अरिहत्त भगवन माहरउ नमस्कार हउ ॥१॥

नमो गिद्वानं ॥२॥ माहरउ नमस्कार हउ । विमा जि गिद्व दुष्टाष्ट  
बम्मेशउ बरिउ, जि माणि ग्या । आठ बम विमा मणियद । जानावरणिउण,  
दरिसिणावरणीउ २, वेदनीउ ३, मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६, श्रोतु ७, अत-  
राउ ८ इह आठ बम्मेशउ बरिउ श्री सिद्धि ग्या । विमी अ गिद्धि, सोकताइ  
आपविभागि पचराा सीम मणपोरन प्रमाणि तिमउ उताणु धनु निमद  
आचारि अ गिद्धि गिना अमन परिमत्त जगत्ताम जु अत्रगमर स्यानु, तेह  
ऊरि पोत्रन सबधिपद चउश्रीमइमद् य विमपणी जि गिद्ध अनन मुग्गणी नि  
सिद्धमणियद तीहगिद्ध माहरउ नमस्कार हउ ॥२॥

नमो आचरियाण ॥३॥ माहरउ नमस्कार आचार्य हउ । विमा जि  
आचार्य पंचविपु आचारु जि पणितान नि आचार मणियद । विउउ पचविपु  
आचारु । जानाचारु, दांताचारु चरित्ताचारु ताराचारु, वीर्याचारु, मउ  
पंचविपु आचारु जि परितातद नि आचार्य मणियद । तीह आचार्य माहरउ  
नमस्कार हउ ॥३॥

नमो उवासाणां ॥४॥ माहरउ नमस्कार उवासान हउ । विमा जि  
उवासाय द्वाणां जि पड पडवद । विमा अ द्वाणां आचाराणु १,  
मुदपद् २ टाणां ३, समवाउ ४, विवाहान्नि ५, जानापम्मंरपा ६ टवा-